RNI NO. DELHIN/2012/47450

मूल्य 100

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 12, अंक 02
दिसम्बर 2024

समाचार वार्ता

हर खबर पर नजर

आस्था का महाकुंभ

प्रयागराज

यमुना प्रदूषणः एनजीटी का बड़ा कदम

प्रियंका के आने से कांग्रेस में जोश...

49 YEARS of excellency

AMBA
SHAKTI SD TMT
PURE STEEL BARS

IS:1786CM/L-9475496
IS:2062CM/L-9483091

TEMPCORE TECHNOLOGY

FUTURE RELIES ON US!

AMBA SHAKTI ISPAT LTD

Mob: 70870-38200, Email: punjabsales@ambashakti.com

समाचार वार्ता
हर खबर पर नजर

जीवन में रहें हमेशा प्रसन्न

मनीषी समझाते हैं चिन्ता मत करो। सांसारिक मनुष्यों के लिए यह कदापि सम्भव नहीं हो पाता। जीते जी मनुष्य को घर-परिवार, बच्चों की शिक्षा, उन्हें सेटल करना, उनके शादी-ब्याह, स्वास्थ्य, धन, लेनदेन, नौकरी-व्यापार आदि कई प्रकार की चिन्ताएँ हैं, जो उसे सताती रहती हैं। चिन्ताओं का मकड़जाल उसे चैन से बैठने नहीं देता। उससे बाहर निकलने के असफल प्रयास में वह छटपटाता रहता है। वह सारा समय घुलता रहता है और जानते-बूझते अपना स्वास्थ्य खराब कर लेता है। चिन्ता चिता के समान होती है। चिता मरने के पश्चात ही जलती है पर चिन्ता पल पल मनुष्य के जीवन को जलाती रहती है। इसी भाव को किसी कवि ने निम्न श्लोक में व्यक्त किया है -

चिता चिन्ता समाप्रोक्ता बिन्दुमात्रां विशेषता।
सजीवं दहते चिन्ता निजीर्व दहते चिता

अर्थात चिता और चिन्ता समान कही गयी हैं पर उसमें भी चिन्ता में एक बिन्दु की विशेषता हैं। यह चिता तो मरे हुए को ही जलाती है पर चिन्ता जीवित व्यक्ति को मार देती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि चिन्ता मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है परन्तु चिन्ता करना भी तो एक अनवरत क्रम है। एक चिन्ता मनुष्य को घेरती है, जब उससे मुक्त होता है तो दूसरी उसकी राह ताक रही होती है। एक के बाद इन चिन्ताओं का क्रम उसे निश्चिन्त होकर नहीं बैठने देता। मनुष्य परेशान होता रहता है पर सुख की साँस लेना चाहता है। एक खुशी का पल तलाशना चाहता है। किसी कवि ने निम्न श्लोकांश में बताने का प्रयास किया है -

मात्रा समं नास्ति शरीरपोषणं - चिन्तासमं नास्ति शरीरशोषणं।

अर्थात सन्तुलित जीवन के समान शरीर का पोषण करने वाला दूसरा कोई नहीं है। चिन्ता के समान शरीर को सुखाने वाला कोई दूसरा नहीं है।

सन्तुलित जीवन शैली से मनुष्य का शरीर पुष्ट होता है। यह चिन्ता दीमक की तरह मनुष्य के जीवन को नष्ट करती रहती है। इससे शरीर सूखने लगता है, इन्सान का चेहरा मुरझा जाता है। मनुष्य अपनी आयु से अधिक का दिखाई देने लगता है यानी उसका शरीर नित्य गिरता जाता है। अनावश्यक ही कई बीमारियाँ उसे घेर लेती हैं।

सुषमा राजीव
सम्पादक

ब्रांच ऑफिस

एस 203, सिद्धार्थ पैलेस, चंदर नगर,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
सम्पर्क सूत्र - +91-9654446699
0120-4071111

Email : samacharvarta@gmail.com
editor@samacharvarta.com
www.samacharvarta.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक सुषमा राजीव द्वारा ग्राफिक प्रिंट, 383, एफआईई ग्राउंड फ्लोर, पटपडगंज इंडस्ट्रीयल एरिया दिल्ली द्वारा मुद्रित एवं 59-बी, जे-एक्सटेंशन लक्ष्मी नगर, दिल्ली-11092 से प्रकाशित।
पत्रिका में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति हो अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का केन्द्र न्यायालय दिल्ली होगा।
RNI. No. : DELHIN/2012/47450

एनजीटी का बड़ा कदम...

हिंदुत्व है तो ही जीत...

महाकुंभ 2025...

अग्निहोत्र पर्यावरण शुद्धिकरण...

औपचारिक शिक्षा में खेलों...

यमुना प्रदूषण: एनजीटी का बड़ा कदम

दिल्ली जल बोर्ड और नगर निगम पर करोड़ों का जुर्माना

राजीव निशाना

दिल्ली की जीवनरेखा मानी जाने वाली यमुना नदी पिछले कुछ वर्षों से बढ़ते प्रदूषण के कारण गंभीर संकट का सामना कर रही है। इसके पानी की गुणवत्ता लगातार गिर रही है, और यह अब जहरीली स्थिति में पहुंच चुकी है। इसी समस्या को सुलझाने के उद्देश्य से नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने हाल ही में एक ऐतिहासिक निर्णय सुनाया है, जिसमें दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) और दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) पर 50.4 करोड़ रुपये का पर्यावरणीय मुआवजा लगाने का आदेश दिया गया।

एनजीटी का ऐतिहासिक निर्णय

एनजीटी अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव ने की, जिनके साथ एनजीटी मेंबर न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल, न्यायमूर्ति अरुण कुमार त्यागी और अफरोज अहमद भी बेंच में शामिल थे। अदालत ने पाया कि जल बोर्ड और नगर निगम ने बरसाती पानी के नालों में सीवेज छोड़कर जल अधिनियम, 1974 का उल्लंघन किया।

एनजीटी का सख्त रुख

न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव
अध्यक्ष एनजीटी

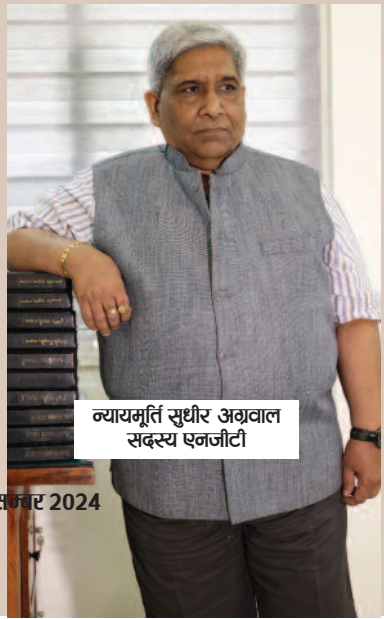

न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल
सदस्य एनजीटी

न्यायमूर्ति अरूण कुमार त्यागी
सदस्य एनजीटी

अफरोज अहमद
सदस्य एनजीटी

एनजीटी ने अपने फैसले में स्पष्ट किया कि दिल्ली जल बोर्ड और नगर निगम दोनों ने बरसाती पानी के लिए बनाए गए नालों में सीवेज प्रवाहित किया, जिससे न केवल यमुना नदी का प्रदूषण बढ़ा, बल्कि स्थानीय लोगों के स्वास्थ्य और पर्यावरण को भी गंभीर खतरा हुआ। अदालत ने कहा कि 'प्रदूषक भुगतान सिद्धांत' के तहत इन्हें मुआवजे का भुगतान करना होगा।

जल बोर्ड और नगर निगम पर 25.22 करोड़ रुपये का जुमार्ना प्रत्येक लगाया गया है। यह राशि दो महीनों के भीतर केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के पास जमा करनी होगी। अदालत ने इसके अलावा सीपीसीबी को निर्देश दिया है कि वह जल अधिनियम के उल्लंघन पर संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करे।

इस मामले की शुरूआत ग्रेटर कैलाश-1 के निवासियों द्वारा एनजीटी में दायर एक आवेदन से हुई। स्थानीय निवासी बरसाती नाले में छोड़े जा रहे सीवेज और उससे निकलने वाली जहरीली गैसों के कारण गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे थे। उनका कहना था कि इन गैसों की वजह से घरों में दुर्गंध और स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ रही हैं।

समिति द्वारा साइट के निरीक्षण में यह पाया गया कि नालों से जहरीली गैसें निकल रही थीं, और कंक्रीट के बने बॉक्स मलबे से भर चुके थे। इसके चलते नाला अनियंत्रित और अत्यधिक प्रदूषित हो गया।

एनजीटी के निर्देश

1. जल बोर्ड और निगम की जवाबदेही:

एनजीटी ने जल बोर्ड और नगर निगम को निर्देश दिया है कि वे बरसाती नालों को नियमित रूप से साफ करें और उनमें बनाए गए आरसीसी चैंबर्स को हटाएं। इन चैंबर्स की वजह से सफाई मुश्किल हो गई थी और नालों में जहरीली गैसें जमा हो रही थीं।

2. बहाली और सुधार कार्य:

मुआवजे की राशि का उपयोग सीपीसीबी द्वारा दिल्ली के पर्यावरण को सुधारने और यमुना को प्रदूषण से बचाने के लिए किया जाएगा। इसके लिए एक संयुक्त समिति बनाई जाएगी, जिसमें सीपीसीबी, दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी), प्रधान मुख्य वन संरक्षक, और पर्यावरण मंत्रालय के प्रतिनिधि शामिल होंगे।

3. सुधार की समय सीमा:

- एक महीने के भीतर योजना तैयार की जाएगी।
- तीन महीने के भीतर नालों को उनकी मूल स्थिति में लाने का काम पूरा किया जाएगा।
- 31 जनवरी, 2025 तक सीपीसीबी अदालत को कार्यवाही की रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।

4. स्थानीय निकायों पर निगरानी:

अदालत ने सीपीसीबी को नोडल प्राधिकरण के रूप में नियुक्त किया है, जो इस बात की निगरानी करेगा कि जल बोर्ड और नगर निगम एनजीटी के निदेशों का पालन कर रहे हैं या नहीं।

स्थानीय निवासियों की दिक्कतें

ग्रेटर कैलाश, एंड्रयूज गंज, और निजामुद्दीन जैसे क्षेत्रों में बरसाती नाले से निकलने वाली जहरीली गैसें निवासियों के लिए बड़ी समस्या बन चुकी हैं।

- निवासियों का कहना है कि 'सीवेज युक्त पानी और जहरीली गैसें उनके जीवन को नरक बना रही हैं।'
- एमसीडी ने नाले के कुछ हिस्से को ढकने की कोशिश की, लेकिन गैर सरकारी संगठनों की आपत्ति के चलते यह काम अधूरा रह गया।

पर्यावरणीय प्रभाव

बरसाती नालों में सीवेज के प्रवाह ने न केवल यमुना को प्रदूषित किया है, बल्कि आस-पास के इलाकों की वायु गुणवत्ता भी खराब कर दी है। जहरीली गैसों का उत्सर्जन सीधे लोगों के घरों में पहुंचकर स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ा रहा है।

एनजीटी ने इस फैसले के माध्यम से यह स्पष्ट संदेश दिया है कि पर्यावरण की उपेक्षा करने वालों को सख्त परिणाम भुगतने होंगे। जल बोर्ड और नगर निगम जैसी संस्थाओं की लापरवाही के कारण न केवल यमुना का पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ रहा है, बल्कि स्थानीय लोगों के जीवन पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

यमुना प्रदूषण पर एनजीटी का यह सख्त कदम एक चेतावनी है कि पर्यावरण की अनदेखी और नियमों का उल्लंघन अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। दिल्ली जल बोर्ड और नगर निगम पर लगाया गया जुमार्ना एक मिसाल है कि सार्वजनिक संस्थाएं अपनी जिम्मेदारी निभाने में असफल रहती हैं, तो उन्हें जवाबदेह ठहराया जाएगा। यह उम्मीद की जाती है कि इस फैसले से यमुना को स्वच्छ बनाने और दिल्ली में पर्यावरण सुधार की दिशा में ठोस कदम उठाए जाएंगे।

इस फैसले के बाद यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि क्या दिल्ली जल बोर्ड और नगर निगम अपने कार्यों में सुधार करते हैं, या फिर भविष्य में भी इन्हें ऐसे ही दंड का सामना करना पड़ेगा। यमुना की स्वच्छता और स्थानीय लोगों के स्वास्थ्य के लिए यह एक निर्णायक क्षण है।

मार्ग दिखाती 'मन की बात'

प्रो. संजय द्विवेदी

संवाद एक सतत प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से विचारों को दिशा मिलती है। संवाद की इसी प्रक्रिया को भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम द्वारा एक क्रांतिकारी दिशा दी है। 'मन की बात' जैसा कि शीर्षक में ही उल्लेखित है, मन के उदगारों का संप्रेषण। यह उदगार सीधे दिल की गहराइयों से निकलकर एक वृहद समाज में जन चेतना का काम कर रहे हैं। 'मन की बात' के संदर्भ में माननीय प्रधानमंत्री इसलिए भी प्रशंसा के पात्र हैं, क्योंकि उन्होंने संवाद की प्रक्रिया हेतु एक ऐसे माध्यम को चुना, जिसे लुप्तप्रायः मान लिया गया था। 'मन की बात' के माध्यम से देश का हर नागरिक सीधे अपने प्रधानसेवक से जुड़ गया है। यह ऐसा सुख है, जिसकी आज तक हम मात्र कल्पना ही करते थे।

राजनीति से परे, जनता के दिलों को झकझोर देने वाले दैनिक विषयों को 'मन की बात' में शामिल कर प्रधानमंत्री ने इस धारणा को भी झुठलाया है कि राजनेताओं में सिर्फ राजनीति ही हावी होती है। अगर राजनेता नरेंद्र मोदी जैसा प्रधान सेवक हो, तो राजनीति की बजाय देशहित और समाजहित की भावना सर्वोपरि होती है। आम आदमी से जुड़कर सीधे संवाद करने की कला को मोदीजी ने पुनः जीवित कर जनता को 'प्रधान' का दर्जा दिया है और स्वयं 'सेवक' की भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। यह लोकतांत्रिक मूल्यों की विजय ही है, क्योंकि लोकतंत्र में जनता ही प्रधान होती है और राजा को उसका सेवक माना जाता है। 'मन की बात' ने इस धारणा की पुष्टि भी की है कि यदि खुले दिल से जनता के बीच अपनी बात रखी जाए, तो जनता उसे दिल से स्वीकारती है। जनता को भी देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का भान होता है। 'मन की बात' सिर्फ एक रेडियो कार्यक्रम नहीं है, बल्कि आंदोलन का रूप ले चुका एक ऐसा माध्यम है, जो सरकार को देश की नब्ज भांपने और आम आदमी से जुड़े मुद्दों का निराकरण करने की शक्ति देता है।

जिस तरह से प्रधानमंत्री समाज में अच्छी सोच के साथ कुछ कर गुजरने में लगे व्यक्तित्वों का जिक्र 'मन की बात' में करते हैं, वह काबिलेगौर है। शायद ही कभी किसी प्रधानमंत्री ने कानपुर की नूरजहां और अखिलेश वाजपेयी, जम्मू-कश्मीर के जावेद अहमद, सीहोर के दलीप सिंह मालवीय, अभिषेक पारिख, मुंबई के अर्णव मेहता, बीबीपुर गांव के सरपंच सुनील जगलान, अलवर के पवन आचार्य, भार्गवी कानडे, जालंधर के लखविंदर सिंह जैसे आम लोगों के अच्छे कामों को इतने गर्व के साथ स्वीकार किया होगा। अपने इस प्रयास से नरेंद्र मोदी का कद अपने समकालीन प्रधानमंत्रियों के कद से काफी बड़ा हो गया है।

प्रधानमंत्री के इस जनसंवाद का सबसे बड़ा पहलू है सामाजिक जनजागरूकता से जुड़ा भाव, जो निःसंदेह उस उद्देश्य में सफल भी हुआ जिसे लेकर पीएम मोदी ने इस जनसंवाद की शुरूआत की थी। 'मन की बात' कार्यक्रम का पहला प्रसारण 3 अक्टूबर 2014 को किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देशवासियों से संवाद के लिए शुरू किया गया यह कार्यक्रम आज लोकप्रियता के शिखर को छू रहा है। 2014 में स्वच्छ भारत अभियान के विषय पर पहली बार प्रधानमंत्री मोदी ने जनसंवाद किया। उन्होंने स्वच्छता का संदेश देते हुए इसके महत्व को रेखांकित किया और अपने विचार साझा किये, जिन्हें लोगों ने सुना और अपना समर्थन भी दिया। 'मन की बात' के जरिये स्वच्छता को जनांदोलन बनाने में प्रधानमंत्री बहुत हद तक सफल भी रहे, जिसका असर हमारे परिवेश में भी दिखाई देने लगा है। प्रधानमंत्री के इस पहले जनसंवाद का का उद्देश्य महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को धरातल पर उतारने का था।

'मन की बात' की इस पहली कड़ी में प्रधानमंत्री ने एक कहानी सुनाते हुए लोगों की इच्छाशक्ति को जागरूक करने का प्रयास भी किया था। प्रधानमंत्री ने कहानी सुनाई कि एक बार एक राहगीर रास्ते के किनारे पर बैठा था और आते-जाते सबको पूछ रहा था, मुझे वहां पहुंचना है, रास्ता कहां है। पहले को पूछा, दूसरे को पूछा, चौथे को पूछा। उसके बगल में एक सज्जन बैठे थे। वो सारा हाल देख रहे थे। बाद में वो राहगीर खड़ा हुआ और आते-जाते लोगों से रास्ता पूछने लगा, तो वो सज्जन खड़े हो कर उसके पास आये। उन्होंने कहा, देखो भाई, तुमको जहां जाना है न, उसका रास्ता इस तरफ से जाता है। तो उस राहगीर ने कहा कि भाईसाहब आप इतनी देर से मेरे बगल में बैठे हो, मैं इतने लोगों से रास्ता पूछ रहा हूं, कोई मुझे बता नहीं रहा है। आपको पता था, तो आप क्यों नहीं बताते थे। वो सज्जन बोले, मुझे भरोसा नहीं था कि तुम सचमुच में चलकर के जाना चाहते हो। मुझे लगा तुम ऐसे ही जानकारी के लिए पूछ रहे हो। लेकिन जब तुम खड़े हो गये, तो मैं समझ गया कि हां अब तो इस आदमी को जाना है। तब जा कर मुझे लगा कि मुझे आपको रास्ता दिखाना चाहिए। इस कहानी के माध्यम से प्रधानमंत्री ये संदेश देना चाहते थे कि जब तक हम चलने का संकल्प नहीं करते, हम खुद खड़े नहीं होते, तब रास्ता दिखाने वाले भी नहीं मिलेंगे। हमें उंगली पकड़ कर चलाने वाले नहीं मिलेंगे।

सफाई से जुड़े अगले महत्वपूर्ण विषय 'खुले में शौच से मुक्त होता भारत' में भी स्वच्छता से संबंधित बातें शामिल थी। पीएम मोदी के जनसंवाद प्रोग्राम का दूसरा अहम विषय यही था, जो केवल सफाई से नहीं बल्कि आमजन के स्वास्थ्य से भी जुड़ा है। 14 दिसंबर, 2014 को 'मन की बात' की तीसरी कड़ी में प्रधानमंत्री ने श्रोताओं से मुखातिब होते हुए नौजवानों से आग्रह करते हुए ड्रग्स से बचने की अपील की। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि जिस नशीले ड्रग्स को खरीद कर आप पैसे का दुरुपयोग कर रहे है, अगर उन पैसों को बचाकर हम खतरनाक आतंकवाद जैसी लडाई में सहयोग करने के लिए इस्तेमाल करे, तो हम अपने साथ साथ देश की भलाई में भी योगदान दे सकते हैं। उन्होंने इस बात पर भी चर्चा की कि जल्द ही ऐसी व्यवस्था की जाएगी जिसमे एक टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर होगा। जिसके माध्यम से हम नशे से मुक्ति दिलाने वाली दवा को

सीधे उन पीड़ित व्यक्ति या पीड़ित परिवारों तक पंहुचा सकेंगे।

इसी तरह 22 फरवरी, 2015 को नरेंद्र मोदी ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें परीक्षा के तनाव से बचना चाहिए और दूसरों से खुद का आंकलन कभी नहीं करना चाहिए। अगर आपको प्रतिस्पर्धा करनी है, तो आप खुद के साथ करें। उन्होंने कहा कि अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए हमेशा अपने शिक्षकों और अभिभावकों से सवाल करते रहना चाहिए इससे आपका ज्ञान बढ़ेगा। 30 अक्टूबर 2016 को उन्होंने कार्यक्रम के 25वें संस्करण में राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा कि देश के सभी कोनों से प्रत्येक व्यक्ति से अपने सवाल और सुझाव को रेडियो प्रसारण के पते पर भेजने के लिए वो आह्वान करते हैं। उनके चुनिंदा सुझाव और सवालों से उन्हें अपनी नीतियों को बनाने में मदद मिलेगी, वो इसमें जनता का भी योगदान चाहते हैं। एक प्रधानमंत्री द्वारा शायद ही पहले कभी इस तरह का आह्वान आम जनता से किया गया होगा।

जिन विषयों को देश के शीर्ष नेतृत्व ने 'मन की बात' कार्यक्रम में जनसंवाद का हिस्सा बनाया, उनपर बात किया जाना बेहद आवश्यक है। अब तक ऐसे विषय अछूत बने रहे हैं, जिन पर प्रधानमंत्री ने खुलकर बात की और आमजन की सलाह भी मांगी। 'खादी को सामाजिक स्वीकार्यता', 'नशे की समस्या, 'सफलता के लिए ज्ञान', 'योग को वैश्विक पहचान', 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान', 'सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान', 'अंगदान महादान पर चर्चा', 'दिव्यांग नाम देकर किया जीवन सार्थक', 'जल संचय को लेकर जागरूकता', 'जल संचय को देनी होगी प्राथमिकता', 'प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान : गर्भवती महिलाओं के लिए वरदान', 'खेलों में नए स्तर पर पहुंचाएगी यह नई सोच', 'कश्मीर समस्या के लिए एकता को बताया मूल मंत्र', 'सेना का हर जवान भारत रत्न है' जैसे ज्वलंत विषयों को उठाकर प्रधानमंत्री ने इस कार्यक्रम की सार्थकता सिद्ध की है। ये सभी विषय हमारी बुनियादी जरूरतों, मानवीय भावनाओं, देश के मान, सामुदायिक स्वास्थ्य और विकास को गति देने वाले कारकों से जुड़े हैं।

देश के शीर्ष नेतृत्व का आमजन से जुड़ना जरूरी है, लेकिन भारत जैसी विशाल जनसंख्या वाले देश में लोगों से संवाद करना और जन कल्याण के मुद्दों पर विचार रखना और आमजन की राय लेना आसान काम नहीं था। प्रधानमंत्री मोदी ने नियमित जनसंवाद कर इसकी एक सकारात्मक शुरूआत की। चाहे प्रधानमंत्री की अपील स्वच्छता के लिये हो, गैस सिलेंडर की सब्सिडी छोडने को लेकर, सडक सुरक्षा को लेकर, बेटियों को लेकर, सेल्फी को लेकर, पर्यटन को लेकर, उनके अनुभवों को लेकर, योग के आयामों को लेकर, आयुष अपनाने को लेकर, खादी अपनाने को लेकर, जो बाते उन्होंने कही, उसे लोगों ने माना और अच्छी प्रतिक्रिया दी। इतना ही नही 'जन-धन योजना' को लेकर जो रिस्पांस दिखा, उसे नरेंद्र मोदी का ही जादू कहा जा सकता है।

'मन की बात' के माध्यम से प्रधानमंत्री सवा सौ करोड़ भारतीयों के गौरव और पुरुषार्थ की बात करते हैं। इसके जरिए वे अपनी भावनाओं को देश के लोगों तक पहुंचाते हैं। इसके अलावा लोगों को सरकार की योजनाओं से अवगत कराना, राष्ट्र निर्माण और शासन में आम आदमी का समर्थन पाना भी कार्यक्रम का उद्देश्य है। यह कार्यक्रम श्रोता को सीधे प्रधानमंत्री से सवाल पूछने का मौका देता है। इसके साथ ही श्रोता प्रधानमंत्री का ध्यान उन क्षेत्रों के बारे में खींच सकते हैं, जिसका असर आम आदमी पर पड़ता है। श्रोता प्रधानमंत्री को बता सकते हैं कि वह 'मन की बात' में किन-किन विषयों पर बात कर सकते हैं। एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने कहा भी है कि, ह्लजब मैं मन की बात करता हूं तब, बोलता भले मैं हूं, शब्द शायद मेरे हैं, आवाज मेरी है, लेकिन कथा आपकी है, पुरुषार्थ आपका है, पराक्रम आपका है। मैं तो सिर्फ मेरे शब्द, मेरी वाणी का उपयोग करता हूं।ह्व प्रधानमंत्री के ही शब्दों में, ''लोकतंत्र लोगों की भागीदारी को लेकर ही है और इसका असली सार जनभागीदारी में ही है। सरकार और लोगों को एक साथ मिलकर काम करना चाहिए और नए भारत के लिए एक योजना तैयार करनी चाहिए। वास्तव में राष्ट्र की सफलता लोगों के योगदान के बिना अधूरी है और नागरिक केंद्रित दृष्टिकोण को लागू करने वाला 'मन की बात' इसका उल्लेखनीय उदाहरण है।''

'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री कभी मार्गदर्शक, कभी सलाहकार, कभी बड़े भाई, कभी घर के बुजुर्ग, कभी दोस्त, तो कभी बच्चों और युवाओं के बराबर खड़े दिखाई देते हैं। इस कार्यक्रम में इतना अपनापन है कि देशवासियों को इस बात का आभास ही नहीं होता है कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का प्रधानमंत्री उनसे बातचीत कर रहा है। अपने पिछले साढ़े दस साल के कार्यकाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 116 बार मन की बात कर चुके हैं, जिनमें कई अहम मुद्दों पर उन्होंने अपनी बात जनता के सामने रखी है। देशवासियों पर उनका प्रभाव कुछ इस तरह पड़ा है कि जब भी वो किसी मुद्दे पर बोलते हैं, तो लोग उस विषय के बारे में गूगल पर सर्च करते हैं और अगले एक महीने तक उनकी बात गूगल का टॉप ट्रेंड बन जाती है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिनांक 24 नवंबर, 2024 को 'मन की बात' कार्यक्रम के 116वें एपिसोड में 'एक पेड़ मां के नाम', गौरेया, एनसीसी, स्वामी विवेकानंद, गयाना यात्रा सहित कई मुद्दों पर बात की।

नरेंद्र मोदी आधुनिक भारत के मुख्य वास्तुविद हैं। उन्होंने भारत को नव ऊर्जा से भर दिया है। नए उत्साह और आत्मविश्वास से भारत आज विश्व में कुंदन की तरह दमक रहा है। उनके नेतृत्व में एक सशक्त भारत का निर्माण हुआ है। ऐसे परिदृश्य में जब भारत के प्रधानमंत्री को वैश्विक नेता के रूप में मान्यता मिली है, उनका प्रत्येक शब्द मूल्यवान हो जाता है। उनका हर वाक्य गंभीर चिंतन और विचार संपदा को अभिव्यक्त करता है। आज 'मन की बात' ने आम लोगों के मन में स्थान बना लिया है। यह चिंतनशील प्रधानमंत्री के विचारों का पुंज है। नीति निमार्ताओं और आम नागरिकों के लिए 'मन की बात' मार्गदर्शी संवाद साबित हुआ है। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को देश के लिए कुछ ना कुछ सकारात्मक करने की प्रेरणा मिलती है। विशाल देश की विशाल जनसंख्या से संवाद करने का इससे ज्यादा प्रभावी तरीका दूसरा नहीं हो सकता। 'मन की बात' से स्पष्ट है कि हमारे प्रधानमंत्री देश, जनता और लोक महत्व के मुद्दों को गहराई से समझते हैं।

प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' में कही गई बातें आधुनिक भारत के निर्माण ग्रंथ के शब्दशिल्प की तरह हैं। उनके नेतृत्व में इस महान देश का नवनिर्माण हो रहा है। आज पूरी दुनिया उनके द्वारा लिए जा रहे फैसलों और योजनाओं की प्रशंसा कर रही है। 'मन की बात' हमारे लिए मार्गदर्शन की तरह है, जिसके माध्यम से लोक महत्व और जनकल्याण की भावना को समझने में सहायता मिलती है। 'मन की बात' में प्रधानमंत्री द्वारा व्यक्त विचार प्रत्येक देशवासी के लिए अंधेरे में दीपक की लौ की भांति हैं। इन विचारों में देश की वर्तमान समस्याओं के समाधान के साथ ही स्वर्णिम भविष्य के लिए साफ संकेत भी छिपे हैं। हर आयु वर्ग का नागरिक इन विचारों से काफी कुछ सीख, समझ और जान सकता है।

बढ़ता प्रदूषण और स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव

डॉ अमरेंद्र सिंह मल्ली

दिल्ली और एनसीआर में वायु प्रदूषण का स्तर तेजी से बढ़ रहा है, जो लोगों के स्वास्थ्य पर गंभीर दुष्प्रभाव डाल रहा है। एक डॉक्टर के रूप में, मुझे इस विषय पर लोगों को जागरूक करना अपना कर्तव्य लगता है, ताकि हम सभी मिलकर अपने स्वास्थ्य और पर्यावरण की रक्षा कर सकें। यह कहना है एम्स के डॉक्टर अमरिंदर सिंह मल्ही का, डॉक्टर का यह भी कहाना है कि वायु प्रदूषण के कारण लगातार प्रदूषित हवा में सांस लेना हमारे श्वसन तंत्र, हृदय प्रणाली और संपूर्ण शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है।

श्वसन संबंधी समस्याएं

दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक (अदक) कई बार खतरनाक स्तर तक पहुंच जाता है। प्रदूषित हवा में मौजूद सूक्ष्म कण (ढट2.5 और ढट10) हमारे फेफड़ों में जाकर जम जाते हैं, जिससे खांसी, अस्थमा, ब्रोंकाइटिस और अन्य श्वसन रोगों का खतरा बढ़ जाता है। अस्थमा रोगियों और बुजुर्गों के लिए यह स्थिति और भी खतरनाक होती है, क्योंकि उनका प्रतिरक्षा तंत्र कमजोर होता है और प्रदूषण का सीधा असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है।

हृदय रोग का खतरा

सफदरजंग अस्पताल के मेडिकल सुपरिटेंडेंट एवं हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ.संदीप बंसल के अनुसार प्रदूषित हवा में सांस लेने से हृदय रोगों का खतरा भी बढ़ता है। अध्ययनों से पता चला है कि वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से रक्तचाप में वृद्धि होती है, जो आगे चलकर हार्ट अटैक और स्ट्रोक जैसी घातक समस्याओं का कारण बन सकता है। धूल और विषैले रसायन हृदय की धमनियों में सूजन और जमाव का कारण बन सकते हैं, जिससे हृदय रोगों का जोखिम बढ़ता है।

बच्चों पर विशेष असर

बच्चों का इम्यून सिस्टम अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुआ होता है, जिससे वायु प्रदूषण का सीधा असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है। अध्ययनों से साबित हुआ है कि प्रदूषित हवा में लंबे समय तक रहने से बच्चों में सांस की समस्याएं, फेफड़ों का विकास बाधित होना और इम्यूनिटी में कमी जैसी समस्याएं बढ़ सकती हैं।

आंखों और त्वचा पर दुष्प्रभाव

दिल्ली के प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ अमन खन्ना का कहना है कि प्रदूषित हवा में मौजूद विषैले कणों के कारण आंखों में जलन, खुजली और पानी आने जैसी समस्याएं आम हो गई हैं। इसके अलावा, त्वचा पर भी प्रदूषण का नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है, जिससे त्वचा में एलर्जी और रैशेज होने की संभावना बढ़ जाती है।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

वायु प्रदूषण न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। हाल के शोधों से पता चला है कि प्रदूषण के संपर्क में अधिक समय बिताने से चिंता, अवसाद और थकान जैसी मानसिक समस्याएं बढ़ सकती हैं।

जनता के लिए सुझाव

मेडिकल प्रोफेसर सुभाष गिरी का आम जनता को सुझाव कुछ इस प्रकार से हैं :-

1. मास्क का उपयोग करें: घर से बाहर निकलते समय मास्क का उपयोग करें और प्रदूषित हवा से बचने की कोशिश करें।

2. एयर प्यूरीफायर का उपयोग करें घर में एयर प्यूरीफायर का इस्तेमाल करें, खासकर उन क्षेत्रों में जहां वायु गुणवत्ता खराब हो।

3. अधिक पेड़ लगाएं अपने आस-पास अधिक पेड़ लगाकर हरियाली को बढ़ावा दें और सरकार द्वारा चलाए जा रहे प्रदूषण नियंत्रण कार्यक्रमों का समर्थन करें।

4. सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें प्रदूषण को कम करने के लिए निजी वाहन का उपयोग सीमित करें और कारपूल करने का प्रयास करें।

वायु प्रदूषण एक गंभीर समस्या है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यदि हम सभी मिलकर छोटे-छोटे कदम उठाएं, तो न केवल अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि अपने वातावरण को भी साफ और सुरक्षित रख सकते हैं। आइए, मिलकर एक स्वच्छ और स्वस्थ दिल्ली बनाने के लिए प्रयासरत रहें।

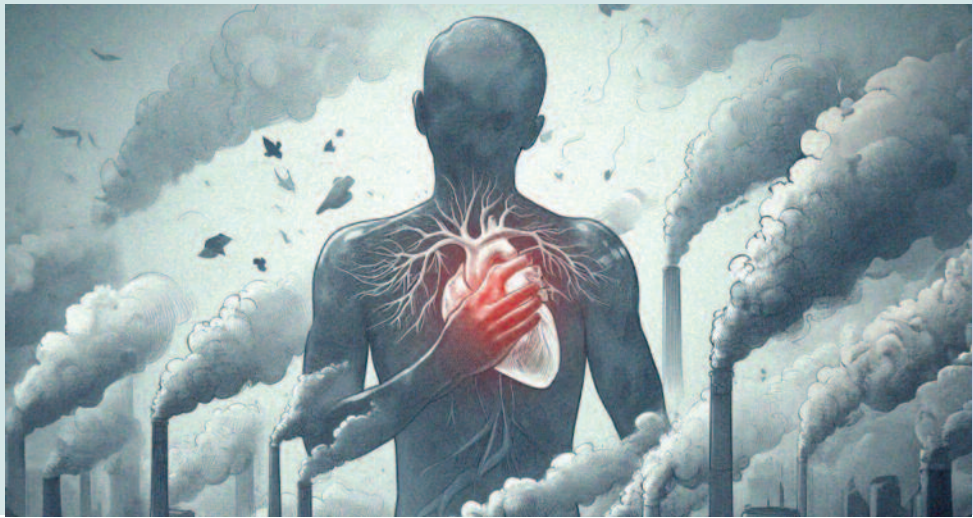

कौशल विकास और रोजगार सृजन

भरतपुर के युवाओं के लिए सुनहरा अवसर

दिव्यांशु निशाना

राजस्थान के भरतपुर जिले में हाल ही में आयोजित कौशल महोत्सव ने युवाओं के लिए रोजगार और कौशल विकास के क्षेत्र में एक नई उम्मीद जगाई है। यह पहल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'जीवन भर सीखते रहने' के दृष्टिकोण से प्रेरित है, जो हर व्यक्ति को उनकी उम्र और स्थान से परे शिक्षा और रोजगार के नए रास्ते प्रदान करने पर केंद्रित है। यह महोत्सव भरतपुर के 3,500 से अधिक युवाओं के पंजीकरण और प्रशिक्षण का गवाह बना, जिन्होंने 'स्किल इंडिया डिजिटल हब' (एसआईडीएच) पर नामांकन किया।

पिछले महीने आयोजित पांच दिवसीय 'जॉब रेडीनेस प्रोग्राम' के तहत सॉफ्ट स्किल्स, असेंबली लाइन ऑपरेशंस, और कस्टमर केयर जैसे विषयों में व्यापक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यक्रम का समापन मेगा भर्ती मेले के रूप में हुआ, जिसमें 3,000 से अधिक युवाओं ने वॉक-इन इंटरव्यू में भाग लिया।

स्थानीय प्रतिभाओं को अवसरों से जोड़ने की पहल

इस पहल का मुख्य उद्देश्य भरतपुर के युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर प्रदान करना और जिले को कुशल कार्यबल विकास केंद्र के रूप में स्थापित करना था। कार्यक्रम में राजस्थान और पड़ोसी क्षेत्रों के विभिन्न उद्योगों के नियोक्ताओं ने भाग लिया, जिससे युवाओं को पर्यटन, आतिथ्य, लॉजिस्टिक्स, खाद्य प्रसंस्करण, आईटी-आईटीईएस, ऑटोमोटिव, बीएफएसआई, और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे विविध क्षेत्रों में नौकरी के अवसर मिले। कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कौशल विकास मंत्री जयंत चौधरी ने कहा कि यह पहल न केवल युवाओं को संभावित नियोक्ताओं से जोड़ती है, बल्कि भरतपुर में आर्थिक विकास को भी गति देती है। इस प्रकार के कार्यक्रम स्थानीय प्रतिभाओं के विकास और उन्हें रोजगार की मुख्यधारा से जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कौशल महोत्सव की व्यापक भागीदारी

कौशल महोत्सव में राजस्थान सरकार के कई प्रमुख मंत्रियों और अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इनमें कौशल एवं रोजगार और उद्यमिता राज्य मंत्री के.के. विश्नोई, जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत, और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) के मुख्य कार्यक्रम अधिकारी महेंद्र पायल शामिल थे।

इस आयोजन ने सरकार, उद्योग जगत, और स्थानीय समुदायों के बीच एक सहयोगात्मक मंच तैयार किया। राजस्थान सरकार ने इस कार्यक्रम के माध्यम से भरतपुर के युवाओं को एक ऐसा मंच प्रदान किया, जहां वे अपनी क्षमताओं को निखार सकते हैं और रोजगार के उपयुक्त अवसर पा सकते हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर कौशल विकास अभियान

भरतपुर के इस आयोजन के साथ-साथ एनएसडीसी ने पिछले वर्ष देशभर में कई अन्य कौशल महोत्सव आयोजित किए हैं। ओडिशा के ढेंकनाल और संबलपुर, झारखंड के कोडरमा, उत्तर प्रदेश के लखनऊ और बिजनौर, राजस्थान के बूंदी, और तेलंगाना के सिकंदराबाद जैसे शहरों में आयोजित इन कार्यक्रमों ने कुल 45,000 उम्मीदवारों को 26,431 रोजगार के अवसर प्रदान किए। 657 नियोक्ताओं की भागीदारी वाले इन महोत्सवों ने स्थानीय स्तर पर कुशल कार्यबल के विकास में योगदान दिया।

स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ावा

भरतपुर में आयोजित कौशल महोत्सव का उद्देश्य न केवल युवाओं को रोजगार देना था, बल्कि जिले को एक आर्थिक विकास केंद्र के रूप में स्थापित करना भी था। इस कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को जहां अपनी क्षमता को पहचानने का अवसर मिला, वहीं नियोक्ताओं को कुशल और प्रतिभाशाली उम्मीदवार मिले।

भविष्य की दिशा

कौशल महोत्सव का यह आयोजन स्पष्ट रूप से दिखाता है कि सरकार, उद्योग, और स्थानीय समुदाय के बीच सहयोग किस प्रकार रोजगार और आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकता है। ऐसे कार्यक्रम युवाओं को न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और समाज के लिए योगदानकर्ता बनाने में भी मदद करते हैं।

भरतपुर में कौशल महोत्सव जैसे कार्यक्रम न केवल स्थानीय प्रतिभाओं को निखारने का अवसर देते हैं, बल्कि समग्र आर्थिक विकास में भी योगदान करते हैं। सरकार और उद्योग जगत के इस संयुक्त प्रयास से यह सुनिश्चित हुआ है कि भरतपुर के युवा भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं। इस तरह की पहल पूरे देश में रोजगार और कौशल विकास के नए मानक स्थापित करने में सक्षम हैं।

तो... हिंदुत्व है तो ही जीत 'सेफ' हैं
बीजेपी को 2024 के चुनावों का संदेश

● ललित वत्स

2019 में 303 और 2024 में 240 सीट। बीजेपी इस साल हुए लोकसभा चुनावों में 63 सीट नीचे आ गई थी। '400 पार' के बड़े नारे के लक्ष्य से बहुत दूर। पर, टीडीपी, जेडीयू और एनडीए के अन्य दलों की मदद से नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बन गए। गत 4 जून को आए लोकसभा चुनाव नतीजों में बीजेपी की सीटें मुख्यतः: उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और महाराष्ट्र में कम हुई थीं। इसके बाद बीजेपी और आरएसएस में काफी विचार विमर्श के बाद चुनाव का एजेंडा तय किया गया लगता है। तभी तो योगी आदित्यनाथ के 'बंटेंगे, तो कटेंगे' के बोल विधानसभा चुनावों में छाए रहे। उसका सुधरा हुआ रूप लाए पीएम मोदी। 'एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे' के रूप में।

जम्मू- कश्मीर में हालांकि एनसी की सरकार बन गई है, लेकिन एनसी और कांग्रेस मिलकर जम्मू संभाग में बीजेपी के निकट भी नहीं पहुंच पाए। यह देखते हुए खासकर कि जम्मू संभाग के पुंछ, राजौरी, रियासी, डोडा, किश्तवाड़ आदि जिलों में मुस्लिम आबादी भी खासा है।

बड़ी जीतः

उन दो नारों के भी दम पर हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में बड़ी जीत मिल गई। यूपी में नौ विधानसभा उपचुनावों में से भी बीजेपी सात ले गई। उससे पहले जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में भी बीजेपी अपने प्रभाव के जम्मू संभाग में 29 सीटें लेकर अपनी पकड़ बनाए रखने में कामयाब रही। कश्मीर घाटी में तो कोई सीट नहीं जीती, लेकिन इस बार उसे घाटी में भी उम्मीदवार बनाने के लिए कई सीटों पर लोग मिल गए। पर, बीजेपी झारखंड विधानसभा चुनाव में मनचाहे नतीजे से बहुत पीछे रह गई।

यूपी में था बड़ा नुकसानः

बीजेपी 2019 लोकसभा चुनाव की 63 सीट की तुलना में इस बार यूपी में 33 सीटें ही जीती है। हरियाणा में भी दस में से पांच ही जीत पाई थी। इसी तरह राजस्थान और महाराष्ट्र में भी बीजेपी की सीटें 2019 के मुकाबले काफी कम हुईं। महाराष्ट्र में एनडीए की सहयोगी शिंदे गुट शिवसेना और अजित गुट एनसीपी भी झटका खा गईं। इस माहौल में हरियाणा और जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव हुए। हरियाणा में कांग्रेस की जीत के प्रबल दावों के बीच योगी आदित्यनाथ और असम सीएम हिमंत बिस्वा सरमा जैसे नेताओं के तीखे कहे जाने वाले बोल

गूंजे। विपक्ष पर मोदी के तीखे सवालों और तीखे वार ने भी अपना काम किया। कांग्रेस के अंदरूनी मतभेद और जेके में नैशनल कांफ्रेंस जैसे अन्य कुछ कारण भी रहे। सो, बीजेपी 90 में से 48 सीट जीतकर कांग्रेस के जबड़े से जीत निकाल ले गई। कांग्रेस 37 सीट ही जीत पाई।

370 से लेकर अखिलेश तकः

समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव I.N.D.I.A गठबंधन के तहत हरियाणा और जम्म-कश्मीर में अपनी पार्टी के लिए भी कुछेक सीटें चाह रहे थे। लेकिन कांग्रेस ने एक भी सीट दोनों राज्यों में समाजवादी पार्टी को लड़ने के लिए नहीं दी। कांग्रेस जम्मू-कश्मीर में नैशनल कांफ्रेंस के साथ गठबंधन कर चुनाव लड़ रही थी। हरियाणा और जम्मू-कश्मीर चुनाव प्रचार साथ-साथ ही था। नैशनल कांफ्रेंस (एनसी) जेके में आर्टिकल 370 की वापसी जैसे कुछ वादे भी प्रचार में कर रही थी। एनसी के इस वादे पर मोदी, योगी, हिमंता और अन्य नेताओं ने कांग्रेस को हरियाणा से लेकर महाराष्ट्र तक भी जाकर घेरा। अब जम्मू-कश्मीर के बाहर के राज्यों में 370 की वापसी कितने लोग चाहते हैं? न के बराबर। हरियाणा और महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्र वैसे भी किसानों और जवानों के इलाके हैं। सो, एनसी का वह साथ भी कांग्रेस को एक हद तक महंगा पड़ा। इस वजह से किसानों की कथित खराब हालत को लेकर कांग्रेस द्वारा बीजेपी पर किए गए वार भी बेकार गए। जम्मू- कश्मीर में हालांकि एनसी की सरकार बन गई है, लेकिन एनसी और कांग्रेस मिलकर जम्मू संभाग में बीजेपी के निकट भी नहीं पहुंच पाए। यह देखते हुए खासकर कि जम्मू संभाग के पुंछ, राजौरी, रियासी, डोडा, किश्तवाड़ आदि जिलों में मुस्लिम आबादी भी खासा है। प्रदेश में उमर अब्दुल्ला की सरकार बनने का ज्यादा असर बीजेपी इसलिए भी नहीं मान रही है कि जेके केंद्र शासित प्रदेश है और अनेक अहम अधिकार उपराज्यपाल और केंद्र सरकार के ही पास हैं।

अब दूसरी तरफ भी देखते हैं। अखिलेश यादव की पार्टी सपा महाराष्ट्र में छह से आठ सीटें कांग्रेस के महाअघाड़ी गठबंधन से चाह रही थीं। लेकिन सपा को साथ नहीं लिया गया। बदले में अखिलेश ने यूपी में नौ विधानसभा सीटों में से एक भी सीट कांग्रेस के लिए नहीं छोड़ी। साथ ही सपा ने महाराष्ट्र में अकेले ही आठ सीटों पर चुनाव लड़ा। असदउद्दीन ओवैसी की एआईएमआईएम ने भी 16 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे। इस तरह आठ जमा सौलह कुल चौबीस सीट। महाराष्ट्र में करीब 40 विधानसभा सीटें मुस्लिम प्रभाव वाली हैं। तो सपा और एआईएमआईएम के होने से उन 24 सीटों पर महाअघाड़ी को हुए नुकसान का अंदाजा लगाया जा सकता है। 24 के अलावा बाकी करीब 15 सीटों के लिए भी बीजेपी के महायुति गठबंधन ने बेहतर रणनीति से महाअघाड़ी की काट के इंतजाम जमीन पर उतार रखे थे। महायुति ने राज्य के कोंकण, विदर्भ, मराठवाड़ा और मुंबई यानी सभी क्षेत्रों की हरेक सीट के लिए बेहतर रणनीति बनाई थी। दूसरी तरफ विपक्ष के महाअघाड़ी गठबंधन के तीनों दल लोकसभा चुनाव में एनडीए के महायुति को दिए गए झटके को लेकर अति आत्मविश्वास में डूबे रहे। नतीजा यह कि 288 सीटों में से महायुति बंपर तरीके से 230 सीटें जीता है और बीजेपी को अकेले दम 132 सीटें मिली हैं। इस अभूतपूर्व ऐतिहासिक विजय का ही फल है कि देवेंद्र फडनवीस सीएम बने हैं।

झारखंड के हेमंतः

महाराष्ट्र में महाविजय के नतीजों के ही दिन झारखंड का नतीजा भी आया। वहां बीजेपी और एनडीए के दिग्गज नेता और उनके जोरदार नारे हेमंत सोरेन की वापसी नहीं रोक पाए। हेमंत झारखंड में लगातार दूसरी बार चुनाव जीतकर सीएम बनने वाले नेता हो गए हैं। झारखंड की 81 सीटों में से कठ.ऊकअ गठबंधन में जेएमएम 34, कांग्रेस 16, लालू यादव की आरजेडी चार और सीपीआईएमएल दो सीटें जीतकर कुल 56 सीटें लेकर सरकार बनाने में सफल हुआ है।

बीजेपी संथाल परगना और कोल्हान के आदिवासी क्षेत्रों में बांग्लादेशी घुसपैठ को बड़ा मुद्दा बनाकर चुनाव प्रचार करती रही। हेमंत सोरेन के भाई चंपाई और भाभी सीता सोरेन को बीजेपी में शामिल करने का भी असर नहीं हुआ। पीएम मोदी, योगी आदित्यनाथ और हिमंत बिस्वा सरमा के हिंदुत्व पर आधारित नारों ने भी काम नहीं किया। घोटालों के सिलसिले में हेमंत सोरेन पर करप्शन के आरोपों के बावजूद यह नतीजा आया। उलटे, हेमंत की गिरफ्तारी ने उनके लिए सहानुभूति का काम किया लगता है। यह भी कि लोगों ने माना है कि हेमंत के मुकाबले चंपाई, सीता सोरेन या बीजेपी नेता बाबूलाल मरांडी बेहतर विकल्प नहीं हो सकते हैं।

आरक्षण और संविधानः

लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी हाथ में संविधान लेकर प्रचार करते दिखे थे। उनका आरोप था कि फिर से सरकार में आने पर बीजेपी संविधान बदल देगी। बीजेपी पर आरक्षण खत्म करने के आरोप भी राहुल, अखिलेश और अन्य नेताओं ने लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान लगाए थे। लगभग यही आरोप राहुल ने विधानसभा चुनावों में दोहराए। हाथ में संविधान भी फिर से दिखा। अडाणी के बारे में राहुल का नैरेटिव भी वही रहा। अब भी है। लेकिन वह और उनके साथी मोदी और उनके गठबंधन के प्रति जनता के एक वर्ग में दबी उस सहानुभूति को नहीं समझ पाए, जो लोकसभा चुनाव में कम सीटों की वजह से कहीं न कहीं थी। इसके अलावा 'बंटेंगे तो कटेंगे' और 'एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे' के लगातार बड़े नारों ने हिंदू समुदाय के बीच बड़ा काम किया है। विधानसभा चुनाव नतीजों और विशेषकर हरियाणा और महाराष्ट्र के नतीजों से यह संदेश भी मिल गया है कि विपक्ष द्वारा एक बार आजमाए गए नारे और तरीके बीजेपी को हर बार मात नहीं दे सकते हैं। यह संदेश भी कि प्रखर हिंदुत्ववाद का एजेंडा ही बीजेपी को बड़े और अच्छे नतीजे दे सकता है। सो, बीजेपी ही नहीं, उसके सहयोगी दल भी आगामी विधानसभा चुनावों में इसी एजेंडे पर दिखेंगे। बीजेपी के सहयोगी दल हिंदुत्व के एजेंडे का कम से कम विरोध तो बिल्कुल नहीं करेंगे, क्योंकि 'एक हैं तो ही जीत सेफ है'। तब तक तो न ही करेंगे, जब तक कि बीजेपी के बिना भी सरकार बनाने की गारंटी उनके पास न हो। सो, हिंदुत्व ही अब राह है, दिल्ली में तो बीजेपी का टिकट चाहने वालों के पोस्टरों पर योगी और मोदी के वह नारे दिखने भी लगे हैं।

महाकुंभ 2025

आस्था, परंपरा और अध्यात्म का संगम

प्रयागराज में आयोजित होने वाला महाकुंभ 2025 न केवल धार्मिक, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यह आयोजन भारत की एकता, आस्था और परंपरा का प्रतीक है। श्रद्धालुओं के लिए यह मोक्ष का मार्ग है...

● राजीव निशाना

भारत की पवित्र धार्मिक परंपराओं में से एक, महाकुंभ मेला, प्रयागराज में 2025 में आयोजित होने जा रहा है। यह आयोजन करोड़ों श्रद्धालुओं, साधु-संतों और पर्यटकों को आकर्षित करेगा। महाकुंभ मेला भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का अद्वितीय संगम है, जो हर 12 वर्षों में आयोजित किया जाता है। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों के संगम स्थल पर होने वाले इस मेले का विशेष महत्व है, जहां स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति मानी जाती है।

महाकुंभ मेले को लेकर उत्तर प्रदेश में योगी सरकार युद्ध स्तर पर तैयारियों में जुटी है। मुख्यमंत्री सीएम योगी ने कहा कि 'इस बार पूरी दुनिया देखेगी भारत की अतिथि देवो भवः की संस्कृति देखेगी और लगभग 40 करोड़ से ज्यादा देश-विदेश से श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद है।

महाकुंभ मेला 2025 का महत्व

महाकुंभ मेला केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह मानवता, सहिष्णुता और भारतीय दर्शन के मूल्यों को दर्शाने वाला एक भव्य आयोजन है। इसका उल्लेख प्राचीन धर्मग्रंथों, वेदों और पुराणों में मिलता है। यह मेला न केवल भारत, बल्कि दुनियाभर के लोगों को भारतीय संस्कृति और अध्यात्म से जोड़ता है।

2025 के महाकुंभ की थीमः

इस बार प्रयागराज महाकुंभ 2025 को स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और आध्यात्मिक चेतना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। योग, ध्यान, सत्संग और गंगा आरती जैसे विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन मेले को और भी खास बनाएगा।

महाकुंभ 2025 के प्रमुख स्नान पर्व

प्रयागराज में महाकुंभ 2025 के दौरान विशेष स्नान पर्व निम्नलिखित तिथियों पर होंगेः

1. 13 जनवरी 2025: पौष पूर्णिमा

- यह मेला का पहला प्रमुख स्नान पर्व है, जिसे शुभारंभ का दिन माना जाता है।

2. 14 जनवरी 2025: मकर संक्रांति (प्रथम शाही स्नान)

- इस दिन गंगा में स्नान करने से शुभ फल और पुण्य की प्राप्ति होती है।

3. 29 जनवरी 2025: मौनी अमावस्या (द्वितीय शाही स्नान)

- यह सबसे महत्वपूर्ण स्नान पर्व है, जब करोड़ों श्रद्धालु संगम में स्नान करते हैं।

4. 3 फरवरी 2025: बसंत पंचमी (तृतीय शाही स्नान)

- इस दिन पीले वस्त्र धारण कर पूजा और स्नान का विशेष महत्व है।

5. 4 फरवरी 2025: अचला सप्तमी

- इस दिन गंगा स्नान से पापों का क्षय होता है।

6. 12 फरवरी 2025: माघी पूर्णिमा

- यह दिन ध्यान, साधना और दान-पुण्य के लिए उपयुक्त है।

7. 26 फरवरी 2025: महाशिवरात्रि (अंतिम स्नान)

- भगवान शिव की पूजा और स्नान के साथ यह मेला समाप्त होगा।

महाकुंभ मेले की विशेषताएं

1. शाही स्नानः

शाही स्नान महाकुंभ मेले का मुख्य आकर्षण है। इसमें विभिन्न अखाड़ों के साधु-संत अपने झंडे और प्रतीकों के साथ पवित्र स्नान करते हैं।

2. योग और ध्यान शिविरः

मेले के दौरान आध्यात्मिक गुरुओं द्वारा योग और ध्यान सत्र का आयोजन किया जाता है।

3. धार्मिक प्रवचनः

मेले में प्रसिद्ध संतों और विद्वानों द्वारा प्रवचन और भजन-कीर्तन आयोजित किए जाते हैं।

4. सांस्कृतिक प्रदर्शनियांः

मेले में भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करने के लिए प्रदर्शनियां और हस्तशिल्प मेले भी आयोजित किए जाते हैं।

महाकुंभ 2025 के लिए व्यवस्थाएं

प्रयागराज महाकुंभ 2025 के आयोजन के लिए उत्तर प्रदेश सरकार और स्थानीय प्रशासन ने व्यापक तैयारियां की हैं। इन व्यवस्थाओं में शामिल हैंः

- स्वच्छता अभियानः पूरे मेले क्षेत्र को स्वच्छ रखने के लिए विशेष योजनाएं बनाई गई हैं।

- सुरक्षा व्यवस्थाः श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए अत्याधुनिक तकनीक और सुरक्षा बलों की तैनाती होगी।

- परिवहनः रेलवे, बस और हवाई सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए विशेष इंतजाम किए गए हैं।

- आवासः श्रद्धालुओं के लिए टेंट सिटी, धर्मशालाओं और होटलों का निर्माण किया गया है।

प्रयागराज में आयोजित होने वाला महाकुंभ 2025 न केवल धार्मिक, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यह आयोजन भारत की एकता, आस्था और परंपरा का प्रतीक है। श्रद्धालुओं के लिए यह मोक्ष का मार्ग है, तो वहीं पर्यटकों के लिए भारतीय संस्कृति को करीब से जानने का अवसर। महाकुंभ 2025 न केवल एक मेले का आयोजन है, बल्कि यह संपूर्ण मानवता को जोड़ने और प्रेरित करने वाला एक अद्वितीय अनुभव होगा।

डॉनल्ड ट्रंप का धमाकेदार आगमन

ट्रंप आ रहे हैं, बाइडेन उलझा रहे हैं

ललित वत्स

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डोनल्ड ट्रंप की धमाकेदार जीत ने पूरी दुनिया को चौंकाया है। उम्मीदें भी जगाई हैं। चौंकाया यूं कि इसके कयास, आकलन और उम्मीदें कम थीं। उम्मीदें यूं कि ट्रंप युद्ध के खिलाफ बोल रहे हैं। उन्होंने कहा है कि वह युद्ध में यकीन नहीं करते। बड़ी अच्छी बात है यह। जीने के लिए अमन जरूरी है और अमन कायम रखने के लिए अच्छा मन जरूरी है। अब तक तो लगता है कि ट्रंप ने वह बात अच्छे मन और अच्छे इरादे से कही है, हालांकि इसकी परीक्षा भविष्य की परिस्थितियों और युद्ध से जुड़े किरदारों की भूमिका पर भी निर्भर करेगी। पर, यह ट्रंप का अपने देश के लोगों के साथ भी वादा है, जिसे निभाने की कोशिशें तो उनकी तरफ से दिखाई देनी चाहिएं?

बीजेपी+विपक्षी दलः

अमेरिका के इस चुनाव को भारत के तरीके से समझें, तो ट्रंप के चुनाव प्रचार और भारत में इस साल लोकसभा चुनाव प्रचार के बीच कुछ समानताएं देखी जा सकती हैं। लोकसभा चुनाव में पीएम नरेंद्र मोदी और बीजेपी ने देश में किए गए विकास के अलावा राष्ट्रवाद, हिंदुत्व, आतंकवाद (आर्टिकल 370) जैसे मुद्दों को अपना प्रमुख हथियार बना रखा था। वहीं, कांग्रेस और उसके सहयोगी दल बाकी बातों के अलावा महंगाई और बेरोजगारी को अपने हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे। लेकिन पिछली बार से सीटें कम होने के बावजूद बीजेपी और एनडीए अपने मुद्दों और पीएम मोदी की इमेज के दम पर तीसरी बार सत्ता में पहुंच गए। इस समय विश्व में कोई भी नेता सही में लोकतांत्रिक तरीके से जीतकर लगातार तीसरी बार पीएम पद पर नहीं हैं। हालांकि, पूतिन की भी लंबी पारी चल रही है, लेकिन वहां के चुनाव भारत की तरह के नहीं हैं। कनाडाई पीएम जस्टिन ट्रुडो भी तीसरी बार सत्ता में हैं, लेकिन वह लगातार तीसरी बार नहीं जीते हैं और इस बार अल्पसंख्यक सरकार चला रहे हैं। बहरहाल, ट्रंप ने भारत में सत्तारूढ़ दल और विपक्षी दलों के मिले-जुले मुद्दों को अपने प्रचार में इस्तेमाल कर चमकदार जीत हासिल की है।

ट्रंप के तीरः

ट्रंप ने अपने यहां के राष्ट्रवाद को 'अमेरिका 123' कहकर मुद्दा बनाया। भारतवंशियों को ध्यान में रखकर 'हिंदुओं और हिंदू' जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर उन्हें कुछ फायदों की उम्मीदें दीं। पाकिस्तान की आलोचना की। आतंकवाद के खिलाफ कड़े बयान दिए। साथ ही मोदी सरकार के खिलाफ भारत के विपक्षी दलों के महंगाई और बेरोजगारी के नैरेटिव को बाइडेन ने बाइडेन सरकार के खिलाफ यूज किया। यह कहना सही नहीं होगा कि ट्रंप ने भारत में हुए प्रचार की नकल की या यहां के मुद्दों को अपने प्रचार का आधार बनाया। ट्रंप वह सब इसलिए कर पाए कि अमेरिका में भी वह मुद्दे हैं। युद्ध और आतंकवाद जैसे अंतरराष्ट्रीय मुद्दों में उलझी आज की दुनिया के लोग अपने यहां के 'राष्ट्रवाद' को प्राथमिकता देने लगे हैं। अमेरिका और अन्य देशों में अब भारतीयों और हिंदू समुदाय का अलग महत्व है

ऐतिहासिक जीत-हार -:

पूर्व राष्ट्रपति 78 वर्ष के डॉनल्ड ट्रंप ने राष्ट्रपति चुनाव में उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को हराया है। अमेरिकी इतिहास में दूसरी बार हुआ है कि कोई पूर्व राष्ट्रपति चार साल के गैप के बाद दोबारा उसी पद के लिए चुना गया है। 60 वर्ष की कमला हैरिस को तीन बड़े फायदे चुनाव में मिलने की उम्मीद थी। एक यह कि वह महिला हैं। दूसरे यह कि वह उपराष्ट्रपति हैं। तीसरे कि वह भारतवंशी हैं और इस नाते वहां बसे भारतीयों के वोट मिलने की उम्मीद और कयास भी थे। लेकिन सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक पार्टी की यह उम्मीदवार रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार ट्रंप से हार गईं। अमेरिका के इतिहास में पहली महिला उपराष्ट्रपति का रेकॉर्ड बनाने वाली हैरिस को ट्रंप ने हराकर दूसरी बार जीतने का इतिहास बना लिया। महिला होना, भारतवंशी होना या उपराष्ट्रपति पद पर होना, कुछ भी काम नहीं आया।

और उसकी अपनी उम्मीदें भी हैं। महंगाई और बेरोजगारी तो अब लगभग हर देश के अंदर का मुद्दा है। ट्रंप ने यह मुद्दा सफलतापूर्वक इसलिए इस्तेमाल कर लिया कि राष्ट्रपति बाइडेन अपने यहां की महंगाई और बेरोजगारी के बावजूद यूक्रेन की मदद के नाम पर वहां वित्तीय और सामरिक सहायता देने और बढ़ाने में लगे रहे।

थानेदार का डंडा:

पीएम मोदी ने इसी साल तीन बार रूस के दौरे और दुनिया के बड़े मंचों पर कहा है कि 'यह युग युद्ध का नहीं, बुद्ध का है', यानी दुनिया के आगे बढ़ने के लिए यह दौर शांति के रास्ते पर चलने का है। चुनाव प्रचार के दौरान और जीत के बाद ट्रंप ने भी कहा है कि वह युद्ध में भरोसा नहीं करते हैं। हो सकता है कि मोदी और ट्रंप की लगभग एक जैसी भाषा को भी ट्रंप और उनके प्रशासन ने पसंद न किया हो। तो रूस में खतरनाक अमेरिकी मिसाइल से यूक्रेनी हमले के बाद यह युद्ध खत्म कराने की ट्रंप की संभावित कोशिशों के लिए फिलहाल तो अड़चनें दिख रही हैं। इजराइल, फिलिस्तीन, हमास मामला भी पहले उबल रहा है। लेकिन लगता है कि इस्राइली पीएम नेतन्याहू से भी कुछ नाराजगी रही है, तभी तो इंटरनैशनल क्रिमिनल कोर्ट ने नेतन्याहू के खिलाफ कार्रवाई की बात कर दी है। और मोदी? बाइडेन और उनके प्रशासन ने जी-20 और अन्य मंचों पर मोदी की बॉडी लैंग्वेज पसंद नहीं की हैं। एक समय खुद को दुनिया का थानेदार मानकर गश्त के दौरान डंडा चलाते और सलाम लेते चलने के आदी रहे अमेरिका के बाइडेन अभी तक समझ नहीं पाए हैं कि वक्त बदल गया है? वह समझेंगे भी क्यों, माल बेचना चाह रहे थे तो मोदी सरकार बदले में अपना कोई माल निर्यात करने या मेक इन इंडिया में आकर काम करने की बात कर रही थी। अमेरिका को छोड़कर फ्रांस या अन्य देशों के साथ बड़े सौदे कर रही थी। रूस के साथ भारत की दोस्ती, पूतिन से बार-बार गले मिलना भी बाइडेन और उसकी सरकार को मन में कभी नहीं भाया था। इसलिए कई जानकार मानते हैं कि बाइडेन और उनका प्रशासन मोदी के लिए भी 'पार्टिंग गिफ्ट' का 'शॉट' लगाकर जा रहा है। वहां उग्रवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू के मामले में अमेरिकी रुख यहर दिखाता है। एक मामले में भारत के एनएसए अजीत डोवल के नाम भी घसीटा गया है। यह भी वही सब जताता है। अपनी विदाई के समय बाइडेन की मोदी को भारत में झटका देने की कोशिश को अडाणी के खिलाफ कार्रवाई के रूप में भी एक तरह से देखा जा रहा है। अमेरिकी अदालत में अडाणी के खिलाफ कार्यवाही होने से पीएम मोदी को व्यक्तिगत तौर पर या भारत को वैसे तो कोई फर्क नहीं पड़ता है, लेकिन मामले पर भारत में सियासत गरम है।

राहुल गांधी और बाकी विपक्ष ने पीएम मोदी पर निशाने साधकर अडाणी को अरेस्ट करने की मांग उछाल दी। राहुल तो अडाणी पर लंबे अरसे से निशाने साधते रहे ही हैं, अब आगे वह और अन्य विपक्षी नेता अरसे तक मोदी और उनकी सरकार को घेरने की कोशिश जारी रख सकते हैं। लेकिन इसमें बाइडेन या उनका प्रशासन कहां है, अमेरिका में अडाणी के खिलाफ कार्यवाही तो कोर्ट करा रही है? अमेरिका से ही छनकर कुछ और भी आया है, जो गौरतलब है। यही कि कोर्ट के जिस अटॉर्नी ने अडाणी के खिलाफ आदेश दिया है, उसे बाइडेन प्रशासन ने ही नियुक्त किया था। उन अटॉर्नी के करीबी संबंध सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक पार्टी के एक सांसद से हैं। और वह सांसद वहां के बड़े कारोबारी जॉर्ज सोरेस के करीबी हैं। जॉर्ज सोरेस वही हैं, जिन्होंने अडाणी मामले में ही हिंडनबर्ग खुलासों में रुचि दिखाई थी। बड़ा वर्ग मान रहा था कि चीन और भारत में कांग्रेस के पसंद के सोरेस ने हिंडनबर्ग रिपोर्ट तब सामने रखवाई थी, जब यहां संसद का सत्र शुरू होने वाला था। अडाणी के खिलाफ अमेरिकी अदालत में कार्यवाही का मामला भी नई दिल्ली में संसद सत्र से ठीक पहले सार्वजनिक किया गया है। पर, फिलहाल कुछ भी हो रहा है, मोदी और ट्रंप अगले चार साल तो साथ-साथ चलकर अपनी राह बनाते और अन्य को भी राह दिखाते दिखाई दे सकते हैं।

बाइडेन उलझा रहे हैं:

लगता है कि ट्रंप की चमकदार जीत को बाइडेन और उनकी पार्टी के लोग भी उसी तरह नहीं पचा पा रहे हैं, जिस तरह कि भारत में नरेंद्र मोदी की जीत को विपक्षी नेता नहीं पचा पाते हैं। ट्रंप की जीत के बाद बाइडेन प्रशासन कई ऐसे कदम उठा रहा है, जो ट्रंप को शासन चलाने में दिक्कत पैदा कर सकते हैं या उनके चुनावी वादों में रोड़ा बन सकते हैं? बड़ा उदाहरण यूक्रेन को रूस के अंदर खतरनाक अमेरिकी मिसाइल से हमले करने की छूट देने का है। इसके जवाब में रूसी राष्ट्रपति पूतिन ने परमाणु हथियार इस्तेमाल करने से भी न चूकने की बात कह दी है। अपने अधिकारियों से उस दिशा में तैयारी भी करा रहे हैं पूतिन। यूक्रेन द्वारा रूस के अंदर खतरनाक अमेरिकी मिसाइल से हमले जारी रहते हैं, तो रूस किसी भी समय परमाणु हथियार यूज कर सकता है। उस हालत में रूस-यूक्रेन का यह युद्ध कई देशों का युद्ध भी बन सकता है। रूस और अमेरिका के अलावा अन्य कुछ देशों के पास भी खतरनाक परमाणु हथियार हैं। एक देश ने उसमें से एक भी हथियार इस्तेमाल किया, तो कई देशों, खासकर रूस के आसपास के यूरोपीय देशों में तबाही हो सकती है। यूक्रेन तो ढाई साल से तबाही पहले ही झेल रहा है कि यह युद्ध आज बंद हो जाए, तो भी यूक्रेन और इसके शहरों, आबादी आदि को फिर से पहले वाला रूप पाने के लिए चार-पांच दशक भी लग सकते हैं। इस बीच बड़ी मानव क्षति जो हो चुकी है, उसका तो कोई मूल्य लगाया ही नहीं जा सकता है।

गोली के बाद ट्रंप:

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव नवंबर 4 या 5 को होता रहा है और नए राष्ट्रपति नया साल शुरू होने पर जनवरी में पदभार ग्रहण करते हैं। तो ट्रंप भी जनवरी में चार्ज संभालेंगे। उससे पहले उन्होंने अपने सहयोगियों को चुनने का सिलसिला शुरू कर रखा है। वह पंद्रह एजेंसियों यानी विभागों के सचिव (मंत्री) तय करने के साथ ही नीचे तक के पूरे सिस्टम में अपनी पकड़ के लिए नाम तय कर और करा रहे हैं। करीब चार हजार अधिकारी और अन्य लोग नियुक्त किए जाने हैं। ट्रंप चार साल पहले भी राष्ट्रपति थे। सो, उन्हें अमेरिकी विभागों से लेकर दुनिया के गंभीर और गुप्त मामलों की भी जानकारी है। धड़ल्ले से जीवन जीने के लिए प्रसिद्ध ट्रंप को शोमैन और दिलेर माना जाता है। चुनाव प्रचार के दौरान कान के नीचे गोली लगने के बाद भी ट्रंप ने स्टेज पर अपने मजबूत इरादों का इजहार जारी रखा था। मुट्ठी बंद कर हाथ ऊपर उठाकर जताए गए उन इरादों ने भी ट्रंप की जीत में कुछ न कुछ तो रोल प्ले किया ही है। साथ ही वह दुनिया को भी अब उनके इरादों के बारे में एक तरह से मैसेज है। पिछली इनिंग में कुछेक बार हल्की हरकत करते दिखे ट्रंप को अब सत्ता की बेहतर समझ और अनुभव भी हैं।

बढ़ती आबादी, घटते संसाधन बिगड़ा पर्यावरण का संतुलन

पर्यावरण संरक्षण पर विकसित देश एकमत नहीं

एक शोध के मुताबिक, अगर पर्यावरण के संतुलन के लिए एक बड़ी परियोजना पर काम किया जाये तो विश्व भर में 800 करोड़ बड़े वृक्ष लगाने और 70 लाख हेक्टयर जमीन पर जंगल बसाने की जरूरत पड़ेगी, जोकि संभव नहीं है।

अजय गौतम

बढ़ती आबादी और घटते प्राकृतिक संसाधन से पर्यावरण असंतुलित हो गया। पहाड़ों और जंगलों की तेजी से कटाई, प्राकृतिक जलस्रोतों का भरपूर दोहन, फसलों की जमीन पर गंगनचुंबी इमारतों से प्रकृति का स्वरूप और पर्यावरण का दोनों बिगड़ गया है।

औद्योगिकरण और शहरीकरण का विस्तार अभी और होना है। जो देश जितना सक्षम होगा उतना विकास करेगा। तरक्की का पैमाना यही है कि ग्लोबल इंडेक्स में कौन सा देश किस रैंक पर है। ग्लोबल इंडेक्स एलपीजी अर्थात लिब्रलाइजेशन, प्राइवेटाइजेशन और ग्लोबलाइजेशन पर आधारित हैं। इसी एलपीजी के दायरे में वो सभी फैक्टर शामिल हैं जिससे विकास के सूचकांक में बने रहने के लिए हर देश अपनी क्षमता के अनुकूल प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने लगा है।

जिन देशों में औद्योगिकरण और शहरीकरण की गति धीमी है उन देशों में पर्यावरण का संतुलन जरूर देखने को मिलेगा लेकिन वह देश विकास के सूचकांक में बहुत पीछे हैं।

छोटे-छोटे देशों में जहां प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता है वहां विकसित देशों की एंट्री हो गई है। चीन, अमेरिका, रूस.... सहित कई विकसित देश विकास के लिए छोटे-छोटे देशों को 30 साल, 50 साल, 99 साल के लिए कर्ज दे रहे हैं। एशिया, यूरोप सहित कई अफ्रीकी देशों में जहां घने जंगल हैं वहां तेजी से जंगलों की कटाई हो रही है, जिससे प्राकृतिक जलस्त्रोत भी नष्ट हो रहे हैं। उन देशों में जमीन के अंदर पड़े खान-खदानों पर कब्जे के लिए विकसित देशों के बीच आपाधापी देखी जा रही है।

सिर्फ भोजन-पानी की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन नही किया जा रहा है बल्कि विकास के उपरी सूचकांक में बने रहने के लिए भी ऐसा किया जा रहा है।

आज से पचास साल पहले जहां घने जंगल थे अब वहां का नजारा कुछ और दिखता है। जिन देशों कौं आबादी ज्यादा है वहां पर्यावरण असंतुलन के भयानक स्वरूप सामने आने लगे हैं। नदी, जंगल, पहाड़ धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खो रहे हैं। हर साल तापमान में वृद्धि देखी जा रही है। यह मानव जीवन के लिए खतरनाक संकेत है।

विश्व स्तर पर पर्यावरण के असंतुलन से ग्लेशियर का पिघलना तो महज एक उदाहरण है। मनुष्य ने विकास की अंधी दौड़ में ये नहीं सोचा कि प्रकृति के स्वरूप बिगड़ने का दुष्परिणाम क्या होगा। ग्लेशियर के पिघलने से समुद्र के किनारे पर बसे शहर, और टापू पर बसे देशों के अस्तित्व खतरे में हैं। यह वैश्विक चिंता जरूर है लेकिन कोई भी देश इसपर ठोस पहले नहीं कर पाते। ग्लोबल समिट में हर बार पर्यावरण पर चिंता जतायी जाती है। पर्यावरणीय कारकों के सरंक्षण के लिए सतत और समावेशी योजनाओं पर विकसित देश बड़ी-बड़ी बाते करते हैं, लेकिन नतीजा सिफर है। इन गंभीर मुद्दों पर भी विकसित देश अपना नफा-नुकसान देखते हैं। क्योंकि विकसित देश ही पर्यावरण को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा रहे हैं।

वकास की अंधी दौड़ में मानव जाति ने प्रकृति का जो नुकसान किया है उसकी भरपाई संभव नहीं है। शहरों का विस्तार, औद्योगीकरण, गगनचुंबी अट्टालिकाएं, हाइवे...इन सभी के विस्तार के लिए जंगलों की कटाई जारी है देश दुनिया में जंगलों की कटाई अंधाधुंध जारी है।

अगर पर्यावरण के संतुलन के लिए एक बड़ी परियोजना पर काम किया जाये तो आठ सौ करोड़ बड़े बृक्ष लगाने और 70 लाख हेक्टयर जमीन पर जंगल बसाने की जरूरत पड़ेगी, जोकि संभव नहीं है।

भारत की डेमोग्राफी के आधार पर कहा जाये तो इस देश के प्राकृतिक संसाधन से मात्र 70 करोड़ आबादी की खुराक पूरी हो सकती है।

जबकि भारत की जनसंख्या 140 करोड़ पार कर चुकी है। जाहिर है कि बढ़ती आबादी और बढ़ती जरूरतों के कारण प्राकृतिक संसाधनों का बेजा इस्तेमाल किया जा रहा है। आने वाले समय में भोजन-पानी की किल्लत मनुष्य के सामने एक बड़ी समस्या बनकर उभरेगी।

तरक्की की चाह में मनुष्य अपनी बबार्दी की गाथा खुद लिख रहा है। प्रकृति मनुष्य को चेतावनी दे रही है कि अभी अगर नहीं संभल पाये तो आने वाली पीढ़ियां इसकी बड़ी कीमत चुकायेगी। वहीं दूसरी तरफ प्रकृति अपना संतुलन साधने के लिए विध्वंशकारी रूप में भी ले सकती है।

तेजी से जंगलों की होती कटाई

छोटे-छोटे देशों में जहां प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता है वहां विकसित देशों की एंट्री हो गई है। चीन, अमेरिका, रूस सहित कई विकसित देश विकास के लिए छोटे-छोटे देशों को 30 साल, 50 साल, 99 साल के लिए कर्ज दे रहे हैं। एशिया, यूरोप सहित कई अफ्रीकी देशों में जहां घने जंगल हैं वहां तेजी से जंगलों की कटाई हो रही है, जिससे प्राकृतिक जलस्त्रोत भी नष्ट हो रहे हैं। उन देशों में जमीन के अंदर पड़े खान-खदानों पर कब्जे के लिए विकसित देशों के बीच आपाधापी देखी जा रही है।

अग्निहोत्र

पर्यावरण शुद्धिकरण की सरल प्रक्रिया

विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में यज्ञ के महत्व को बताया गया है। आयुर्वेद में भी अग्निहोत्र का वर्णन है। वातावरण शुद्ध होगा तो बीमारियां कम होंगी। मूल रूप से देखा जाये तो हवन उपचार एवं वातावरण शुद्धिकरण की एक प्रक्रिया है, जिसका ठोस धार्मिक और वैज्ञानिक आधार है।

.....

ब्रिटिश वैज्ञानिक डॉ. हॉफकिन ने अपनी शोध में उल्लेख किया है कि शुद्ध घी, चीनी और सुगंधित पेड़ों की लकड़ियों को एक साथ जलाने से जो धुआं निकलता है उससे वातावरण के हानिकारक कीट मर जाते हैं।

.....

जंगल में पाये जाने वाले विशेष प्रकार के पेड़ों की सुखी लकड़ियां जलाने पर उससे निकलने वाले धुंएं से वातावरण में मौजूद संचरण रोग फैलाने वाले जीवाणु-विषाणु बेअसर हो जाते हैं।

- जर्मन वैज्ञानिक प्रो. टिलवर्ड

आचार्य डॉ. विक्रमादित्य

सनातन संस्कृति में हर धार्मिक कर्मकांडों का विशेष महत्व है। सनातन धर्म में पूजा विधानों के पीछें जन कल्याण की भावना निहित है। पूजा समापन के पश्चात हवन की परम्परा है और यह अनादिकाल से चली आ रही है। हवन अर्थात अग्निहोत्र के बाद ही पूजा की पूर्णता मानी जाती है।

हमारे ऋषि मुनियों ने हवन करने की परम्परा इसीलिए भी बनायी ताकि पर्यावरण की शुद्धता बरकरार रहे। हवन सामग्री में औषधियुक्त कई जड़ी बुटियां होती है जिसके जलने से पर्यावरण में विचरण करने वाले हानिकारक जीवाणु-विषाणु मर जाते हैं।

हवन में उपयोग में लायी जाने वाली सामग्रियों में शुद्ध घी, जड़ी बुटियां, सुगंधित वृक्षों की लकड़ियां एवं कई धुम्रित चीजों को शामिल की जाती है। हवन के दौरान उठने वाले धुएं से आसपास के वातावरण शुद्ध हो जाते हैं। हवन का मुख्य उद्देश्य होता है नकारात्मक शक्तियों को घर से दूर करना, घर की पवित्रता को बनाये रखना है लेकिन इससे आस-पास के वातावरण की भी शुद्धि हो जाती है।

अपने घरों की शुद्धता के लिए सप्ताह में एक बार जरूर हवन किया जाना चाहिए। ऐसा करने से आस-पास का वातावरण विषाणु से मुक्त रहता है।

हमारे धार्मिक ग्रंथों में कई तरह के यज्ञ बताये गये हैं। अलग-अलग मनोकामना की प्राप्ति के लिए भिन्न-भिन्न विधियों से यज्ञ किये जाते हैं, लेकिन इन सभी का उद्देश्य मानव कल्याण की कामना है, परोपकार की भावना है।

कोई भी व्यक्ति पूजा पाठ, हवन अपनी मनोकामनाओं की प्राप्ति के लिए करता है लेकिन इसका प्रभाव व्यापक है। व्यक्ति विशेष द्वारा किया जाने वाला यह कार्य दूसरों को भी आरोग्य बनाता है। वह पर्यावरण की शुद्धिकरण में सहभागी बनता है। कई वैज्ञानिक शोधों से भी स्पष्ट हो चुका है कि हवन के दौरान उच्चारण किये जाने वाले मंत्र और यज्ञ से

प्रज्जवलित होने वाली अग्नि से प्रकृति को लाभ पहुंचती है। हवन में आहुत की जाने वाली सामग्रियां वातावरण मे फैले विषाणु और जीवाणु को नष्ट कर देती है।

अग्निहोत्र का धुआं प्रदूषण मिटाने में भी सहायक है। धुएं के रूप में निकलने वाली सुगंधित उष्मा मन को शांति पहुंचाती है। तनाव से मुक्ति मिलती है। यज्ञ मनुष्य के सात्विक जीवन के लिए शुद्ध परिवेश निर्मित करता है।

जिस स्थान पर हवन किया जाता है वहां के लोगों पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हवन मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। यज्ञ मनुष्य को स्वस्थ जीवन प्रदान करता है। जहां पर नित्य हवन होता है वहां पर लोग बीमार कम होते हैं। अग्निहोत्र सनातन धर्म की श्रेष्ठ धामिक विधि है। यज्ञ विज्ञान के मानदंड पर भी खरा उतरता है और इससे होने वाले लाभ पर अभी भी शोध जारी हैं।

प्रदूषित वातावरण में अगर हम लम्बे समय तक रहते हैं तो हमारा शरीर जल्दी थक जाता है। हमारा शरीर बार-बार बीमार पड़ जाता है। कई बार तो शरीर को गभीर बीमारियां घेर लेती है।

महानगरों में प्रदूषण के कारण बीमारियां बढ़ रही है। प्रदूषित वायु और जल के सेवन से मनुष्य बीमार पड़ता है। हवा और पानी के दूषित होने से मनुष्य को 150 प्रकार की बीमारियां होती है। कैंसर एवं कई गंभीर बीमारियों का कारण प्रदूषण भी है।

औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थों से जल और वायु दोनों प्रदूषित हो रहा है। ऐसे में हम छोटे-छोटे प्रयासों से अपने आस-पास के वातावरण को शुद्ध रख सकते हैं। अगर हम सामूहिक स्तर पर सप्ताह में एक बार किसी मंदिर के प्रांगन में या खुले आसमान के नीचे हवन करते हैं तो आस-पास का वातावरण बहुत हद तक प्रदूषण से मुक्त हो जाता है। वैज्ञानिक शोध में यह साबित हो चुके हैं कि हवन से 84 प्रतिशत वायुमंडल में उत्पन्न हानिकारक विषाणु नष्ट हो जाते हैं।

हवन बहुत ही सरल प्रक्रिया है जबकि इसके प्रभाव व्यापक हैं। धार्मिक दृष्टिकोण से देखें तो

अग्निहोत्र के माध्यम से नकारात्मक उर्जा और बुरी आत्माओं के प्रभाव को भी खत्म किया जाता है। जबकि हवन से घर के वास्तु दोष भी दूर हो जाते हैं।

विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में यज्ञ के महत्व को बताया गया है। आयुर्वेद में भी अग्निहोत्र का वर्णन है। अगर वातावरण शुद्ध होगा तो बीमारियां कम होंगी। मूल रूप से देखा जाये तो हवन उपचार एवं वातावरण शुद्धिकरण की एक प्रक्रिया है, जिसका ठोस धार्मिक एवं वैज्ञानिक आधार है।

जिस स्थान पर लगातार हवन होते हैं वहां पर रोगजनक जीवों-परजीवों की वृद्धि रूक जाती है। मनुष्य के शरीर का रक्त शुद्ध हो जाता है। शरीर की ग्रंथियों एवं कोशिकाओं को नयी ऊर्जा मिलती है। यह त्वचा को पुनर्जीवित करता है और रोग संचारित जीवों की वृद्धि को रोकता है।

हवन मानव जीवन के लिए पौष्टिक और औषधीय परिवेश निर्मित करता है। कुल मिलाकर कहा जाये तो मनुष्य हवन के माध्यम से सनातन परम्परा का निर्वाह करते हुए अपने आस-पास का वातावरण शुद्ध कर सकता है।

प्रियंका के आने से कांग्रेस में जोश और उम्मीदें, कभी पार्टी अध्यक्ष बनेंगी?

● ललित वत्स

प्रियंका गांधी वाड्रा कांग्रेस के उन नेताओं में हैं, जिनके लिए चुनावी रैलियों में सबसे ज्यादा डिमांड पार्टी के अंदर रहती है। उनके भाषणों से पार्टी कार्यकताओं का जोश बढ़ जाता है, उम्मीदें भी बढ़ती हैं। अब संसद में प्रियंका गांधी के आगमन से पार्टी कार्यकताओं का जोश और बढ़ गया है। नई उम्मीदें भी मिली हैं। संसद सत्र के दौरान पार्टी की रणनीति की धार भी अब और तेज दिख रही है। वह राहुल गांधी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सरकार के खिलाफ विभिन्न मुद्दों पर विरोध करती दिखी हैं। तीखे निशाने भी सरकार पर साधे हैं।

उतर से दक्षिण तकः गत 4 जून को राहुल गांधी द्वारा यूपी के रायबरेली और केरल के वायनाड से जीत हासिल करने के बाद राहुल को एक सीट छोड़नी थी। राहुल ने फिर से उत्तर प्रदेश में ही रहने को प्राथमिकता दी और वायनाड सीट छोड़ दी। राहुल यूपी से ही सांसद रहकर इस प्रदेश में पार्टी की बिगड़ गई स्थिति को सुधारने की उम्मीद रखते हैं। इसीलिए रायबरेली से ही सांसद रहने को प्राथमिकता दी है। यह सीट भी परिवार की परंपरागत सीट तो है ही। लेकिन पार्टी और गांधी परिवार ने उत्तर के साथ ही दक्षिण भारत के साथ भी जुड़े रहना भी बेहतर समझा है। वायनाड से जुड़े रहना पार्टी को दक्षिण में भी मजबूत बनाने की योजना का हिस्सा है। कांग्रेस फिलहाल दक्षिण भारत के कर्नाटक में ही सत्ता में है और बेहतर स्थिति में है।

प्रियंका की बड़ी जीतः करीब छह महीने पहले हुए लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी ने वायनाड सीट करीब 3 लाख 64 हजार वोट से जीती थी। प्रियंका गांधी की जीत का अंतर करीब सवा चार लाख वोट रहा है। कुछ लोग कह रहे थे कि राहुल द्वारा वायनाड सीट छोड़ देने से वहां के लोगों में नाराजगी हो सकती है और प्रियंका को राहुल जितने बड़े अंतर की जीत नहीं मिलेगी। लेकिन प्रियंका की जीत का अंतर राहुल की जीत के अंतर से ज्यादा रहने से लोगों के चुनाव पूर्व के कयास गलत साबित हुए। उलटे इस जीत ने यह दिखाया है कि प्रियंका कम नहीं हैं और उनके वहां आने से पार्टी को पहले से ज्यादा वोट मिले हैं। महिला वोटरों ने इस बार ज्यादा साथ दिया लगता है।

बड़ी राजनीतिक सूझबूझः प्रियंका सांसद बेशक पहली बार बनी हैं, लेकिन उनके लिए राजनीति नया विषय नहीं है। चार पीढ़ी की पारिवारिक पृष्ठभूमि पहले से थी। उससे आगे वह करीब दो दशक से रायबरेली और अमेठी के लोकसभा चुनावों के दौरान चुनावी भागदौड़ करती रही हैं। वह 2004 में रायबरेली में अपनी माँ सोनिया गांधी की चुनाव प्रबंधक पहली बार बनी थीं। साथ ही अमेठी सीट पर राहुल गांधी के चुनाव प्रचार में भी योगदान देती रही थीं। तब से शुरू वह राजनीतिक क्रम बराबर जारी रहा। 2019 में कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव बनने के बाद वह सीधे तौर पर पार्टी के शीर्ष विचार विमर्श और निर्णयों में बड़ी सहभागी बन गईं। प्रियंका ने पूर्वी यूपी की प्रभारी के तौर पर विधानसभा चुनावों के लिए भी काम किया है, हालांकि, नतीजे उम्मीदों से बहुत पीछे रहे, लेकिन पार्टी कार्यकताओं के बीच उनकी छाप और मांग बढ़ती गई है।

केरल में रणनीतिः केरल को लेकर कांग्रेस की अनेक उम्मीदें हैं। पार्टी का बड़ा बेस इस राज्य में है। वहां सत्ता में भी रही है। लेकिन मई 2016 से सीपीएम नेता पिनयारी विजयन वहां के मुख्यमंत्री हैं। माना जा रहा है कि 2019 में राहुल गांधी के वायनाड की सीट से लोकसभा चुनाव लड़ने की एक बड़ी वजह केरल में पार्टी की स्थिति को मजबूत करते जाना भी था। पर, पिनयारी विजयन अपने लिए और पार्टी के लिए भी 2021 के विधानसभा चुनाव में भी अच्छे नतीजे लाने में सफल हुए थे। राज्य में अब मई, 2026 में विधानसभा चुनाव होने तय हैं। यानी करीब सवा साल का समय बचा है। इस बीच कांग्रेस अगली बार सीपीएम को मात देने की रणनीति पर काम करेगी। प्रियंका गांधी के जीतने से कांग्रेस को उस दिशा में मजबूती मिलने की उम्मीद भी पार्टी में की जा रही है।

राष्ट्रीय भूमिकाः प्रियंका गांधी पार्टी महासचिव के रूप में अखिल भारतीय स्तर पर पहले से ही काम कर रही हैं। लगभग हर राज्य में उनके नाम की पहचान है। आकर्षण भी है। दादी इंदिरा गांधी की तरह दिखती हैं। यह कहकर लोग उनकी तुलना इंदिरा से करते हैं और उम्मीद भी करते हैं कि वह भी इंदिरा गांधी की तरह पार्टी और देश के लिए बड़े काम करेंगी। कम से कम पार्टी कार्यकताओं के बीच तो यह चचाएं रहती ही हैं। फिलहाल नजरें इस पर हैं कि वह लोकसभा के अंदर पीएम नरेंद्र मोदी और बीजेपी का जवाब किन शब्दों और किस अंदाज में लगातार देंगी? कांग्रेस में कुछ लोग यह भी मानते हैं कि केंद्र सरकार में कांग्रेस के सत्ता में आने पर राहुल पीएम बनेंगे और तब प्रियंका पार्टी अध्यक्ष का पद संभाल सकेंगी? हालांकि कुछ लोग मानते हैं कि वह पार्टी का अध्यक्ष पद पहले भी कभी संभाल सकती हैं। पर, यह सब फिलहाल तो दूर की बातें लगती हैं।

दिल्ली चुनाव

त्रिकोणीय लड़ाई या पुरानी तिकड़मों का नया संस्करण?

राशिद हाशमी

दिल्ली की चुनावी लड़ाई को इस बार 'त्रिकोणीय' बताया जा रहा है। हालांकि त्रिकोण की परिभाषा में थोड़ा झोल है क्योंकि इसमें एक कोने पर खड़ा शख़्स बाकी दोनों कोने वालों को इतना छोटा मानता है कि उन्हें मानो त्रिकोण से बाहर ही फेंकने पर तुला है। आम आदमी पार्टी के सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल हर बार की तरह प्रचंड बहुमत का दावा कर रहे हैं और हर चुनावी सभा में ऐसा अंदाज है जैसे 2020 फिर रिपीट होने के कगार पर हो। हालांकि ज़िंदा कौमें 5 साल इंतजार नहीं करतीं और आवाम की जादूगरी अच्छे अच्छों को चौंका देती है।

पिछले कुछ सालों में केजरीवाल की सियासत किसी जादूगर के शो जैसी हो गई है—हर बार नई ट्रिक, नया दावा और एक नया 'सबूत' कि दिल्ली में जो कुछ अच्छा है वो उन्होंने ही किया है। 2013 में उन्होंने कांग्रेस के साथ गलबहियां कर सरकार बनाई, फिर 49 दिनों में इस्तीफा देकर 'त्याग' का पाठ पढ़ाया। फिर 2024 लोकसभा चुनाव में I.N.D.I.A. के नाम पर साथ आए, अब 2025 विधानसभा चुनाव आते आते वही कांग्रेस उनके लिए ऐसी हो गई है, जिसे हर रैली में पानी पी-पीकर कोसा जा रहा है। जनता असमंजस में है कि 'कौन दोस्त, कौन दुश्मन?' शायद खुद केजरीवाल को भी यह सवाल सोचने का वक़्त नहीं मिला।

कांग्रेस की स्थिति इस त्रिकोण में सबसे दिलचस्प है। तीसरे कोने पर खड़े होकर कांग्रेस बस ये देख रही है कि कब दूसरा और तीसरा कोना आपस में टकरा जाए और उन्हें 'बिन मांगी मुराद' का फायदा मिल जाए। चुनाव लड़ें न लड़ें, सीटें मिलें न मिलें उनकी रणनीति बिल्कुल उस पुराने रिटायर्ड चाचा जैसी है, जो ताश के पत्तों की बाजी में कभी जीतने की उम्मीद नहीं रखते पर दूसरों को गच्चा देते रहते हैं।

भारतीय जनता पार्टी को दिल्ली वाले लोकसभा चुनाव में खुश करते हैं, उम्मीदें हिलोरें मारने लगती हैं लेकिन विधानसभा चुनाव आते आते सभी उम्मीदें धराशायी हो जाती हैं। खैर लोकसभा चुनाव में हैट्रिक के बाद हरियाणा और महाराष्ट्र जीत कर बीजेपी का कॉनफि डेंस हाई है। केजरीवाल सरकार पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों के दम पर पार्टी ने कमर कस ली है। वो बात अलग है कि चुनाव से चंद दिनों पहले केजरीवाल ने कुर्सी छोड़ कर 'त्याग कार्ड' खेला है। हालांकि चुनावी कार्ड एक ऐसी काठ की हांडी है जो बार बार नहीं चढ़ा करती।

सवाल बड़ा है कि क्या दिल्ली का वोटर इस बार भी अपने किराए के बढ़ते मकान और दफ्तर के रास्ते के जाम को भूलकर नेताओं की लच्छेदार बातों में फंस जाएगा। मोहल्ला क्लीनिक से लेकर सीलमपुर में मेट्रो का विस्तार और बिजली के वादों की रेवड़ियां ऐसे परोसी जाएंगी जैसे दिल्ली को एकदम 'पेरिस' में बदलने की तैयारी है। लेकिन याद रहे दिल्ली ने प्याज के नाम पर सरकार गिराई है, भ्रष्टाचार के नाम पर कांग्रेस को हाशिए पर ला खड़ा किया है और इस बार कसौटी पर तौली जाएगी आम आदमी पार्टी। दिल्ली के चुनाव वास्तव में त्रिकोणीय हैं— नेताओं के दावों का एक कोना, जनता की हकीकत का दूसरा और भ्रमित वोटरों का तीसरा। पर इस त्रिकोण का चक्रव्यूह तो ऐसा है कि बाहर आने के बाद भी हर कोई सवाल पूछता है—'ये चुनाव थे या बड़ा मजाक?'

(लेखक टीवी एंकर और शारदा यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर हैं)

'विद्यार्थियों हेतु भारत का संविधान'

युवाओं के लिए संविधान की सरल व्याख्या

● **महेश चन्द्रा**

26 नवंबर 2024 को संविधान दिवस के अवसर पर प्रसिद्ध लेखक और राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष किशोर मकवाणा की पुस्तक 'विद्यार्थियों हेतु भारत का संविधान' का लोकार्पण किया गया। नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में आयोजित इस कार्यक्रम में केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और संसदीय कार्य राज्यमंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने पुस्तक का विमोचन किया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति हेमंत गुप्ता भी उपस्थित रहे।

यह पुस्तक विशेष रूप से विद्यार्थियों और युवाओं को ध्यान में रखते हुए लिखी गई है, ताकि वे भारतीय संविधान को सरल और सुलभ भाषा में समझ सकें। भारतीय संविधान, जो हमारे लोकतंत्र की आधारशिला है, को समझने और उसके महत्व

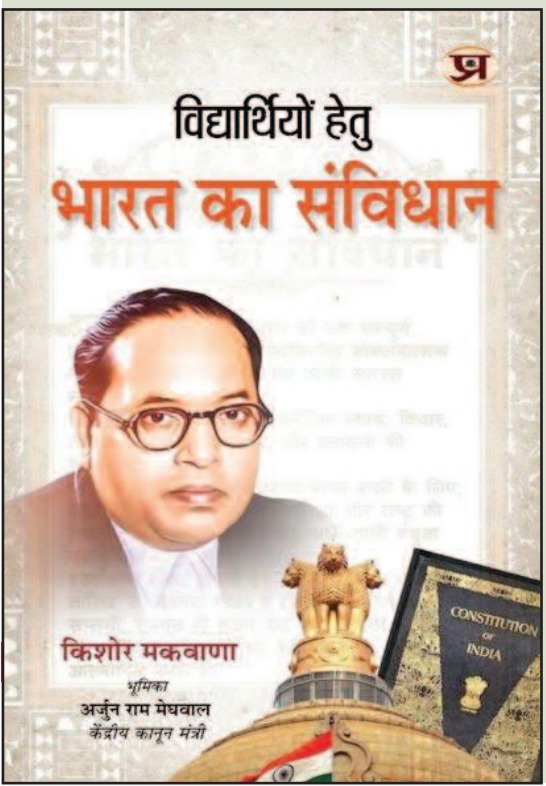

संविधान दिवस और इसकी पृष्ठभूमि

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2015 में 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की। यह दिन उस ऐतिहासिक घटना की याद दिलाता है जब 1949 में भारतीय संविधान सभा ने संविधान को अंगीकार किया था। प्रधानमंत्री मोदी ने संविधान दिवस को मनाने का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा था कि यह प्रत्येक भारतीय के लिए संविधान की भावना को समझने और सम्मान करने का अवसर है। खासतौर पर युवाओं और बच्चों को संविधान के महत्व और उसके मूल्यों के प्रति जागरूक करना आवश्यक है।

पुस्तक का संरचनात्मक परिचय

यह पुस्तक भारतीय संविधान का परिचय देते हुए बताती है कि यह देश के लिए नियमों की एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। पुस्तक यह भी समझाती है कि संविधान क्यों बना और यह लोकतंत्र के लिए क्यों आवश्यक है। पुस्तक में संविधान के निर्माण की ऐतिहासिक यात्रा, संविधान सभा की बहसों, और इसे तैयार करने में डॉ. भीमराव अंबेडकर की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के प्रत्येक अध्याय को इस तरह से तैयार किया गया है कि वह छात्रों की जिज्ञासा को बढ़ाए और उन्हें सोचने पर मजबूर करे। इसमें मौलिक अधिकारों और कर्तव्यों को व्यापक रूप से शामिल किया गया है। साथ ही, संविधान में वर्णित संघीय ढांचे, संसद, न्यायपालिका और कार्यपालिका की भूमिका पर भी गहराई से चर्चा की गई है।

को आत्मसात करने का यह प्रयास सराहनीय है।

पुस्तक का उद्देश्य और विशेषताएँ

'विद्यार्थियों हेतु भारत का संविधान' पुस्तक का मुख्य उद्देश्य भारतीय संविधान को विद्यार्थियों और युवाओं के लिए सरल, सुलभ और रोचक बनाना है। पुस्तक में संविधान की जटिल अवधारणाओं को ऐसी भाषा में प्रस्तुत किया गया है, जो हर आयु वर्ग के पाठकों के लिए आसानी से समझने योग्य हो। इसके अलावा, मूल संविधान की प्रतिलिपियों और चित्रों का भी समावेश किया गया है, जो इसे और भी रोचक बनाते हैं।

केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने पुस्तक के लोकार्पण के दौरान कहा, 'यह पुस्तक हर उस विद्यार्थी और नागरिक के लिए है, जो संविधान के महत्व को समझना चाहता है। संविधान केवल एक दस्तावेज नहीं, बल्कि हमारे लोकतंत्र की आत्मा है।

पुस्तक संविधान के महत्व, उसकी संरचना और उसके प्रावधानों को गहराई से समझाती है। यह पाठकों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती है और उन्हें लोकतंत्र, समानता और न्याय जैसे मूलभूत सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्ध बनने के लिए प्रेरित करती है।

संविधान को सरलता से समझने का प्रयास

पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरलता है। इसमें भारतीय संविधान के मूल सिद्धांतों और विभिन्न अनुच्छेदों को आसानी से समझाया गया है। लेखक ने ध्यान रखा है कि छात्रों को कठिन कानूनी भाषा से बचाकर इसे उनके स्तर के अनुकूल बनाया जाए। इसमें नागरिकों के मौलिक अधिकार, कर्तव्य और संविधान में वर्णित राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों को सहज और प्रासंगिक उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया गया है।

किशोर मकवाणा ने पुस्तक की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा, ह्लसंविधान लोकतंत्र की आत्मा है और इसे समझना हर भारतीय का दायित्व है। यह पुस्तक युवाओं और छात्रों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करेगी और लोकतंत्र में आस्था को मजबूत बनाएगी।'

विद्यार्थियों के लिए संविधान की उपयोगिता

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में संविधान नागरिकों को एकता के सूत्र में पिरोता है। लोकतंत्र की सफलता नागरिकों की संविधान के प्रति समझ और उसके पालन पर निर्भर करती है। विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए संविधान का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संविधान को समझने से विद्यार्थी न केवल अपने अधिकारों और कर्तव्यों को जान सकते हैं, बल्कि यह भी समझ सकते हैं कि देश में कानून व्यवस्था कैसे काम करती है। यह पुस्तक उन्हें यह जानने में मदद करेगी कि सरकार कैसे काम करती है, संसद की भूमिका क्या है, और न्यायपालिका की कार्यप्रणाली कैसी है।

राष्ट्र निर्माण में योगदान का संदेश

यह पुस्तक न केवल संविधान का अध्ययन करने का एक माध्यम है, बल्कि यह भी प्रेरित करती है कि हम संविधान के मूल्यों को अपने जीवन में अपनाएं। यह संदेश देती है कि राष्ट्र निर्माण में सकारात्मक योगदान करने के लिए संविधान का पालन करना अत्यंत आवश्यक है।

पुस्तक का प्रकाशन प्रभात प्रकाशन द्वारा किया गया है। इसकी भूमिका केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने स्वयं लिखी है। पुस्तक में यह स्पष्ट किया गया है कि संविधान को समझकर नागरिक अपने अधिकारों और कर्तव्यों का पालन करते हुए एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं।

'विद्यार्थियों हेतु भारत का संविधान' एक ऐसी पुस्तक है, जो भारतीय संविधान को सरल और रोचक तरीके से प्रस्तुत करती है। यह विशेष रूप से उन छात्रों और युवाओं के लिए उपयोगी है, जो संविधान को समझने और उसके महत्व को आत्मसात करना चाहते हैं।

भारतीय संविधान केवल एक दस्तावेज नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक है, जो देश के विकास और सामाजिक न्याय की ओर ले जाता है। यह पुस्तक न केवल युवाओं को संविधान का ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित भी करती है। राष्ट्र निर्माण के लिए संविधान को समझना, अपनाना और उसके अनुरूप आचरण करना हर नागरिक का कर्तव्य है।

यह पुस्तक संविधान के अध्ययन को एक नई दिशा देती है और विद्यार्थियों में इसके प्रति जागरूकता पैदा करने का सशक्त माध्यम बनती है। इसे प्रत्येक भारतीय को पढ़ना चाहिए और इससे प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में योगदान देना चाहिए।

मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर के लिए सर्कुलर इकनॉमी की जरूरत

● **पद्मा जायसवाल**
सचिव पुदुचेरी सरकार

सर्कुलर अर्थव्यवस्था की अवधारणा भारत के विनिर्माण क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण शर्त के रूप में उभर रही है। यह बदलाव भारत के विनिर्माण क्षेत्र के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो देश की जीडीपी और रोजगार का एक बड़ा योगदानकर्ता है, लेकिन साथ ही कचरे और पर्यावरणीय क्षरण का भी एक प्रमुख स्रोत है। भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया', प्रोडक्शन-लिंक्ड इंसेंटिव (ढछक) योजना, नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन (ठक्ढ), डिजिटल इंडिया पहल, राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स नीति (ठढए) और आत्मनिर्भर भारत (स्वदेशी भारत) जैसी पहलें विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में एक प्रमुख भूमिका निभाने के लिए प्रतिबिंबित करती हैं। इन पहलों के जरिए भारत नवाचार, कौशल उन्नयन, और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करते हुए, खुद को एक प्रमुख विनिर्माण निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित कर रहा है।

इन प्रयासों का उद्देश्य न केवल घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना है बल्कि चिप्स और सेमीकंडक्टर के निर्माण में भी भारत ने बड़ा कदम उठाया है ताकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, क्वांटम कंप्यूटिंग और डेटा विज्ञान के नए युग के साथ तालमेल बनाए रखा जा सके।

सर्कुलर अर्थव्यवस्था को अपनाना स्थिरता के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो घटते प्राकृतिक संसाधनों और बढ़ती पर्यावरणीय चिंताओं के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। पारंपरिक रैखिक अर्थव्यवस्था मॉडल, जो 'लेना-निर्माण करना-फेंकना' के दृष्टिकोण का पालन करता है, के विपरीत, सर्कुलर अर्थव्यवस्था संसाधनों के निरंतर उपयोग पर जोर देती है, जैसे कि पुनर्चक्रण, पुनः उपयोग और सामग्री का नवीनीकरण। यह दृष्टिकोण नौकरियों का सृजन करता है, प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाता है, और सतत आर्थिक विकास में योगदान देता है।

चिप्स और सेमीकंडक्टर का निर्माण आधुनिक तकनीक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, दूरसंचार और स्वास्थ्य देखभाल जैसे विभिन्न उद्योगों के लिए बढ़ती हुई आवश्यकता बन गया है। सेमीकंडक्टर निर्माण से संबंधित कचरे की मात्रा को कम करने के लिए सर्कुलर अर्थव्यवस्था की प्रथाएं संसाधन दक्षता में सुधार पर जोर देती हैं, जिससे पर्यावरणीय प्रभाव को कम किया जा सके।

भारत का विनिर्माण क्षेत्र कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जैसे कि संसाधनों की कमी, बढ़ता हुआ कचरा उत्पादन, और पर्यावरणीय नियमों की सख्ती। सर्कुलर अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों को अपनाकर, निमार्ता कचरे को कम कर सकते हैं और कच्चे माल पर अपनी निर्भरता घटा सकते हैं, जिससे उत्पादन लागत कम होती है और संसाधनों का उपयोग अधिक प्रभावी ढंग से होता है। उदाहरण के लिए, पुनर्चक्रण प्रक्रियाओं को लागू करके, निमार्ता कचरे से मूल्यवान सामग्री पुनः प्राप्त कर सकते हैं, जिन्हें फिर से उत्पादन चक्र में शामिल किया जा सकता है। इससे कच्चे माल की मांग घटेगी और ऊर्जा खपत और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी आएगी।

सर्कुलर अर्थव्यवस्था को अपनाने से विनिर्माण क्षेत्र में नवाचार को भी बढ़ावा मिल सकता है। कंपनियां नए व्यावसायिक मॉडल जैसे कि 'उत्पाद-सेवा के रूप में' को अपना सकती हैं, जहां निमार्ता अपने उत्पादों का स्वामित्व बनाए रखते हैं और उन्हें सेवा के रूप में पेश करते हैं। यह दृष्टिकोण उत्पादों की टिकाऊ डिजाइन और पुनर्चक्रण को बढ़ावा देता है, जिससे उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार और जीवनचक्र की लागत में कमी आती है। इसके अलावा, सर्कुलर अर्थव्यवस्था की प्रथाएं आपूर्ति श्रृंखला की लचीलापन बढ़ाने में मदद कर सकती हैं, जिससे सामग्री के स्रोतों में विविधता आती है और अस्थिर वस्तु बाजारों पर निर्भरता घटती है।

भारत सरकार ने सर्कुलर अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव के महत्व को समझा है और इस बदलाव को समर्थन देने के लिए कई नीतियां और ढांचे लागू किए हैं। जैसे कि राष्ट्रीय सर्कुलर अर्थव्यवस्था नीति, जो निमार्ताओं के बीच सतत प्रथाओं को बढ़ावा देती है और हरे रंग की प्रौद्योगिकियों में निवेश को प्रोत्साहित करती है। सार्वजनिक-निजी भागीदारी इस बदलाव को तेजी से अपनाने के लिए ज्ञान और संसाधनों को साझा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

संक्षेप में, सर्कुलर अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण सिर्फ एक प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि भारत के विनिर्माण क्षेत्र के सतत विकास के लिए एक आवश्यक शर्त है। सर्कुलर सिद्धांतों को अपनाकर, निमार्ता आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं, प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत कर सकते हैं, और पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान कर सकते हैं। यह बदलाव न केवल विनिर्माण क्षेत्र की तत्काल चुनौतियों का समाधान करता है, बल्कि भारत को स्थायी विनिर्माण में एक वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करता है।

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे से उत्तराखण्ड के निवेश में तेजी

महेश चन्द्रा 'ढौंडियाल'

दिल्ली-एनसीआर के लोग अब उत्तराखंड के देहरादून, ऋषिकेश, मसूरी, और हरिद्वार जैसे इलाकों में जमीन खरीदने में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। यह क्षेत्र न केवल अपनी प्राकृतिक खूबसूरती और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे जैसे बुनियादी ढांचे के विकास ने भी निवेशकों का ध्यान आकर्षित किया है। इस हाईवे के पूरा होने से दिल्ली और देहरादून के बीच यात्रा का समय कम होगा, जिससे इन इलाकों में पर्यटन और रियल एस्टेट में काफी वृद्धि होने की संभावना है।

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे के शुरू होने के बाद मसूरी जैसे प्रमुख पर्यटन स्थलों पर यात्रियों की संख्या में वृद्धि की उम्मीद है। इसका सीधा लाभ इन क्षेत्रों की स्थानीय अर्थव्यवस्था और रियल एस्टेट सेक्टर को होगा। लोग अब इन इलाकों में अपनी दूसरी संपत्ति के रूप में घर या फार्महाउस खरीदने के लिए उत्सुक हैं। यह एक्सप्रेस-वे न केवल यात्रा को सुविधाजनक बनाएगा, बल्कि निवेश के दृष्टिकोण से भी यह एक लाभकारी कदम साबित होगा।

आशारोड़ी से गणेशपुर तक का एलिवेटेड रोड लगभग पूरा हो चुका है और इसका ट्रायल भी सफल रहा है। इसे आधिकारिक रूप से दिसंबर 2024 में आम जनता के लिए खोलने की योजना है। इस नए मार्ग के शुरू होने से देहरादून और दिल्ली के बीच का सफर बेहद आसान और तेज हो जाएगा, जो पर्यटकों और निवेशकों के लिए एक सकारात्मक बदलाव लाएगा।

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे से यात्रियों को एक घंटे की समय की बचत होगी। पहले आशारोड़ी से गणेशपुर का सफर जो एक घंटे में तय होता था, अब केवल 15 मिनट में पूरा होगा। साथ ही, अक्षरधाम से बागपत तक का 32 किलोमीटर का सफर भी अब आधे समय में पूरा किया जा सकेगा। इससे देहरादून और दिल्ली के बीच यात्रा में न केवल समय की बचत होगी, बल्कि सड़क पर भीड़ भी कम होगी, जिससे यात्रा का अनुभव और भी सुगम बनेगा।

210 किलोमीटर लंबे इस ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस-वे में यात्रियों की सुविधा के लिए कई विशेषताएं जोड़ी गई हैं। 29 किलोमीटर लंबा एलिवेटेड रोड, 110 वाहन अंडरपास, 76 किलोमीटर का सर्विस रोड, और 16 एंट्री-एग्जिट प्वाइंट्स के साथ इस एक्सप्रेस-वे को आधुनिक मानकों के अनुसार तैयार किया गया है। पुराने मार्ग को बंद कर वन विभाग को सौंपने की योजना है, जिससे इस क्षेत्र में हरियाली बढ़ाई जा सकेगी और पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा।

निवेश का सुनहरा अवसर

दिल्ली-एनसीआर के निवासियों के लिए उत्तराखंड के प्रमुख पर्यटन स्थलों में जमीन में निवेश करना इस समय एक अच्छा विकल्प साबित हो सकता है। एक्सप्रेस-वे के चलते यात्रा सुगम हो जाने से इन इलाकों में प्रॉपर्टी की कीमतों में वृद्धि की संभावना भी बढ़ गई है। इस क्षेत्र की बढ़ती लोकप्रियता और बुनियादी ढांचे में सुधार इसे निवेशकों के लिए एक आकर्षक विकल्प बना रहे हैं।

इस एक्सप्रेस-वे से न केवल यात्रा सुविधाजनक होगी, बल्कि पुराने मार्ग को वन क्षेत्र के रूप में तब्दील कर इसे राजाजी टाइगर रिजर्व और शिवालिक के जंगलों से जोड़ दिया जाएगा। इससे न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि क्षेत्र में वन्यजीवों का संरक्षण भी संभव होगा।

संजीव वार्ष्णेय ने कहा कि दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे परियोजना उत्तराखंड और दिल्ली के बीच परिवहन में एक नई क्रांति लाएगी। इसके माध्यम से उत्तराखंड के पर्यटन स्थलों का आकर्षण बढ़ेगा, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था और रियल एस्टेट को भी बढ़ावा मिलेगा। उत्तराखंड के शांत और सुंदर इलाकों में अपना घर बनाना अब पहले से ज्यादा आसान हो गया है, जो निवेशकों और रियल एस्टेट बाजार के लिए एक बेहतरीन अवसर है।

विश्व का पहला पर्यावरण मंत्रालय भारत में 1972 में बना

भोपाल गैस त्रासदी के बाद बना पर्यावरण संरक्षण कानून

युवराज वत्स

भारत में पर्यावरण संरक्षण का इतिहास बहुत पुराना है। हड़प्पा सभ्यता का काल पर्यावरण से ओत-प्रोत था। वैदिक संस्कृति भी पर्यावरण-संरक्षण का पर्याय बनी थी। भारतीय मनीषियों ने समूची प्रकृति और प्राकृतिक शक्तियों को देवता स्वरूप माना था। ऊर्जा के स्त्रोत सूर्य को देवता माना, जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण जल को भी देवता माना गया। नदियों को जीवनदायिनी कहा गया। इसीलिए प्राचीन सभ्यताएं नदियों और अन्य बड़े जलस्त्रोतों के किनारे उपजीं और पनपी।

मध्यकालीन एवं मुगलकालीन भारत में भी पर्यावरण प्रेम बना रहा। अंग्रेजों ने भारत में अपने आर्थिक लाभ के कारण पर्यावरण को नष्ट करने का कार्य प्रारंभ किया। विनाशकारी दोहन नीति के कारण असंतुलन भारतीय पर्यावरण में ब्रिटिश काल में ही दिखने लगा था। स्वतंत्र भारत के लोगों में पश्चिमी प्रभाव, औद्योगीकरण तथा जनसंख्या विस्फोट के परिणामस्वरूप तृष्णा जाग गई, जिसने देश में विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों को जन्म दिया। भारतीय संविधान बनने के बाद भी 1972 तक पर्यावरण संरक्षण के लिए कोई विशेष पहल नहीं की गई थी। बता दे कि 1972 तक विश्व के किसी भी देश में पर्यावरण मंत्रालय नहीं था।

न्यायपालिका का अहम रोलः

पर्यावरण संरक्षण में न्यायपालिका ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके प्रयासों से स्वच्छ पर्यावरण मौलिक अधिकार का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है। दिल्ली में प्रदूषित इकाइयों को बंद करना और उनका स्थांनातरण करना, सी.एन.जी का प्रयोग, ताजमहल को प्रदूषण से बचाना, पर्यावरण को शैक्षणिक पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाना तथा संचार माध्यमों के द्वारा पर्यावरण के महत्त्व का प्रचार-प्रसार कराना। यह सब न्यायपालिका के आदेशों के बाद ही हुआ है। जनहित याचिकाओं ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में गैर-सरकारी संगठनों, नागरिक समाज तथा आम आदमी की भागीदारी केा प्रोत्साहित किया है। यही वजह है कि आज सरकार तथा नीति निमार्ताओं की सूची में पर्यावरण प्रथम मुद्दा है तथा वे पर्यावरण संरक्षण के प्रति गंभीर हो गए हैंक

3682 बाघ हैं भारत मेंः

वन्यजीवों के संरक्षण का मामला एक वैश्विक चुनौती है। इसके रहते 'प्रोजेक्ट टाइगर' के जरिए भारत ने न केवल बाघों की आबादी को घटने से बचाया है, बल्कि बाघों को फलने-फूलने के लिए एक बेहतरीन इकोसिस्टम भी प्रदान किया है। आज भारत में 3682 से अधिक टाइगर हैं और भारत दुनिया का सबसे बड़ा टाइगर रेंज वाला देश है। लगभग तीस हजार हाथियों के साथ यह दुनिया का सबसे बड़ा एशियाई एलीफैंट रेंज वाला देश है। एक-सींग वाले गैंडों की सबसे बड़ी आबादी वाला देश भी भारत ही है। सरकार के निरंतर प्रयास से आज देश में पर्यावरण संरक्षण के लिए बनीं 'रामसर साइटों' की कुल संख्या 75 हो गई है। प्रोजेक्ट चीता के तहत भारत में विलुप्त हुए चीते को अफ्रीका से लाकर रखा गया है कइससे भारत में फिर से बिग कैट फैमिली की 5 प्रजातियाँ (बाघ,शेर,तेंदुआ, हिम तेंदुआ और चीता) मौजूद हो गई हैं।

भारत का वन क्षेत्रः

नवीनतम 17वीं 'भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021' के अनुसार देश का कुल वन और वृक्ष आवरण 80.9 मिलियन हेक्टेयर है। वन क्षेत्र में 2019 की तुलना में सर्वाधिक वृद्धि दशार्ने वाले शीर्ष तीन राज्य आंध्र प्रदेश (647 वर्ग किमी.), तेलंगाना (632 वर्ग किमी.) तथा ओडिशा (537 वर्ग किमी.) हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से सर्वाधिक वन क्षेत्र वाला राज्य मध्य प्रदेश है। इसके बाद क्रमशः अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा तथा महाराष्ट्र हैं। बता दें कि पहली 'भारत वन स्थिति रिपोर्ट' 1987 में प्रकाशित हुई थी और यह एक द्विवार्षिक रिपोर्ट है।

शेर से लेकर मगरमछ तक :

1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन ने भारत सरकार का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की ओर खींचा। 1972 में भारतीय वन्यजीवन संरक्षण अधिनियम पारित किया गया। उस समय जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के समाप्त होने का बड़ा खतरा था। वन्यजीवों का अवैध व्यपार हो रहा था। तब भारत 1976 में वन्यजीवों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधी समझौते का सदस्य बना। भारत में शेर के संरक्षण के लिए 1972 में, बाघ के लिए 1973 में , मगरमच्छ के लिए 1984 में संरक्षण परियोजनाएँ चलाई गईं। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने 1976 में संविधान में भी संशोधन कर दो महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद 48 ए तथा 51 ए (जी) जोड़े। पर्यावरण पर स्टॉकहोम घोषणा (1972) के एक हस्ताक्षरकर्ता के रूप में भारत ने जल प्रदूषण (1974) और वायु प्रदूषण (1981) को नियंत्रित करने के लिये शीघ्र ही कानून बनाए। लेकिन वर्ष 1984 में हुए भोपाल गैस ट्रेजेडी के बाद ही देश ने वर्ष 1986 में पर्यावरण संरक्षण के लिये एक समग्र अधिनियम बनाया गया। यह अधिनियम पर्यावरण के समस्त विषयों को ध्यान में रखकर बनाया गया। अधिनियम का मुख्य उद्देश्य वातावरण में घातक रसायनों की अधिकता को नियंत्रित करना व पारिस्थितिकी तंत्र को प्रदूषण मुक्त रखने के प्रयत्न करना है।

कैसे बढ़ें आगेः

विशेषज्ञों का मानना है कि सतत विकास को प्राथमिकता देने वाले समग्र दृष्टिकोण को अपनाकर भारत और विश्व अपनी प्राकृतिक विरासत की रक्षा कर सकते हैं। वन्यजीवों और पर्यावरण को सुरक्षित भविष्य देकर भी आर्थिक समृद्धि प्राप्त की जा सकती है। पर्यावरण और विकास के बीच के टकराव को रोकना बहुत जरूरी है। इसके लिए व्यापक दृष्टिकोण और बेहतर नीतियां जरूरी हैं। उतना ही जरूरी है उनका क्रियान्वयन।

हवा स्वच्छ रखने में नागरिकों की भूमिका

● विजय गर्ग

सर्दी शुरू होते ही उत्तर भारत में एक बड़े हिस्से में स्वच्छ हवा लोगों की पहुंच से दूर होने लगती है। इस वैरान वायु प्रदूषण की समस्या गंभीर रूप धारण कर लेती है। इस वायु प्रदूषण से निपटने के लिए सरकारी एजेंसियों, उद्योगों और नागरिकों की तरफ से सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

वर्ष 2017 से भारत सरकार ने दिल्ली-एनसीआर के लिए ग्रेडेड एक्शन रिस्पांस प्लान (ग्रेप) राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम और 15वें वित्त आयोग के 'मिलियन प्लस चैलेंज फंड' के तहत धन आवंटन जैसे कदमों के माध्यम से वायु गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दर्शाई है। हालांकि वायु गुणवत्ता में कुछ सुधार होने के बावजूद अभी भी कई शहर राष्ट्रीय परिवेशीय वायु गुणवत्ता मानकों की पार कर जा रहे हैं। सर्दियों के वैरान बारिश कम होने, हवा की गति धीमी होने और मिक्सिंग हाइट (यानी सतह से ऊपर की वह ऊंचाई जहाँ तक प्रदूषण तत्वों का फैलाव हो सकता है) घटने से प्रदूषण तत्वों के फंसने जैसी उत्तर भारत की मौसमी परिस्थितियों के कारण वायु प्रदूषण का बिखराव मुश्किल हो जाता है। इससे हवा में पार्टिकुलेट यानी अतिसूक्ष्म कणों का घनत्व बढ़ जाता है, जिससे एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) अधिक हो जाता है। इसलिए एकमात्र समाधन है कि सर्दियों के दौरान विभिन्न उत्सर्जनों में व्यापक कटौती की जाए।

जनभागीदारी

भारत में वायु गुणवत्ता सुधरों के माध्यम से जोर देने के लिए धन उपलब्धता और राजनीतिक

सामूहिक व्यवहार में बदलाव

वायु गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए नागरिकों को अपने सामूहिक व्यवहार में ढांचागत बदलाव लाने चाहिए। इन बदलावों में यह शामिल है कि हम कैसे यात्रा करते है। इससे वाहनों से होने वाला उत्सर्जन प्रभावित होता है कैसे हम कचरे का प्रबंधन करते हैं याने कचरा जलाते हैं या उसका विज्ञानिक विधि से निस्तारण करते हैं और कैसे खाना पकाते हैं या स्वयं को गर्म रखते हैं जिसके लिए हम अक्सर जैव ईंधन जलाते हैं, जिससे उत्सर्जन बढ़ता है। दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में कमीशन फार एयर क्वालिटी मैनेजमेंट (सीएक्यूएम) ने नागरिकों के लिए वायु प्रदूषण के दौरान उठाए जाने वाले कदमों की एक सूचं दी है। ये कदम वायु प्रदूषण की गंभीरता के आधार पर अलग-अलग होते हैं। उदाहरण के लिए, ग्रेप स्टेज 1 लागू होने के दौरान जब एक्यूआई खराब श्रेणी और 201-300 के बीच रहता है, नागरिकों से वाहनों की प्रदूषण जांच कराते हुए उन्हें अच्छी स्थिति में रखने जैसे उपाय करने का अनुरोध किया जाता है जब वायु गुणवत्ता ज्यादा बिगड़ जाती है और ग्रेप स्टेज 3 लागू होता है, तब सरकार नागरिकों को घर से काम करने का विकल्प चुनने की सलाह देती है। इन उपायों की सफलता में नागरिकों की और से इनका अनुपालन महत्वपूर्ण है।

गतिशीलता दोनों ही मामलों में सीमित संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धी मांग हमेश मौजूद रहेगी। हालांकि जागरूक और मुखर नागरिक अपने परिवार, समुदायें और इंटरनेट मीडिया पर इसके बारे में जागरूकता बढ़ाते हुए इसके महत्व में बढ़ोतरी कर सकते हैं। यदि आस-पड़ोस में प्रदूषण स्त्रोतों से जुड़ी शिकायतों की संख्या काफी बढ़ जाती है, तो यह सजग नागरिकों की एक महत्वपूर्ण चिंता का संकेत होगा, जो संभावित रूप से राजनीतिक प्राथमिकताओं को प्रभावित कर सकता है। स्वच्छ भारत मिशन इसका एक प्रमुख उदाहरण है कि कैसे किसी पहल को जन आंदोलन में बदलकर सफल बनाया जा सकता है।

जवाबदेही

स्वच्छ हवा जितना एक मौलिक अधिकार है, उतना ही एक साझी जिम्मेदारी है। नागरिकों को वायु प्रदूषण के बारे में गंभीरता से विचार करन चाहिए और इसे दूर करने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। भारत की तेजी से बिगड़ती वायु गुणवत्ता की समस्या को दूर करने के लिए नागरिकों की न केवल अधिकारियों की जवाबदेही तय करनी चाहिए, बल्कि इसे बेहतर बनाने वाले सामुदायिक प्रयासों में सक्रिय भागीदारी दिखानी चाहिए। तभी हम प्रदूषण मुक्त सर्दियों का आनंद दोबारा हासिल सकते हैं, जो अभी प्रदूषण के साथ आती है।

प्रदूषण के स्थानीय स्रोतों की जानकारी

लोगें की प्रदूषण के स्थानीय स्रोतों की जानकारी देते हुए वायु गुणवत्ता प्रशासन में सक्रिय सहयोग करने की नागरिक जिम्मेदारी निभानी चाहिए। नागरिक अपने साधारण मोबाइल फोन से नागरिक शिकायत निवारण एप के माध्यम से टूटी सड़कों, कूड़ा-कचरा जलाने और प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों जैसे प्रदूषण के स्थानीय स्त्रोतों की जानकारी दे सकते हैं। देश के लगभग 130 शहरों में सिटी एक्शन प्लान के तहत इस उद्देश्य से आनलाइन प्लेटफार्म उपलब्ध कराए गए हैं, जिसके माध्यम से नागरिक वायु प्रदूषण से जुड़ी शिकायतें दर्ज करा सकते हैं। उदाहरण के लिए, दिल्ली में में समीर, ग्रीन दिल्ली और एमसीडी 311 जैसे कई मोबाइल एप्लीकेशंस हैं, जी इन शिकायतों को देखते हैं। पिछले साल काउंसिल आन एनर्जी, एनवायरनमेंट एंड वाटर (सीईईडब्ल्यू) ने पर्यावरण विभाग (जीएनसीटीडी) के साथ मिलकर प्रदूषण के स्थानीय स्त्रोतों की सूची बनाने और प्राथमिकता निर्धारण की एक पद्धति तैयार की थी। यह उपाय अन्य राज्यों में भी इस्तेमाल किया गया है। इस पद्धति का आधार शहर के सजग नागरिकों की और से सार्वजनिक शिकायत निवारण एप पर दर्ज कराई जाने वाली शिकायतें हैं। इस तरह के एप के बारे में जागरूकता और इनका उपयोग बढ़ाना जरूरी है, क्योंकि अभी इनका उपयोग बहुत ही सीमित है।

5500 मंदिरों की 'कहानी'
संस्कृति मंत्री गजेंद्र शेखावत ने किया विमोचन

● उर्मिला पंडिता

केंद्रीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने 5500 से भी अधिक मंदिरों पर लिखी गई पुस्तक का विमोचन किया। समाजसेवी राजीव अग्रवाल द्वारा लिखी पुस्तक ह्वटेंपल्स टूरह्व के विमोचन समारोह में पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, मुख्तार अब्बास नकवी और भानु प्रताप सिंह वर्मा विशिष्ट अतिथि थे। सांसद कृष्णा पटेल और अन्य कई सांसदों के अलावा पूर्व सांसद विवेक नारायण शेजवलकर भी विशिष्ट अतिथि थे। विमोचन समारोह लोदी रोड क्षेत्र के श्री सत्य साई सभागार में हुआ।

शेखावत ने कहा कि भारत में मंदिरों की समृद्ध विरासत है और राजीव इस बड़े प्रयास के लिए बधाई के पात्र हैं। इस चार खंडों में प्रकाशित ग्रंथ जैसी पुस्तक से लोगों को बड़ी प्रेरणा मिलेगी। यह पर्यटकों के लिए भी लाभकारी साबित होगी। नकवी ने भी राजीव को बधाई देते हुए सराहना की। हर्षवर्धन ने कहा कि राजीव अग्रवाल को अब विश्व भर में फैले मंदिरों पर भी पुस्तक लिखनी चाहिए। करीब 10 हजार मंदिरों में से छांटकर 5500 से अधिक मंदिरों का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। यह मंदिर देश के 28 राज्यों और आठ केंद्र शासित प्रदेशों में हैं। 1600 पेज की पुस्तक को राजकमल प्रकाशन समूह ने प्रकाशित किया है। पुस्तक में 3700 मंदिरों की तस्वीरें भी हैं। राजीव ने कहा कि उन्होंने अप्रैल, 2020 के कोविड काल में यह पुस्तक लिखनी शुरू की थी और अब आकर सारा काम पूरा हुआ है।

मोदी सरकार में शिक्षा के दस साल

सुधीर कुमार

आजादी के बाद देश में हर क्षेत्र में उत्तरोत्तर विकास हुआ है। इसी क्रम में शिक्षा में भी हम लोगों ने काफी विकास किया है। बहुत सारे स्कूल, कॉलेज, तकनीकी संस्थान, अनुसंधान केंद्र आदि स्थापित किए गए हैं। लाल किला के प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अनुसंधानकर्ता को हर संभव सुविधा मुहैया कराने का आश्वासन देने की घोषणा किए हैं। नई शिक्षा नीति 2020 इन्हीं चीजों को ध्यान में रखकर लागू किया गया है। सरकार नई तकनीक और उच्च कोटि के अनुसंधान को मदद के लिए कटिबद्ध है।

आजादी के बाद शिक्षा में विकास हेतु मजबूत नीव को ध्यान में रखकर नवंबर, 1948 में डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया गया। डॉ राधाकृष्णन जो बाद में देश के राष्ट्रपति बने और जिनके जन्मदिन को हम लोग शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं। आज जो शिक्षा का मॉडल हम देश में देख रहे हैं, उसमें डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन का महती योगदान है। राधाकृष्णन कमेटी ने कई सारे सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा के तीन उद्देश्य होने चाहिए सामान्य शिक्षा, संस्कारी शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा। उसमें भी सामान्य शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। उन्होंने विश्वविद्यालयों में परीक्षा के दिनों के अतिरिक्त 180 दिनों की पढ़ाई पर बल दिया। वर्ष 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन किया गया।

इसी प्रकार मौलाना अबुल कलाम आजाद की सलाह पर माध्यमिक शिक्षा के पुनर्गठन की योजना बनाई गई। इसमें बेहतरी के लिए 1952 में डॉक्टर लक्ष्मण स्वामी मुदलियार की अध्यक्षता में एक नए आयोग का गठन किया गया। इसी क्रम में आईआईटी आईआईएम और एम्स जैसे संस्थान संसद द्वारा बनाए विशेष अधिनियम के तहत स्थापित किए गए। इसके बाद एक बार फिर वर्ष 1964 में दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में एक शिक्षा आयोग का गठन किया गया इस आयोग ने प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक का मूल्यांकन किया। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कोठारी आयोग का बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने अपने रिपोर्ट में लिखा था कि शिक्षा और अनुसंधान किसी भी देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रगति के लिए अति आवश्यक है। इसके बाद भी कई आयोगें बनी जिनकी महत्वपूर्ण बातें लागू हुई इस प्रकार आज जो हम शिक्षा का मॉडल देख रहे हैं, उन्हीं प्रयासों का योगदान है।

मैकाले की शिक्षा प्रणाली ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को पूर्णता पश्चात शिक्षा व्यवस्था के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया था। लेकिन अब मोदी सरकार ने नई शिक्षा नीति - 2020 को लागू कर इस व्यवस्था को पूर्णता खत्म करने का संकल्प लिया है। इस पद्धति की मूल विशेषता है मातृभाषा में शिक्षा पर जोड़ देना।

इस प्रकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल शिक्षा में काफी विकास हुआ है। इसी क्रम में कई सारे महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, अनुसंधान केंद्र, तकनीकी संस्थान आदि खोले गए हैं। इन संस्थानों के माध्यम से सरकार ने उच्च मानकों के साथ शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने का प्रयास किया है। देश में 2017 में महाविद्यालयों की संख्या चालीस हजार के आसपास थी जो बढ़कर 2024 में 44 हजार के आसपास हो गई है। आईआईटी और आईआईएम जैसी संस्थान की अगर बात करें तो देश में 2014 में 16 आईआईटी संस्थान थे, जो बढ़कर 2024 में 23 हो गये। आईआईएम 2014 में 13 थे जो बढ़कर 2024 में 21 हो गई है। मोदी सरकार के 10 साल के कार्यकाल में विश्वविद्यालय की संख्या में लगभग 300 की वृद्धि देखी गई है। आईबीईएफ की रिपोर्ट के मुताबिक विश्वविद्यालय की संख्या में हम विश्व में पहले नंबर पर आते हैं। छात्रों की पंजीकरण की संख्या में दूसरे नंबर पर और उच्च शिक्षा व्यवस्था में तीसरे नंबर पर आते हैं। साक्षरता दर की अगर बात करें तो 1951 में 18.33 फीसदी साक्षरता दर थी, जो बढ़कर 2021 में 77.7 फीसदी हो गई है। इस प्रकार कह सकते हैं कि मौजूदा सरकार ने इस दशक में 'नई शिक्षा नीति' के अगुवाई में शिक्षा के विकास की मजबूत नीव डालने का काम किया है।

पीआर एजेंसियों का खेल

चुनिंदा पत्रकारों के जरिए हो रहा मीडिया संस्थानों को करोड़ों का नुकसान

तरूण कु. निमेष

आजकल फिल्म प्रमोशन, नए उत्पादों की ब्रांडिंग, शोरूम की ओपनिंग और प्रेस कॉन्फ्रेंस जैसे कार्यक्रमों के लिए पीआर (पब्लिक रिलेशंस) एजेंसियों का महत्व बढ़ता जा रहा है। इन एजेंसियों का काम होता है कि वे कंपनियों से भारी रकम लेकर उनके प्रचार को मीडिया के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाएं। दिल्ली, मुंबई जैसे बड़े शहरों में सक्रिय ये पीआर एजेंसियां कंपनियों से करोड़ों रुपये वसूलती हैं, लेकिन मीडिया संस्थानों तक यह पैसा नहीं पहुँचता। इसके बजाय, एजेंसियां अपने कुछ चुनिंदा पत्रकारों के माध्यम से काम कराती हैं और उन्हें उनकी 'हैसियत' के अनुसार 'लिफाफा' यानी नकद राशि दी जाती है।

एक हालिया घटना में, दिल्ली के एक फिल्म निमार्ता ने बताया कि उन्होंने अपनी फिल्म के प्रमोशन के लिए एक पीआर एजेंसी को 80 लाख रुपये दिए, लेकिन उन्हें इसका कोई संतोषजनक परिणाम नहीं मिला। पीआर एजेंसियां प्रचार का सारा काम कुछ गिने-चुने पत्रकारों के माध्यम से ही कराती हैं, जबकि टीवी चैनल या अखबार के कार्यालय तक इसका कोई वित्तीय लाभ नहीं पहुँचता। यदि मीडिया संस्थान अपने पत्रकारों को निर्देशित करें कि वे पीआर एजेंसियों से सीधे संपर्क में न रहें और किसी भी प्रकार की कवरेज के लिए संस्थान को सूचित करें, तो इससे मीडिया संस्थानों के पास प्रतिमाह करोड़ों रुपये का अतिरिक्त राजस्व आ सकता है।

मीडिया संस्थानों में फिल्म कलाकारों की उपस्थितिः एक छलावा

पीआर एजेंसियों का एक और खेल है फिल्म प्रमोशन के लिए कलाकारों को मीडिया संस्थानों में भेजना। टीवी चैनल या अखबार के कार्यालय को लगता है कि उनके यहाँ फिल्म के कलाकार, यानी हीरो-हीरोइन, आए हैं तो यह उनकी प्रतिष्ठा में इजाफा करता है। लेकिन इसके पीछे का सच अक्सर अनदेखा रह जाता है। असल में, पीआर एजेंसियां पहले ही फिल्म निमार्ता से अच्छी-खासी रकम वसूल चुकी होती हैं और यह सिर्फ मीडिया में मुफ्त कवरेज हासिल करने का एक तरीका होता है।

मीडिया संस्थान इस भ्रम में रहकर खुश हो जाते हैं कि उन्हें एक्सक्लूसिव इंटरव्यू या कलाकारों की विजिट का मौका मिला है, जबकि इसकी असल कीमत निमार्ता पहले ही पीआर एजेंसी को चुका होता है।

वरिष्ठ पत्रकार एवं इंडियन मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष राजीव निशाना का कहना है कि मीडिया संस्थान इस प्रवृत्ति को समझें और अपनी नीतियों में बदलाव करें। वे पीआर एजेंसियों से बातचीत कर फिल्म प्रमोशन के लिए कवरेज को सशुल्क सेवा के रूप में स्थापित करें। इससे न केवल मीडिया संस्थानों को वित्तीय लाभ होगा, बल्कि पत्रकारिता का स्तर भी बरकरार रहेगा।

वर्षा वन

पीढ़ियों का सुरक्षा कवच। लेकिन सुरक्षा की ज़िम्मेदारी किसकी?

पूरन चंद सरीन

अक्सर कहते सुनते और देखते पढ़ते यह बात सामने आती है कि मौसम के तेवर बदल रहे हैं। भयंकर गर्मी, भयानक सर्दी, विनाशकारी बाढ़, बेमौसम बरसात और बर्फ़बारी तथा जमीन खिसकने जैसी घटनायें अपने देश में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में चिंता और बहस का विषय बन रही हैं। इस सब के मूल में केवल एक बात प्रमुख है और वह है बड़े पैमाने पर और अंधाधुंध तरीके से वन विनाश होना और वन संरक्षण का हवा हवाई हो जाना। ग्लोबल वार्मिंग का कारण यही है।

वर्षा वन दिवस

अब हम विश्व वर्षा वन दिवस भी मना रहे हैं। हो सकता है कि कुछ लोगों को यह अजीब लगे लेकिन जब इसे मनाये जाने की परंपरा शुरू हुई थी, तब तक संसार के आधे से अधिक वन साम्राज्य पर अपना मतलब साधने के लिए तैयार लोगों का कब्जा हो चुका था। यह सौ से अधिक वर्ष पहले आरंभ हुआ और अब इस सदी में कुछेक साल पहले अचानक ध्यान आया कि मानव जाति उस प्रकृति का कितना नाश कर चुकी है जो हमारा संरक्षण करती है। अमेरिका, यूरोप, एशियाई देश इसकी चपेट में सबसे अधिक आये हैं जहां सड़कों, भव्य इमारतों के निर्माण, विशाल क्षेत्र का खेतीबाड़ी और बड़े बड़े उद्योग लगाने के लिए सबसे आसान तरीका अपनाया गया। यह था कि जहां भी रुकावट हो, उसे जड़ से समाप्त कर दो। अवरोध करने वाले और कोई नहीं, हमारे जंगल थे, वनीय उपज थी और उनमें रहने वाले वनवासी या आदिवासी थे। विरोध के स्वर उठे, बहुत हाहाकार हुआ, आंदोलन हुए, अत्याचार सहे लेकिन सब व्यर्थ क्योंकि अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारने वाले को कौन रोक सकता है ? आज सभी देशों से जलवायु परिवर्तन के संदेश आ रहे हैं। भारत इससे अछूता नहीं है और हमारी पूरी आबादी इसे महसूस कर रही है।

सामान्य जंगल तो सबने जीवन में कभी न कभी देखे होंगे। आजकल जंगल सफारी का चलन है और वहाँ पाये जाने वाले पशु पक्षियों को निकट से देखने का मोह बढ़ रहा है। मैदानी इलाकों से निकलकर वन प्रदेशों में घूमना फिरना, झरनों का सौंदर्य निहारने और नदियों तथा तालाबो में जलीय जीवों की अठखेलियाँ देखना कभी न भूल सकने वाला अनुभव है। बहुत से संरक्षित यानी जिन जीवों का शिकार नहीं किया जा सकता, उन्हें हाथ से छूना रोमांचक हो जाता है। उनकी सिहरन और हाथ से फिसलने का कौतुक बहुत समय तक महसूस होता

रहता है। इन जंगलों में आधुनिक सुविधाओं, इंटरनेट और रहने तथा मौजमस्ती करने के साधनों का विस्तार हो रहा है। ईको टूरिज्म के नाम पर दूर दराज की बस्तियों में आराम और खानपान के प्रबंध धन कमाने का जरिया बन चुके हैं।

इसके विपरीत वर्षा वन वे होते हैं जो लगातार वर्षा से भीगते रहते हैं। अमेजन के जंगल प्रमुख हैं। यह भारत जैसे दो से भी अधिक देशों के आकार के हैं। यहाँ दुर्लभ वृक्ष, उनकी प्रजातियाँ और असंख्य जीव जंतु पलते और बढ़ते रहते हैं। कुछ तो ऐसे हैं जो कहीं और नहीं मिल सकते। हमारे देश में असम, मेघालय, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, पश्चिमी घाट और अंडमान निकोबार में वर्षा वन देखे जा सकते हैं। इन्हें सुरक्षित और सामान्य आवाजाही से मुक्त रखने के लिए कानून हैं और इनमें प्रवेश के कड़े नियम हैं।

चलिए एक वर्षा वन जैसे स्थान की सैर करते हैं। मेघालय में पवित्र गुफाएँ या सेक्रेड ग्रोव के रूप में विशाल वनस्थली है। वहाँ की खासी जाति इसका संरक्षण करती है। बहुत पहले यहाँ के निवासियों ने इसका विकास शुरू किया। खेती की झूम प्रथा अर्थात् जरूरत के अनुसार जंगल काटकर उस जगह को समतल बनाना और वहाँ खेती करना और जब जमीन उपजाऊ न रहे तो उसे छोड़कर अगली जगह के जंगल काटकर खेती करना। दोबारा उसी जगह खेती करने का चक्र चालीस पचास साल बाद आता था और तब तक वहाँ जंगल फिर से पनप जाते थे जिन्हें काटकर उपजाऊ जमीन मिल जाती थी और खेतीबाड़ी होती थी। जनसंख्या के दबाव के कारण यह अवधि दो चार वर्ष की रह गई जिसका परिणाम पूरे नार्थ ईस्ट में देखा जा सकता है। प्रकृति अपना रौद्र रूप दिखाती है।जीवनदायिनी नदियाँ विनाश लीला करती हैं। अनेक सदियों पहले यहाँ के लोगों ने अनुमान लगा लिया होगा कि क्या होने वाला है, इसलिए वन संरक्षण के ऐसे उपाय किए कि वन सुरक्षित रहें। एक बहुत बड़े क्षेत्र का चुनाव किया जहां हर समय वर्षा होती रहती थी और इसे पवित्र गुफा का नाम दिया ताकि यहाँ से कोई एक पत्ता तक न ले जा सके।

वर्षा वन की तीन परतें होती है। सबसे पहले घना प्रदेश जहां घुप्प अंधेरा रहता है। यहाँ जलवायु में उमस और गर्मी रहती जिससे विभिन्न वनस्पतियाँ पनपती हैं। एक बहुत बड़ी कैनोपी बन जाती है। घास, पात और पेड़ों से लिपटी लताएँ झुंडों में बढ़ती हैं। प्राकृतिक जल स्त्रोत उपलब्ध हैं और कलकल ध्वनि से संगीत का आनंद आता है।पूजा स्थल भी है जहां स्थानीय देवता की पूजा होती है। लोग ऊपर से झांक रही सूर्य की किरणों के प्रकाश में विधि विधान से पूजा अर्चना करते हैं। आसपास जो फफूँद है और मास है उसे बनने में सैंकड़ों वर्ष लगे हैं। वनस्पति विज्ञान के शोधार्थी अध्ययन करते हैं। उल्लेखनीय है कि इन्हें एक झटके में नष्ट किया जा सकता है। कुदरत की मेहनत का पल भर में सर्वनाश हो सकता है।

यहाँ रेंगने वाले जीव हैं, सरसराहट करते बिलों में घुस जाने वाले साँप की प्रजातियाँ हैं। दीमक लगे वृक्ष और खोह बना कर रहने वाले, न जाने कितने प्रकार के उछल कूद और रंगों से अभिभूत करने वाले जीव हैं जो डरावना वातावरण बनाने के लिए पर्याप्त हैं। न जाने कब कौन कहाँ से प्रकट हो जाये, कुछ नहीं कहा जा सकता। यहाँ जो हाथी जैसे विशाल पशु हैं, मानिए वे किसान हैं। वे जो कुछ खाते हैं, उसे पचाने के बाद जगह जगह अपना मल त्यागने से उन स्थानों पर बीज भी बिखेरने का काम करते हैं।नये पेड़ उगते हैं , वर्षा वन मालामाल होते रहते हैं। हिंसक पशुओं की दहाड़ गलत इरादे से आये व्यक्ति की रूह फाख्ता करने के लिए काफी है।वर्षा वनों में अनेक किंवदंतियाँ भी प्रचलित हैं। जैसे कि किसी ने किसी पेड़ की टहनी ले जाने की कोशिश की तो शेर सामने आ गया और जब तक चोरी छिपे ले जा रही वस्तु छोड़ नहीं दी, यह साथ चलता रहा। इसी तरह की कहानियाँ यहाँ विद्यमान देवता के बारे में कही जाती हैं।देवता का अपना न्यायतंत्र है और उसी के अनुसार दण्ड का विधान है।

उपयोगिता और वास्तविकता

वर्षा वन और इनमें बसे जीवों की उपयोगिता के बारे में इतना ही कहना काफी होगा कि विश्व की लगभग आधी औषधियाँ इन्हीं की बदौलत प्राप्त हुई हैं। यहाँ की हर्बल संपदा अनेक गंभीर रोगों के उपचार में काम आती है। दुर्भाग्य से इस कुदरती खजाने पर डाका पड़ रहा है।तस्करी के धंधे में लगे लोग चोरी कर रहे हैं और अमीर देशों को बेच रहे हैं। वर्षा वन की दूसरी परत एक विशाल छतरी की तरह है और तीसरी साठ से अस्सी मीटर तक के ऊँचे वृक्ष हैं। पेड़ों का अद्भुत संसार दिखाते ये वर्षा वन अपने आप में अनमोल ही नहीं, पीढ़ियों की धरोहर है, आगामी पीढ़ी के रक्षक हैं।इको सिस्टम इन्हीं पर सबसे अधिक आधारित है। अर्थव्यवस्था के प्रमुख घटक होने के बावजूद इन वनों के विनाश की प्रक्रिया जारी है। विडंबना यह है कि हम वनों से लेना तो सब कुछ चाहते हैं लेकिन उसे देना तो बहुत दूर, उसका मूल्य भी नहीं चुकाते। यदि वनों को उनके ही हाल पर छोड़ दिया जाये और अपनी प्रकृति के अनुसार स्वयम्-बढ़ने दिया जाये तो यही बहुत बड़ा उपकार होगा।

आज पेड़ काटकर और फिर उनके स्थान पर नये लगाने का नाटक बहुत हो गया। केवल इतना ही कर लें कि जंगलों की बहुत कम कटाई करते हुए सड़कें बनायें, कह सकते हैं कि सिर्फ.छँटायी करें तो भी वन विनाश पर रोक लग सकती है। विकास का कोई विरोध नहीं है। उद्योग धंधे जरूरी हैं, आवागमन और यातायात के साधन आवश्यक हैं। विशाल इमारतों का निर्माण और औद्योगिक क्षेत्र तथा रिहायशी बस्तियाँ बनानी हैं। खेतीबाड़ी और पशु पालन तथा चारागाह के लिए जमीन चाहिए ही, आर्थिक मजबूती के उपाय, रोजगार के साधन विकसित करने ही होंगे। इनके बिना देश विकसित नहीं होगा।

कहना यह है कि ऐसे कानून बनें और कड़ाई से पालन करते हुए वन विनाश को मनुष्य की हत्या के बराबर माना जाये। तब ही पर्यावरण बच सकता है। प्रतिकूल मौसम से बचाव हो सकता है और प्रकृति के साथ कदम ताल करने का सुख मिल सकता है।

आज अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया जैसे महाद्वीप ऐसी जीवन शैली अपना रहे हैं जो अफ्रीका जैसी है जहां जंगलों को साथी मानकर उन्हें अपनाया जाता है, उनके अनुसार स्वयम्-को ढाला जाता है। प्रकृति को असंतुलित होने से रोकना है तो भविष्य की ऐसी भयावह कल्पना करनी होगी जिसमें चारों ओर मरुस्थल, बंजर भूमि, अधिक या कम वर्षा से बाढ़ और सूखाग्रस्त धरती और आसमान से बरसती आग तथा पृथ्वी पर जल प्लावन के दृश्य होंगे। यदि इसे सच में घटित होने से रोकना है तो आज ही कदम उठाने हैं वरना कौन जाने, कल क्या होगा?

पर्यावरण सुरक्षित विश्व सुरक्षित

श्रीमती श्वेता आर्या

इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणीव जीव जंतु चाहे वह जमीन पर हों या पानी के अंदर सभी पर्यावरण का हिस्सा हैं।पृथ्वी को ब्रहमांड का वह ग्रह माना जाता है जहाँ जीवन है और पर्यावरण सभी प्राणी एवं जीव जन्तु को सुरक्षित रखने का एक कवच माना गया है। हमारे पर्यावरण में हवा,पानी, सूरज की रोशनी पेड़ पौधे सभी शामिल हैं जो सब को जिवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। पर्यावरण हम सब की प्राकृतिक सौंदर्य का श्रोत है जो मनुष्य के शरीर और मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए आवश्यक है।

हर तरफ फल, फूल, कलकल करती नदियाँ, पहाड़, घने जंगल हमें जीवित रहने के लिए सहायक है। परंतु अफसोस है कि हम में से बहुत से लोग प्रकृत और पर्यावरण के महत्व को नही समझ रहे है और पेड़ काट रहे हैं तथा वहाँ ईमारत बना रहे हैं, स्वच्छ नदिंयो में फैक्ट्रीयों का गंदा केमिकल डाल रहे हैं जो पानी मे रहने वाले जीव जंतु को हानि पहुचा पहुंचा रहे हैं। पावन गंगा व यमुना में भी प्लास्टिक कूडाक रकट डाल रहे हैं।

हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी ने बहुत सारी मुहिम चलवाई हैं जिससे पर्यावरण सुरक्षित रहे जैसे प्लास्टिक बैन, स्वच्छता अभियान, स्वच्छता पखवाडा, वृक्षारोपण, पेड़ काटने पर मनाही विलुप्त होते जानवर को बचाना इत्यादि जिससे हमारी पर्यावरण का संतुलन बना रहे।पर्यावरण से हमें खाने की वस्तुए सजाने की वस्तुए सौदर्य के लिए वस्तु जडी.बूटियाँ, दवाईयाँ मिलती हैं जो जीवन का सार है। पर्यावरण ने हमें उपजाऊ भूमि, हवा, पानी सब दिया है जो जिवित रहने के लिए आवश्यक है। पर्यावरण ही है जो कार्बन डाइऑक्साइड लेकर हमें आक्सीजन दे रहा है परंतु मानव आज जंगलों को कटता जा रहा है जिससे बाढ़ आ जा रही है और पृथ्वी पर बहुत तबाही हो रही है। दीपावली बहुत अच्छा त्योहार है पर पटाकों की वजह से हमारा पर्यावरण दूषित हो रहा है इसलिए दिवाली पर मिठाई खायें एक दूसरे से खुशियां बाटें परंतु पटाकों का प्रयोग न करें। आज विज्ञान ने जितनी तरक्की की है उसके बहुत फायदे हैं परंतु उसके नुकसान भी बहुत हैं जो हमारी प्रकृति को नष्ट कर रहे हैं। अगर हम सभी छोटी-छोटी कोशिश करें तो हम भी पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैंए जैसे अपने घरों के गीले, सूखे कूडे.अलग फेंके अपने घर और आसपास सफाई रखें, वृक्षारोपण करें। प्लास्टिक का बहिष्कार करें, साग सब्जी लाने के लिए सूती कपडे.के थैले का प्रयोग करें पेड़ों को न काटें कूडा.करकट नदी नालों में न डालें मनुष्य साथ-साथ पशु पक्षी की भी रक्षा रकें। कोविड-19 ऐसी भयानक महामारी आई जिसमे आक्सीजन व स्वच्छता का बहुत बडा.महत्व था ' पर्यावरण हमें इतने लाभ देती है कि हम अपने पूरे जीवन में इसका भुगतान नही कर सकते । पर्यावरण दूषित होने से मौसम में असामान्य बदलाव आ रहा हैग्लेशियर पिघल रहे हैं, भयानक गर्मी हो रही है जो सभी के लिए हानिकारक है, पारा 50 डिग्री तक चला गया।

दूषित पर्यावरण के कारण आखों में जलन, सिरदर्द, मानसिक तनाव लोगों मे देखा जा रहा है। पर्यावरण दूषित होने का तात्पर्य पृथ्वी पर अप्राकृतिक रूप से कई आपदायें होना है।

यदि पर्यावरण सुरक्षित होगा तब ही पृथ्वी पर जीवन सुरक्षित होगा इसे सुरक्षित रखें और नई पीढी. को सौन्दर्य से भरपूर पर्यावरण दें।

जगत जननी माँ आदि शक्ति स्वयं प्रकृति है जिसकी रक्षा स्वयं देवो के देव महादेव भी करते हैं।

यदि पर्यावरण रखोगे सुरक्षित स्वंय भी रहोगे सुरक्षित।

स्वस्थ रहो मस्त रहो'
जय हिंद जय भारत।

लघुकथा

वन रूदन

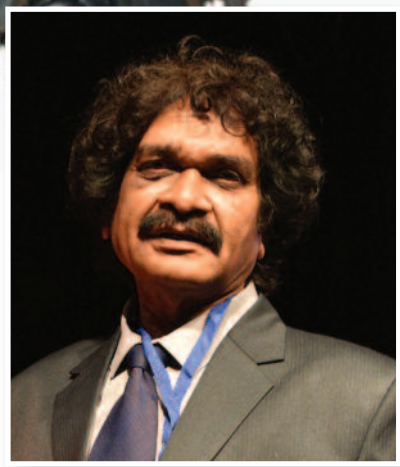

ग्रेट ब्रिटेन

● सुरेश पुष्पाकर

वन में जीव जन्तु अपना जीवन यापन करते थे। सब अपने अपने हिस्से का भोजन लेते और सो जाते । भोर भये फिर वही दिन चर्या, पक्षियों की चहक और वन में खिले फूलों की महक मन में ताजगी और उल्लास भर देते थे, गिलहरी की किलकारियाँ, वानर का एक डाल से दूसरे डाल पर गुलाटी मारना । वृक्षों का एक दूसरे संग बातें करना, मस्ती में झूमना पवन द्वारा उनकी शाखों को हिलोरे देना सायं-सायं बतियाना। दिन की शुरूआत भोजन की खोज से शुरू हो जाती थी । वृक्षों पर कूदते फांदते वन मानुष शोर मचाते तथा करतब करते हुए देखे जाते थे।

दोपहर होते-होते हाथियों का झुण्ड ताल किनारे पहुँच जाता बच्चे बूढ़े सभी सनान करते, वह एक दूसरे के साथ आत्मियता का सजीव दृश्य होता था।

बाघों के चिंघाड़ और शेरों की दहाड़ कभी-कभी भय का वातावरण भी बना देते थे। सभी वन्य जीवों ने भय के सामने सर्मपण करते हुए शेर को ही वन के राज का ताज पहना दिया परन्तु वन्य प्राणी इस बात से अनजान थे कि धरती के सबसे भयावह जीव से उनका सामना होना अभी बाकी है।

एक दिन मनुष्य रूपी जीव की नजर उस वन पर पड़ी. वृक्ष रुदन हुआ । धीरे-धीरे वृक्ष धराशायी होने लगे । पंछी बेघर हो गये, गिलहरी की किलकारियाँ मातम में बदल गईं, वानर इधर-उधर भागने लगे, वन्य जीवों में हाहाकार मच गया । बाघों की चिंघाड़ और शेरों की दहाड़ अब सुनाई देना बंद हो चुकी थी। धीरे-धीरे वन समाप्त हो गया।

एक गोरिल्ला का बच्चा अपनी दादी से यह कथा सुनकर विस्मित सा रह गया। उसने अपनी दादी से अनायास ही प्रश्न पूछ लिया कि क्या एक सभ्य दिखने वाला मनुष्य रूपी प्राणी सचमुच ही इतना निर्दयी और भयानक प्राणी है ?

गोरिल्ला दादी कुछ क्षण मौन रही, मानो उस स्मृति के घाव फिर से हरे हो गए हों। उसने धीमे से बाहर पिंजरे के उस पार खड़े मनुष्यों की ओर देखा और मन ही मन सोचा, 'कालचक्र की गति से कोई नहीं बच सका है, फिर चाहे वह कितना ही शक्तिशाली और सभ्य क्यों न हो।'

मन के प्रदूषण को दूर करें

पर कैसे?

मन की प्रदूषण और उसके द्वारा वायुमंडल में फैली हुई प्रदूषण की रोकथाम केलिए हमे मन की प्रदूषण को गहराई से समझने और उसे जड़ से समाप्त करना पड़ेगा। उस के लिए यह जानना जरूरी है कि दूषित मन का मूल स्रोत उसका नकारात्मक सोच है।

ब्रह्मा कुमार सुशांत

आज दुनियां की वातावरण चारों ओर से कलुषित व प्रदूषित है। जल, जमीन, वायु व आकाश तत्वों से लेकर सड़क वाहन, मशीन कारखाने व लापरवाही मानव कारनामे का प्रदूषण ध्वनि, धुआं, धूल, धूप और ताप से पूरे वायुमंडल बुरी तरह से प्रभावित वा ग्रसित है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अधिकांश प्रदूषण जाने अनजाने में मानव कृत ही है।

यह सच है कि मनुष्यों की मेंटल पॉल्यूशन से एनवायरनमेंटल पॉल्यूशन फैली है। क्यों कि, सारे प्रदूषण का मूल कारण कहीं न कहीं मनुष्य का प्रदूषित मन है, और उससे प्रेरित प्रदूषित आचरण है। मन की प्रदूषण और उसके द्वारा वायुमंडल में फैली हुई प्रदूषण की रोकथाम केलिए हमे मन की प्रदूषण को गहराई से समझने और उसे जड़ से समाप्त करना पड़ेगा। उस के लिए यह जानना जरूरी है कि दूषित मन का मूल स्रोत उसका नकारात्मक सोच है। मन में चल रही विचारों को साकारात्मक दशा और दिशा प्रदान करके ही हम अपने मन और वातावरण की प्रदूषण को पूर्ण रूप में जड़ से समाप्त कर सकते हैं।

पर्यावरण स्वच्छता अभियान को सिर्फ औपचारिक रूप में बाहरी तौर पर चलाने से, आसपास के वातावरण थोड़ी देर केलिए साफ हो जाएगी वा स्वच्छ नजर तो आएगी, लेकिन स्वच्छता अभियान को पूर्ण न्याय वा सफलता प्रदान करने केलिए, वा पर्यावरण को सदा स्वच्छ व साफ रखने के लिए हमे मन से, दिल से तथा आंतरिकता के साथ इस अभियान में जुड़ना होगा, और अपनी वृति

परिवर्तन से वातावरण परिवर्तन की दृढ़ संकल्प व कर्म श्रृंखला निर्धारित करना होगा। और ऐसी श्रेष्ठ मानसिकता एवं स्वैच्छिक सेवा को विकसित करने केलिए सर्व प्रथम हमे अपनी मन को सही रूप से जानना, समझना और मनाना होगा।

असल में, मनुष्य का मन चार आयामों को लिए हुए हैं : स्मृति, संकल्प, भावना और नजरिया। यह सब एक दल वा टीम की तरह हमारे मन की चार स्तरों पर काम करते हैं। अंग्रेजी में इन्हें मन की TEAM T-houghts, E-motion, A-ttitudes, M-emories कहते हैं। यह चार आयाम एक चक्र के रूप में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और प्रेरित होते हैं। कहते हैं, संकल्प से सृष्टि रची जाती है। हर संकल्प उसके अनुरूप भावना लाती है। और जैसी भावना होती है वैसी दृष्टि, वृति वा दृष्टिकोण बन जाती है। यह दृष्टिकोण वा नजरिया आगे स्मृति में तब्दील होकर हमारी स्मृतिकोष में जमा हो जाती है। और इसी चक्रिक क्रम में, हमारी मानस पटल में फिर से पूर्व स्मृति के मुताबिक अनुरूप संकल्प उत्पन्न होते रहते हैं।

देखा जाए तो हमारे मन में मुख्यतः चार प्रकार के संकल्प उठते हैं, वह है साकारात्मक वा स्वस्थ, आवश्यक वा जरूरी, व्यर्थ वा फालतू, एवं नकारात्मक वा अस्वस्थ। नकारात्मक वा व्यर्थ सोच हमेशा देह व इंद्रिय केंद्रित होता है जो हमारे विचार, व्यवहार एवं जीवन शैली को भोगवादी वा उपभोक्तावादी बनाता है, और वह अकसर हमें भोग विलास, विकार, व्यसन, दूषित वा पाप कर्मों की ओर धकेलता है। यही वास्तव में हमारे व्यक्तिगत, सामुहिक, सामुदायिक, सामाजिक वा वैश्विक स्तर पर मानसिक, नैतिक और भौतिक प्रदूषण फैलाने का मुख्य कारण है।

हमारे सोच से लेकर कर्म व्यवहार और स्वभाव संस्कार निर्माण की स्वाभाविक मानसिक प्रक्रिया में, नकारात्मक वा अशुभ विचारों को साकारात्मक वा शुभ संकल्पों में परिवर्तन करने में हमारी इच्छा शक्ति का बहुत बड़ा भूमिका वा योगदान है। जब हम दृढ़ इच्छा शक्ति से सिर्फ शुभ, श्रेष्ठ, आशावादी, हितकारी व साकारात्मक संकल्पों की स्मृति वा मनन चिंतन में व्यस्त रहते हैं, तब हमारी भावनाएं, दृष्टि, वृति, बोल, नियत व नजरिया से प्रेरित होकर हमारी आचरण वा कार्य पद्धति भी शुद्ध, स्वच्छ, निस्वार्थ, निष्पाप, सुखदाई एवं मंगलकारी बन जाते हैं। और उनका हितकारी प्रभाव प्राणी, प्रकृति, जड़ और जीव जगत पर पड़ता है।

यह भी एक शाश्वत सत्य है कि वृति से वातावरण, और प्रवृति से पर्यावरण बनता है। अगर दुनियां की वातावरण वा पर्यावरण को बदलना है, तो मनुष्यों की वृति व प्रवृति को बदलने की जरूरत है। क्यों कि, हमारी दृष्टि से वृति बनती हैं, और वृति से हमारे कर्म व्यवहार एवं स्वभाव संस्कार बनते हैं। तो स्वच्छ, स्वस्थ वा बेहतर वातावरण, पर्यावरण व संसार का निर्माण करने केलिए हमे अपनी दृष्टि, वृति, नियत, नजरिया, आचरण और स्वभाव संस्कारों को शुद्ध, सात्विक, साकारात्मक व सुखदाई बनाने के साथ साथ हमारे राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय योजना, परियोजना वा कार्यक्रमों को मानव, प्राणी व प्रकृति समावेशी, संवेदनशील वा कल्याणकारी बनाने की जरूरत है। यह स्वयं सिद्ध है कि लोगों के मानसिक शांति, सुचिता, संयम, संतुलन, स्वनियमन, समर्पणता, स्वैच्छिक एवं सक्रिय सहयोग के बिना देश दुनियां के वातावरण वा पर्यावरण को हम स्वच्छ, शुद्ध व खुशहाल बना नहीं सकते हैं। इस के लिए हमे लोभ लालच वा हड़पने की होड़ से हटकर मानव सहयोगी, प्राणी एवं प्रकृति उपयोगी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ, इससे संबंधित योजनाओं व व्यवस्थाओं को बढ़ावा देना है। इन सब भौतिक बातों और मुद्दों का पूर्ण सफलता हेतु हमे मूल बुनियादी आध्यात्मिक आधारों को अपनाने की आवश्यकता है। हमें अपनी इंद्रियों केंद्रित भौतिक भोग की मानसिकता को छोड़, आत्म ज्ञान और परमात्म स्मृति पर आधारित सहज राजयोग की आध्यात्मिक जीवन प्रणाली को अपनाना होगा। तभी हम करोना वायरस की तरह फैली प्रदूषण को मन, वचन, कर्म, संपर्क संबंध, प्रकृति और पर्यावरण से सदा के लिए समाप्त कर सकते हैं।

(लेखक, प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी संस्था की राष्ट्रीय प्रवक्ता व मीडिया प्रभारी है)

रविन्द्र कुमार

डॉ. भीमराव आंबेडकर का परिनिर्वाण दिवस
सामाजिक न्याय, कर्तव्य और वर्तमान चुनौतियां

डॉ. भीमराव आंबेडकर, जिन्हें सविधान निमार्ता और दलितों के महानायक के रूप में भी जाना जाता है, इस महानायक को दलितों ने 'बाबा साहेब' नाम दिया, बाबा साहेब ने समानता और सामाजिक न्याय के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। बाबा साहेब का 6 दिसंबर, 1956 को परिनिर्वाण हुआ था, परिनिर्वाण के बाद भी बाबा साहेब द्वारा दी गयी शिक्षाएं और उनके आदर्श आज भी प्रेरणास्रोत हैं। उन्होने शिक्षा को ऐसी 'शेरनी का दूध बताया था कि जो इसको पियेगा वो दहाड़ेगा'। उनका परिनिर्वाण दिवस केवल श्रद्धांजलि देने का अवसर नहीं, बल्कि उनके दिखाए रास्ते पर चलने और उनके सपनों को साकार करने का दिन है।

सामाजिक भेदभाव के खिलाफ आंदोलन

डॉ. आंबेडकर ने समाज में व्याप्त छुआछूत और जातिगत अन्याय के खिलाफ अनेक आंदोलनों का नेतृत्व कियाः

1. महाड़ सत्याग्रह (1927): उन्होंने अस्पृश्य माने जाने वाले दलितों को सार्वजनिक जल स्रोतों से पानी लेने का अधिकार दिलाने के लिए यह आंदोलन किया।

2. मनुस्मृति दहनः डॉ. आंबेडकर ने मनुस्मृति को जलाकर जातिगत असमानता और शोषण के प्रतीक के खिलाफ अपने विरोध को जाहिर किया।

3. कालाराम मंदिर आंदोलन (1930): उन्होंने दलितों को मंदिरों में प्रवेश दिलाने के लिए संघर्ष किया।

प्रमाण पत्र पर लाभ लेने वाले दलित नेताओं और अधिकारियों का कर्तव्य

डॉ. आंबेडकर के संघर्ष और संविधान में प्रदत्त आरक्षण के कारण आज दलित समुदाय से कई नेता, अधिकारी, और कर्मचारी बने हैं। उन्होंने अपने समाज के विकास और सशक्तिकरण के लिए अनेक लाभ प्राप्त किए। लेकिन अब उनकी जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने समुदाय की उन्नति के लिए ठोस कदम उठाएं।

1. शिक्षा के लिए प्रयासः दलित समाज के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए।

- सरकारी स्कूलों में बेहतर सुविधाएं सुनिश्चित करनी होंगी। - छात्रों को करियर मार्गदर्शन और छात्रवृत्ति दिलाने में मदद करनी चाहिए।

2. स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तारः ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में हॉस्पिटल और स्वास्थ्य केंद्र स्थापित करने की दिशा में काम करना चाहिए।

- स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाएं।

- गरीब परिवारों के लिए निःशुल्क या रियायती इलाज सुनिश्चित करें।

3. रोजगार और आत्मनिर्भरताः

- युवाओं के लिए रोजगार प्रशिक्षण और स्वरोजगार की योजनाएं शुरू करें।

- महिलाओं को स्वरोजगार में सक्षम बनाने के लिए विशेष योजनाओं पर काम करें।

दलित नेतृत्व का अभावः वर्तमान चुनौतियां

आज दलित समुदाय में वैसा प्रखर और दूरदर्शी नेतृत्व नहीं दिखता जैसा डॉ. आंबेडकर के समय था। इसके पीछे कुछ प्रमुख कारण हैंः

- राजनीतिक स्वार्थः कई नेता व्यक्तिगत लाभ और सत्ता की राजनीति में उलझे हुए हैं।

- शिक्षा और जागरूकता की कमीः समाज में शिक्षा का स्तर अभी भी अपेक्षाकृत कम है, जिससे समाज के लोग अपनी समस्याओं के समाधान के लिए संगठित नहीं हो पाते।

- युवा नेतृत्व का निमार्णः नए और ईमानदार नेतृत्व को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

डॉ. आंबेडकर के सपनों को साकार करने का आह्वान

डॉ. आंबेडकर का सपना एक ऐसा समाज बनाना था, जहां हर व्यक्ति को समान अधिकार मिले और जातिगत असमानता का अंत हो। उनका जीवन संघर्ष यह सिखाता है कि शिक्षा, संगठन, और न्याय के माध्यम से किसी भी बाधा को पार किया जा सकता है।

डॉ.आंबेडकर के महिलाओं और श्रमिकों के लिए योगदान

बाबा साहेब ने महिलाओं को सशक्त बनाने और श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए कई ऐतिहासिक कदम उठाए। उन्होंने हिंदू कोड बिल का प्रारूप तैयार किया, जिसने महिलाओं को संपत्ति में अधिकार और विवाह-तलाक में समानता का अधिकार दिया।

श्रमिकों के लिए पहले काम करने के घंटे निर्धारित नहीं थे, बाबा साहेब ने काम करने के घंटे घटाकर 8 घंटे करवाए और श्रमिकों की कार्य परिस्थितियों में सुधार के लिए कानून बनाए। इन प्रयासों से समाज के हाशिए पर खड़े लोगों को सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर मिला।

लीमा

समाज सेवक वीरेंद्र डेढ़ा ने की दिवंगत पत्रकार सचिन मीणा के परिवार की मदद

इंडियन मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष और वरिष्ठ पत्रकार राजीव निशाना के एक फोन कॉल पर समाज सेवक वीरेंद्र डेढ़ा ने मानवता और समाज सेवा की अद्वितीय मिसाल पेश की। दिवंगत पत्रकार सचिन मीणा, जो हृदय की समस्या के चलते धर्मशिला अस्पताल में भर्ती हुए थे, कुछ देर बाद ही उन्हें स्टंट डाले गए और उसके कुछ घंटे बाद ही सचिन की मौत हो गई। दुखद रूप से, अस्पताल प्रशासन ने चार लाख रुपये से अधिक का बिल बनाकर परिवार को दे दिया जब तक बिल जमा नहीं होगा डेड बॉडी देने से इनकार कर दिया।

सचिन के परिवार ने इस गंभीर स्थिति में मदद के लिए कई जगह गुहार लगाई, लेकिन उन्हें कोई सहारा नहीं मिला। जब यह मामला वरिष्ठ पत्रकार राजीव निशाना तक पहुंचा, तो उन्होंने तुरंत पूर्वी दिल्ली के दल्लू पूरा निवासी समाज सेवक वीरेंद्र डेढ़ा से सहायता की अपील की। वीरेंद्र डेढ़ा ने न केवल परिवार की सहायता की बल्कि सचिन मीणा का शव उनके परिवार तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य भी पूरा किया।

इंडियन मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन के महासचिव विजय शर्मा ने इस संवेदनशील कदम के लिए वीरेंद्र डेढ़ा का धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा, 'यह कदम न केवल सचिन मीणा के परिवार के लिए सहारा बना, बल्कि समाज के हर वर्ग के लिए प्रेरणा का स्रोत है।' विजय शर्मा ने यह भी कहा कि समाज सेवकों और नेताओं को वीरेंद्र डेढ़ा से सीख लेनी चाहिए, जो हर समय जरूरतमंदों की सहायता के लिए तत्पर रहते हैं।

इस घटना ने यह दिखाया कि जब परिवार हर ओर से असहाय हो, तब भी संवेदनशील समाज के लोग, जैसे वीरेंद्र डेढ़ा, मदद के लिए सामने आते हैं। सचिन मीणा के परिवार को इस कठिन समय में मिली मदद यह दशार्ती है कि सच्ची समाज सेवा का अर्थ शब्दों में नहीं, बल्कि कर्मों में निहित है। इंडियन मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन ने इस मानवीय पहल के लिए पूरे पत्रकार समुदाय की ओर से वीरेंद्र डेढ़ा के प्रति आभार प्रकट किया।

वीरेंद्र डेढ़ा
समाजसेवक

राजीव निशाना
अध्यक्ष : इम्वा

विजय शर्मा
महासचिव : इम्वा

पीके ने उड़ा दी दिग्गजों की नींद
उपचुनाव में 10 % वोट

जन सुराज का आगाज?

अजय गौतम

बिहार में चार विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव के परिणाम ने बड़े-बड़े नेताओं की नींद उड़ा दी है। बिहार में इमामगंज, बेलागंज, रामगढ़ और तरारी विधानसभा सीट पर उपचुनाव हुए थे। इसके परिणाम हैरान करने वाले हैं।

चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर की नवगठित राजनीतिक पार्टी जन सुराज के उम्मीदवारों के चुनाव मैदान में उतरने के बाद चारों विधानसभा सीटों पर जातीय समीकरण बिगड़ गये। वोटों के बिखराव का फायदा बीजेपी को मिला है। चारो विधानसभा सीट एनडीए के खाते में गई।

जन सुराज का चुनाव में डेब्यू हो चुका, लेकिन एक भी सीट नहीं जीतने पर कई राजनीतिक समीक्षकों का कहना है प्रशांत किशोर का एजेंडा बिहार में नहीं चलेगा। बिहार में लोग मुर्गा और दारू पर वोट दे देते हैं। वहां चंद पैसों का लालच देकर नेता वोट खरीद लेते हैं।

प्रशांत किशोर उसी मानसिकता को बदलना चाह रहे हैं। उनकी राजनीतिक सक्रियता और जन जागरूकता का प्रभाव भी दिखने लगा है। बिहार मे चार विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव में भले ही प्रशांत किशोर की पार्टी के उम्मीदवार जीत नहीं पाये, लेकिन चुनाव परिणाम में जनसुराज के उम्मीदवार का तीन विधानसभा सीटों पर तीसरे नंबर पर और एक विधानसभा सीट पर चौथे नंबर पर आना बड़ी पार्टियों के लिए बड़ी चुनौती है। सिर्फ जीत-हार के पैमाने पर जन सुराज का आकलन करना ठीक नहीं है। क्योंकि, चुनाव परिणाम के बाद जारी किये गये आंकडे.सभी को हैरान कर रहे हैं। प्रशांत किशोर की पार्टी ने चारों विधानसभा सीट मिलाकर 66 हजार से ज्यादा वोट हासिल की है, भले ही वह वोट जीत में तब्दील ना हुए हों।

बिहार में चार विधानसभा सीटों के लिए हुए उपचुनाव के परिणाम से फिलहाल ना सत्तारूढ़ पार्टी को कुछ फर्क पड़ने वाला है और ना ही विपक्ष के लिए। लेकिन, इसके परिणाम ने जो संकेत दिये वह गठबंधन दलो को टेंशन बढ़ाने वाला हैं। अगर पीके की पार्टी जनसुराज का आगाज ऐसा है तो आगे क्या होगा।

गया जिले के इमामगंज विधानसभा सीट से जनसुराज के उम्मीदवार जितेन्द्र पासवान को 37103 वोट मिले हैं। जबकि बेलागंज विधानसभा सीट पर जनसुराज के उम्मीदवार मोहम्मद अमजद ने 17 हजार 285 वोट हासिल किये। भोजपुर जिले के तरारी विधानसभा सीट से किरण सिंह को 5622 वोट मिले वहीं कैमूर जिले के रामगढ़ विधानसभा सीट से सुशील कुमार सिंह 6513 वोट हासिल किये। टोटल वोट की बात करें तो प्रशांत किशोर की डेब्यू पार्टी जन सुराज ने 66523 वोट हासिल की है।

हार जीत के पैमाने से इतर देखें तो जनसुराज का यह बेहतर प्रदर्शन कहा जा सकता है। दस फीसदी से ज्यादा वोट जन सुराज के हिस्से में आये हैं। जन सुराज के उम्मीदवारों के चुनावी मैदान में उतरने से पिछड़ा और अल्पसंख्यक वोट बिखरे हैं और इसी कारण विशेषकर आरजेडी के वह

उम्मीदवार हार गये, जिनके जीतने की प्रबल संभावना थी।

बेलागंज विधानसभा सीट से राजद ने विश्वनाथ यादव को उम्मीदवार बनाया था। बेलागंज विधानसभा सीट पर पिछले तीन दशकों से डॉ. सुरेन्द्र यादव का दबदबा रहा है। डॉ. सुरेन्द्र यादव के जहानाबाद के सांसद बनने पर वह सीट खाली हो गई थी। उस सीट पर उन्हीं के पुत्र विश्वनाथ यादव को राजद ने उम्मीदवार बनाया। बेलागंज विधानसभा सीट जीतने के लिए आरजेडी के दिग्गज नेताओं ने रैलियां की, भाषण दिये।

लालू यादव की राजनीतिक विरासत संभालने वाले तेजस्वी यादव की रैली में भी खूब भीड़ जुटी, लेकिन वह भीड़ जीत में तब्दील नहीं हो सकी। बेलागंज सीट पर जदयू की उम्मीदवार मनोरमा देवी ने जीत दर्ज की है। रामगढ़ विधानसभा को भी राजद का गढ़ माना जाता हैं। रामगढ़ विधानसभा सीट पर भी आरजेडी के उम्मीदवार अजीत सिंह हार गये। अजीत सिंह राजद के शीर्ष नेता जगदानंद सिंह के पुत्र हैं। उस सीट पर बीजेपी के उम्मीदवार अशोक कुमार सिंह को जीत मिली है।

गया के इमामगंज विधानसभा सीट पर जीतन राम मांझी की बहू एनडीए उम्मीदवार दीपा मांझी ने जीत दर्ज की है। आरजेडी के उम्मीदवार यहां भी हार गये। तरारी विधानसभा सीट पर भी एनडीए उम्मीदवार विशाल प्रशांत ने जीत दर्ज की है। आरजेडी के हिस्से में एक भी सीट नहीं आयी है।

बिहार में चार विधानसभा सीटों के लिए हुए उपचुनाव के परिणाम से फिलहाल ना सत्तारूढ़ पार्टी को कुछ फर्क पड़ने वाला है और ना ही विपक्ष के लिए। लेकिन, इसके परिणाम ने जो संकेत दिये वह गठबंधन दलो को टेंशन बढ़ाने वाला हैं। अगर पीके की पार्टी जनसुराज का आगाज ऐसा है तो आगे क्या होगा।

जन सुराज पार्टी का गठन 02 अक्टूबर 2024 को हुआ है। देखा जाये तो जनसुराज का बिहार में अभी पूरी तरह विस्तार नहीं हुआ हैं। बिहार के कई जिलो में जनसुराज की यूनिट/विंग की स्थापना अभी नहीं हुई है। बिहार में 2025 में जन सुराज पूरे दमखम के साथ चुनाव मैदान में उतरेगी। प्रशांत किशोर की सक्रियता को देखकर बिहार में कई नेता परेशान नजर आ रहे हैं। 2025 का विधानसभा चुनाव जातिगत समीकरणों के आधार पर जीत पाना उनके लिए आसान नहीं होगा।

बिहार मे प्रशांत किशोर का एजेंडा लोगों को पसंद आ रहा हैं। प्रशांत किशोर अपने भाषण में युवाओं की परेशानी की बात करते हैं। रोजगार की बात करते हैं। बिहार की शैक्षणिक व्यवस्था की बात करते हैं। प्रवासी श्रमिकों की बात करते हैं। और इसके लिए पूर्व की सरकारों और वर्तमान सरकार को जिम्मेदार ठहराते हैं। जिससे राजद का कार्यकाल लोगों के निशाने पर आ जाता है।

राजद कार्यकाल में लचर शिक्षा-चिकित्सा व्यवस्था, रोजगार ठप, बढ़ते अपराध और अपहरण मामले पर प्रशासन लाचार, नरसंहार, वसूली गैंग से दुकानदार/व्यापारी परेशान, श्रमिकों का प्रवास और व्यापारियों का बिहार से पलायन।

इन सभी हालातों से बिहार के लोग वाकिफ हैं। प्रशांत किशोर यहीं पर चोट कर रहे हैं। वह बिहार के लोगों की जमीर को जगाने का प्रयास कर रहे हैं और कुछ हद तक प्रशांत किशोर को इसमें सफलता भी मिल रही है। उपचुनाव का परिणाम यही दशार्ता है।

मनुष्य जीवन सर्वश्रेष्ठ क्यों है?

देवता भी क्यों तरसते हैं मनुष्य जीवन के लिए?

● डॉ.एच.एस.रावत (वैदिक धर्मगुरु)

84 लाख योनियों में और तीनों लोकों में (सूर्य मण्डल लोक , ब्रहस्पति लोक और ध्रुव लोक) मनुष्य जीवन ही सर्वश्रेष्ठ होता है । जीवन तो और भी लोकों में होते हैं लेकिन मनुष्य का जीवन सबसे सुंदर है ।इसका कारण क्या है?

इसका मुख्य कारण है पृथ्वी लोक पर मनुष्य के शरीर में वायु , पृथ्वी और जल तत्व का अनुपात ज्यादा है । इस लिए यह शरीर सब काम करने में सक्ष्यम है । चंद्रमा के ऊपर मनुष्य के शरीर में वायु और जल का अनुपात ज्यादा है । और मंगल पर शरीर का अनुपात वायु और अग्नि का अनुपात ज्यादा है । यही कारण है कि स्थूल रूपी शरीर वाला पृथ्वी लोक का प्राणी दूसरे ग्रहों पर रहने वालों जीवों को देख नहीं सकता है । क्योंकि उनके शरीर का पांच तत्वों का अनुपात पृथ्वी पर रहने वाले जीवों के पांच तत्वों के अनुपात का भिन्न होता है । जो मनुष्य योगी हो जाता है वो उन लोकों के शरीर के अनुपात को जान लेता है तथा सूक्ष्म शरीर में जाकर उनको देख लेता है।

मनुष्य जीवन पृथ्वी लोक की सुंदर रचना इसलिए है कि इस मनुष्य रूपी यंत्र से हम सभी लोकों का आनंद ले सकते हैं । पाँच महाभूतों का सुंदर अनुपात ही मनुष्य की सुंदर रचना है । मनुष्य जीवन धारण करने से भगवान की रचना को जाना और समझा जा सकता है । मनुष्य जीवन से ही सूक्ष्म शरीर मिलता है जिसके द्वारा मनुष्य विभिन्न लोकों में योग के द्वारा भ्रमण कर सकता है ।

मनुष्य की वृतियों के कारण मोह , माया , लोभ , लालच , काम , क्रोध , मद और स्वार्थ का आनंद ले सकते हो । सुख और दुख का भोग कर सकते हो । जब इन वृतियों से मन भर जाये तो आप योग का आनंद ले सकते हो । परम परमात्मा का आनंद ले सकते हो । देवता भी पहले मनुष्य जीवन में आते हैं । फिर उन्नति करके देवता बन जाते हैं । और देवता रहते ही मन आनंद से भरपूर हो जाता है । तो दुबारा मनुष्य जीवन में आ जाते हैं ।

इसलिए मनुष्य जीवन की बहुत देखभाल करनी चाहिए । अगर इस शरीर से अच्छे काम करोगे तो देवता रूप में सूक्ष्म शरीर या मोक्ष योनि में चले जाओगे ।

समाज और संस्कृति को प्रभावित करती है भाषा

● प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी

भाषा का संबंध इतिहास, संस्कृति और परंपराओं से है। भारतीय भाषाओं में अंतर-संवाद की परंपरा बहुत पुरानी है और ऐसा सैकड़ों वर्षों से होता आ रहा है। यह उस दौर में भी हो रहा था, जब वर्तमान समय में प्रचलित भाषाएं अपने बेहद मूल रूप में थीं। श्रीमद्भगवतगीता में समाहित श्रीकृष्ण का संदेश दुनिया के कोने-कोने में केवल अनेक भाषाओं में हुए उसके अनुवाद की बदौलत ही पहुंचा। उन दिनों अंतर-संवाद की भाषा संस्कृत थी, तो अब यह जिम्मेदारी हिंदी की है। जब हमारे पास एक भाषा होती है, तब हमें अंदाजा नहीं होता, कि उसकी ताकत क्या होती है। लेकिन जब भाषा लुप्त हो जाती है और सदियों के बाद किसी के हाथ वो चीजें चढ़ जाती हैं, तो सबकी चिंता होती है कि आखिर इसमें है क्या? ये लिपि कौन सी है, भाषा कौन सी है, सामग्री क्या है, विषय क्या है? आज कहीं पत्थरों पर कुछ लिखा हुआ मिलता है, तो सालों तक पुरातत्व विभाग उस खोज में लगा रहता है कि लिखा क्या गया है?

भाषा ही कराती है मेल-मिलाप

भारत एक छोटे यूरोप की तरह है। यहां विविध भाषाएं हैं और भाषा ही मेल-मिलाप कराती हैं। भाषाई विविधता और बहुभाषी समाज आज की आवश्यकता है और समस्त भाषाओं के लोगों ने ही विश्व में अपनी उपलब्धियों के पदचिन्ह छोड़े हैं। आज हम एक बहुभाषी दुनिया में रहते हैं। दुनियाभर में लोग बेहतर अवसरों की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान में प्रवास करते हैं। जहां उनकी भाषाएं और संस्कृति, नए क्षेत्र की भाषा और संस्कृति से एकदम अलग होती है। इसलिए उन्हें एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है, जो दोनों संस्कृतियों को आपस में एकीकृत कर सके, जिसके लिए उन प्रवासियों को निश्चित तौर पर एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। पश्चिम बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र जैसे राज्यों में भी एक शिक्षित व्यक्ति को कम से कम तीन भाषा का ज्ञान होता है। यहां के लोगों को अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का ज्ञान होता है। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संपर्क साधने के लिए अंग्रेजी भाषा को भी ये लोग सीख लेते हैं।

भारतीय भाषाओं का बढ़ता प्रभाव

आज भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को व्यापक रूप से प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। भारतीय भाषाओं में बीच संवाद सैंकड़ों वर्षों से जारी है और इनका विकास भी साथ-साथ ही हुआ है। मसलन बांग्ला और मैथिली में इतनी समानता है कि उनमें अंतर करना मुश्किल है, इसी तरह अवधी और ब्रज भाषा तथा हिंदी और उर्दू में भी ऐसा ही है। हिंदी और उर्दू दैनिकों की भाषा पर हुए एक शोध में देखा गया कि उनमें केवल 23 प्रतिशत शब्द ही अलग थे। हिंदी पत्रकारिता के विकास में मराठी, बांग्ला और दक्षिण भारतीय भाषाओं के योगदान की अनदेखी नहीं की जा सकती। आज पूरे भारत में भारतीय भाषाओं के बढ़ते प्रभाव को देखा जा सकता है। भाषाई पत्रकारिता को हम भारत की आत्मा कह सकते हैं। आज लोग अपनी भाषा के समाचार पत्रों की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। इसलिए भाषाई समाचार पत्रों की प्रसार संख्या तेजी से बढ़ रही है। अलग-अलग बोलियों में अखबार प्रकाशित हो रहे हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में रेडियो और टेलीविजन अपने कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं। इतना ही नहीं, जिस स्मार्टफोन के द्वारा हम सोशल मीडिया के संपर्क में रहते हैं, वहां भी भारतीय भाषाओं का विशेष ख्याल रखा जाता है।

आज से कुछ समय पहले तक गांवों की खबरों के लिए चार चार दिन तक इंतजार करना पड़ता था,

जबकि आज व्हाट्सएप और ईमेल के द्वारा आसानी से खबरें प्राप्त हो रही हैं। जिलों, कस्बों और मोहल्लों से आज अखबार प्रकाशित हो रहे हैं। ईमेल से अखबारों के पृष्ठ भेजना आसान हो गया है। पहले अंग्रेजी भाषा के अखबारों पर निर्भरता ज्यादा होती थी, जिसके भारतीय पाठक मात्र 15 प्रतिशत हैं। अब जब अलग-अलग बोलियों और भाषाओं में अखबार प्रकाशित हो रहे हैं, तो सूचना सशक्तिकरण बढ़ रहा है। अब विभिन्न दूतावासों के मीडिया प्रकोष्ठ और विदेशी एजेंसियां भी खबरों के लिए क्षेत्रीय एवं भाषाई मीडिया का लाभ ले रहे हैं। दूसरी तरफ हर अखबार अपने ईपेपर के जरिए दूरदराज के पाठकों तक पहुंच रहा है। हम सब जानते हैं कि इंटरनेट की कोई सीमा नहीं है, ऐसे में क्षेत्रीय अखबार विदेशी धरती पर भी उसी दिन पढ़े जा रहे हैं, जिस दिन वे प्रकाशित होते हैं।

भाषा का संकट

आप वर्ष 2040 की कल्पना कीजिए। तब तक हमारा भारत विश्व की एक बड़ी आर्थिक महाशक्ति बन चुका होगा। गरीबी, कुपोषण, पिछड़ापन काफी हद तक मिट चुके होंगे। देश के लगभग 60 प्रतिशत भाग का शहरीकरण हो चुका होगा। सारा देश डिजिटल जीवन पद्धति को अपना चुका होगा। अब आप सोचिए कि उस भारत के अधिकतर नागरिक अपने जीवन के सारे प्रमुख काम किस भाषा में कर रहे होंगे? पूरे देश में शिक्षा, प्रशासन, व्यापार, शोध, पत्रकारिता जैसे हर बड़े क्षेत्र में किस भाषा का उपयोग हो रहा होगा? वह देश भारत होगा या सिर्फ.इंडिया? उस इंडिया में संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल हमारी 22 बड़ी और 1600 से अधिक छोटी भाषाओं-बोलियों की स्थिति क्या होगी? वर्तमान में जिस तरह अंग्रेजी का चलन तेजी से बढ़ रहा है, क्या उसके बीच हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं को स्थान मिलेगा।

यूनेस्को के पूर्व महानिदेशक कोचिरो मत्सूरा ने कहा था कि, 'एक भाषा की मृत्यु उसे बोलने वाले समुदाय की विरासत, परंपराओं और अभिव्यक्तियों का नष्ट हो जाना है।' संसार में लगभग 6000 भाषाओं के होने का अनुमान है। भाषा शास्त्रियों की भविष्यवाणी है कि 21वीं सदी के अंत तक इनमें केवल 200 भाषाएं जीवित बचेंगी। इनमें भारत की सैकड़ों भाषाएं होंगी। यूनेस्को के अनुसार भारत की आदिवासी भाषाओं में से 196 भाषाएं अभी भी गंभीर संकटग्रस्त भाषाएं हैं। संकटग्रस्त भाषाओं की इस वैश्विक सूची में भारत सबसे ऊपर है। यूनेस्को का भाषा एटलस 6000 में से 2500 भाषाओं को संकटग्रस्त बताता है। भारत की अनुमानित 1957 में कम से कम 1416 लिपिहीन मातृभाषाएं हैं। ये सब इस वक्त संकट में हैं।

यूनेस्को के कहने पर विश्व के श्रेष्ठ भाषाविदों ने किसी भी भाषा की जीवंतता और संकटग्रस्तता नापने के लिए 9 कसौटियां निर्धारित की हैं। इनमें पहली कसौटी है, एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी के बीच उस भाषा का अंतरण। दूसरी कसौटियों में प्रमुख हैं ज्ञान विज्ञान के आधुनिक क्षेत्रों में उस भाषा में काम हो रहा है या नहीं। वह भाषा नई तकनीक और आधुनिक माध्यमों को कितना अपना रही है? उस भाषा के विविध रूपों का दस्तावेजीकरण कितना और किस स्तर का है? उस समाज की महत्वपूर्ण संस्थाओं की उस भाषा के बारे में नीतियां और रुख कैसे हैं? इसमें अंतिम लेकिन सबसे महत्वपूर्ण कसौटी है॒उस भाषा समुदाय का अपनी भाषा के प्रति रुख क्या है, भाव क्या है? इनमें से किसी भी कसौटी पर किसी भी भारतीय भाषा को तोल लीजिए, तुरंत समझ में आ जाएगा कि भविष्य के संकेत संकट की और इशारा करते हैं या विकास की और। भारतीय चरित्र, इजराइली चरित्र जैसा नहीं है, जिसने 2000 साल से मृत पड़ी हिब्रू को आज वैज्ञानिक शोध, नवाचार और आधुनिक ज्ञान निर्माण की श्रेष्ठतम वैश्विक भाषाओं में एक बना दिया है। जिसके बल पर 40 लाख की जनसंख्या वाला इजरायल एक दर्जन से ज्यादा विज्ञान के नोबेल पुरस्कार जीत चुका है। सारे इस्लामी देशों की शत्रुता के बावजूद अपनी पूरी अस्मिता, धमक और शक्ति के साथ अजेय बना विश्व पटल पर विराजमान है।

स्वयं से संवाद

भारत का प्रत्येक व्यक्ति मूलतः बहुभाषी है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हमारा किसी एक भाषा के सहारे काम चल ही नहीं सकता। हमें अपनी बात बाकी लोगों तक पहुंचाने के लिए और उनके साथ संवाद करने के लिए एक भाषा से दूसरे भाषा के बीच आवाजाही करनी ही पड़ती है। जैसे हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं का मिश्रित रूप है 'हिंदुस्तानी जुबान'। हिंदुस्तानी जुबान में होने वाले संवाद की मिठास और संप्रेषण की सहजता देखने लायक है। भारत सदैव वसुधैव कुटुम्बकम की बात करता आया है और सभी भाषाओं को साथ लेकर चलने के पीछे भी यही भावना है। जहां भाषा खत्म होती है, वहां संस्कृति भी उसके साथ दम तोड़ देती है। हमें सभी भाषाओं को महत्व देना चाहिए, उन्हें समझना चाहिए और उनके संपर्क का माध्यम हिंदी है, इसे स्वीकार करना चाहिए। याद रखिए, भाषा के माध्यम से हम केवल दुनिया से ही नहीं, बल्कि स्वयं से भी संवाद करते हैं।

लेखक पूर्व महानिदेशक, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली

अंतर-संवाद और अनुवाद

भाषा मनुष्य की श्रेष्ठतम संपदा है। सारी मानवीय सभ्यताएं भाषा के माध्यम से ही विकसित हुई हैं। याद रखिए...आदिम समाज तो हो सकते हैं, लेकिन आदिम भाषाएं नहीं हो सकतीं। शहीद भगत सिंह ने 15 वर्ष की उम्र में ये लिखा था कि, 'पंजाब में पंजाबी भाषा के बिना आगे नहीं बढ़ा जा सकता।' गांधी जी ने 1938 में ही स्पष्ट कहा था कि, 'क्षेत्रीय भाषाओं को उन का आधिकारिक स्थान देते हुए शिक्षा का माध्यम हर अवस्था में तुरंत बदला जाना चाहिए।' महात्मा गांधी का ये भी मानना था कि अंग्रेजी भाषा के मोह से निजात पाना स्वाधीनता के सब से जरूरी उद्देश्यों में से एक है। भाषाओं का राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में योगदान होता है। शब्दों को हमने ब्रह्म माना है। महात्मा गांधी ने अंग्रेजी में 'हरिजन' प्रकाशित किया, लेकिन उसे जन-जन तक पहुंचाने के लिए उन्होंने उसे गुजराती और हिंदी में भी स्थापित किया। भारतीय भाषाओं के बीच अंतर-संवाद को हमें अगर समझना है तो गुजराती में 70 पुस्तकों की रचना करने वाले फादर वॉलेस और गुजरात में कई विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना करने वाले सयाजीराव गायकवाड़ के बारे में पढ़ना चाहिए। उत्तर-दक्षिण भारत की भाषाओं में व्यापक अंतर होने के बावजूद उनमें अंतर-संवाद और अनुवाद होता आया है।

क्रिस्टल्स
जीवन में बहुत उपयोगी

ज्योत्सना जी बंसल

क्रिस्टल्स पृथ्वी के भीतर प्राकृतिक रूप से बनने वाले खनिज हैं, जो अपनी अनोखी ऊर्जा और उपचार गुणों के लिए जाने जाते हैं। सदियों से इनका उपयोग जीवन को बेहतर बनाने के लिए किया जाता रहा है।

ये केवल सुंदर पत्थर नहीं हैं; ये ऐसे साधन हैं, जो हमारे लक्ष्यों को पाने में मदद कर सकते हैं और हमारे लिए कल्याणकारी साबित हो सकते हैं। हर क्रिस्टल की अपनी ऊर्जा, कंपन और विशेषताएं होती हैं, जो भावनाओं को संतुलित करने, ध्यान बढ़ाने और आध्यात्मिक विकास में मदद करती हैं। यह माना जाता है कि इनमें विशेष कंपन और ऊर्जा होती है, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देती है, सकारात्मक ऊर्जा लाती है और जीवन के विभिन्न पहलुओं को सहारा देती है।

नीचे कुछ लोकप्रिय क्रिस्टल्स दिए गए हैं, जो स्वास्थ्य, धन, करियर, रिश्तों और आध्यात्मिकता में मदद कर सकते हैं:

आर्थिक समृद्धिः धन और संपन्नता को आकर्षित करने के लिए

सिट्रीन : 'मर्चेंट पत्थर' के रूप में जाना जाता है, यह धन और संपन्नता को आकर्षित करता है।

पायराइट : 'फूल्स गोल्ड' के नाम से भी जाना जाता है, यह भाग्य और आर्थिक सफलता लाने में मदद करता है।

ग्रीन जेड : संपन्नता लाता है और धन के प्रवाह को स्थिर करता है।

टाइगर आई : आत्मविश्वास बढ़ाता है और आर्थिक लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करता है।

गार्नेट : प्रेरित करता है और आर्थिक लक्ष्यों पर ध्यान रखता है।

मलाकाइट : समझदारी से वित्तीय निर्णय लेने में मदद करता है।

एमराल्ड : दीर्घकालिक धन का प्रतीक है और वित्तीय वृद्धि को प्रोत्साहित करता है।

पेशेवर जीवन को बढ़ाने के लिए

सिट्रीन : पेशेवर जीवन में रचनात्मकता और आत्मविश्वास बढ़ाता है।

ग्रीन अवेंचरिन : नए अवसर लाता है और करियर में वृद्धि करता है।

फ्लुओराइट : ध्यान बढ़ाता है और कार्यस्थल पर निर्णय लेने की क्षमता को तेज करता है।

लैपिस लाजुली : संवाद और नेतृत्व कौशल को बढ़ाता है।

कार्नेलियन : प्रेरणा बढ़ाता है और करियर लक्ष्यों को जुनून के साथ पूरा करने में मदद करता

शारीरिक और मानसिक कल्याण के लिए

ऐमेथिस्ट : मन को शांत करता है, तनाव कम करता है और नींद को बेहतर बनाता है।

ब्लडस्टोन : रक्त संचार को सुधारता है और शरीर को विषमुक्त करता है।

क्लियर क्वार्ट्ज : 'मास्टर हीलर' के रूप में जाना जाता है, यह समग्र स्वास्थ्य को बेहतर करता है और ऊर्जा बढ़ाता है।

टक्वॉइज : प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और शरीर को हील करने में मदद करता है।

रोज क्वार्ट्ज : भावनात्मक उपचार, आत्म-प्रेम और आत्म-देखभाल को प्रोत्साहित करता है।

कार्नेलियन : शारीरिक ऊर्जा को बढ़ाता है और जीवन शक्ति बनाए रखता है।

ग्रीन अवेंचरिन : हृदय स्वास्थ्य को सुधारता है और शारीरिक शक्ति बढ़ाता है।

Health	Relationship	Career	Finance	Spirituality
Clear Quartz	Rose Quartz	Tiger's Eye	Citrine	Amethyst
Amethyst	Rhodonite	Carnelian	Pyrite	Selenite
Rose Quartz	Moonstone	Amazonite	Garnet	Labradorite
Turquoise	Garnet	Green Aventurine	Tiger's Eye	Clear Quartz
Green Aventurine	Lapis Lazuli	Lapis Lazuli	Green Jade	Angelite
Bloodstone	Green Aventurine	Fluorite	Malachite	Black Obsidian
Carnelian	Pink Tourmaline	Citrine	Emerald	Celestite

है।

टाइगर आई : आत्मविश्वास, साहस और कार्यस्थल में सफलता के लिए प्रेरणा प्रदान करता है।

अमेजोनाइट : काम और जीवन के बीच संतुलन बनाता है और करियर के तनाव को कम करता है।

रिश्तेः प्रेम और सामंजस्य बढ़ाने के लिए

रोज क्वार्ट्ज : रिश्तों में करुणा और सामंजस्य लाता है।

रोडोनाइट : भावनात्मक घावों को भरता है और क्षमा को बढ़ावा देता है।

मूनस्टोन : नए शुरूआत और भावनात्मक संतुलन को समर्थन देता है।

लैपिस लाजुली : खुला और ईमानदार संवाद प्रोत्साहित करता है और विश्वास मजबूत करता है।

गार्नेट : रिश्तों में जुनून और भावनात्मक जुड़ाव को गहरा करता है।

ग्रीन अवेंचरिन : रिश्तों में सामंजस्य और प्रेम को बढ़ावा देता है।

पिंक टूरमालिन : भावनात्मक दुख से उबरने

में मदद करता है, प्रेम को पोषित करता है और भावनात्मक आराम लाता है।

आध्यात्मिकताः आत्मिक जुड़ाव को गहरा करने के लिए

ऐमेथिस्ट : आत्मिक जागरूकता और अंतर्ज्ञान को बढ़ाने वाला शक्तिशाली पत्थर।

सेलेनाइट : नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देता है।

लेब्राडोराइट : आत्म-अन्वेषण को प्रोत्साहित करता है और आध्यात्मिक जागृति को गहराता है।

क्लियर क्वार्ट्ज : आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ाता है और उच्च चेतना से जुड़ने में मदद करता है।

एंजेलाइट : आत्मिक मार्गदर्शकों से जुड़ाव को मजबूत करता है।

ब्लैक ओब्सिडियन : नकारात्मक ऊर्जा से रक्षा करता है और आध्यात्मिक उपचार में मदद करता है।

सेलेस्टाइट : शांति और दिव्य जुड़ाव की भावना लाता है।

क्रिस्टल्स का उपयोग कैसे करें:

क्रिस्टल्स को अपनी दिनचर्या में शामिल करना आसान है। इन्हें अपनी जेब में रखें, आभूषण के रूप में पहनें, ध्यान करते समय उपयोग करें या अपने घर या कार्यस्थल में रखें। क्रिस्टल्स की प्राकृतिक सुंदरता और शांत ऊर्जा के साथ अपनी यात्रा शुरू करें और अपने जीवन में इसके लाभों का अनुभव करें।

पायल शर्मा

औपचारिक शिक्षा में खेलों का एकीकरण

बच्चों के समग्र विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में औपचारिक शिक्षा प्रणाली में खेलों को एकीकृत करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने केंद्रीय राज्य मंत्री जयंत सिंह चौधरी द्वारा लिखित एक लेख का हवाला देते हुए लोगों से इसे पढ़ने का आग्रह किया और कहा कि खेल बच्चों को उनकी क्षमताओं का पता लगाने और एक पूर्ण व्यक्ति के रूप में विकसित होने में मदद कर सकते हैं। यह दृष्टिकोण बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा प्रणाली में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

खेलों की भूमिकाः शिक्षा से परे

खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं; वे बच्चों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेलों के माध्यम से बच्चे अनुशासन, टीमवर्क, नेतृत्व, धैर्य, और समस्या-समाधान जैसे कौशल सीखते हैं, जो उनकी जीवन यात्रा में सहायक होते हैं। वर्तमान में, अधिकांश स्कूलों में खेलों को मुख्यधारा की शिक्षा का हिस्सा नहीं माना जाता और इन्हें सह-पाठ्यक्रम गतिविधि के रूप में देखा जाता है। प्रधानमंत्री द्वारा इस पहल का समर्थन शिक्षा प्रणाली में खेलों को प्राथमिकता देने के लिए एक निर्णायक कदम हो सकता है।

औपचारिक शिक्षा में खेलों का महत्व

1. शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्यः नियमित शारीरिक गतिविधि न केवल बच्चों को फिट रखती है, बल्कि उनकी मानसिक क्षमताओं को भी बढ़ाती है। खेल बच्चों में तनाव और अवसाद जैसी समस्याओं को दूर करने में मदद करते हैं।

2. समाज कौशल का विकासः खेल टीम वर्क और आपसी समझ को बढ़ावा देते हैं। यह बच्चों को संवाद, सहयोग, और सामाजिक मेलजोल सिखाने का उत्कृष्ट माध्यम है।

3. नेतृत्व कौशलः खेल नेतृत्व और जिम्मेदारी की भावना विकसित करते हैं, जो भविष्य में उन्हें अपने करियर और व्यक्तिगत जीवन में सफल बनने में मदद करता है।

4. शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधारः शोध से पता चला है कि जो छात्र नियमित रूप से खेलों में भाग लेते हैं, उनका शैक्षणिक प्रदर्शन बेहतर होता है। खेल मस्तिष्क को सक्रिय रखते हैं और एकाग्रता में सुधार करते हैं।

सरकार की पहल और प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण

प्रधानमंत्री मोदी ने 'खेलो इंडिया' जैसी योजनाओं की शुरूआत के माध्यम से देश में खेल संस्कृति को बढ़ावा दिया है। इन योजनाओं का उद्देश्य न केवल प्रतिभाओं को पहचानना है, बल्कि खेलों को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना भी है। जयंत सिंह चौधरी के लेख का जिक्र करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि बच्चों को जीवन के हर पहलू में सक्षम बनाना चाहिए।

औपचारिक शिक्षा प्रणाली में खेलों का एकीकरण बच्चों के समग्र विकास की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। यह पहल न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देगी, बल्कि बच्चों को जिम्मेदार, अनुशासित और आत्मनिर्भर व्यक्ति बनने में मदद करेगी। प्रधानमंत्री का यह दृष्टिकोण शिक्षा प्रणाली में एक नई ऊर्जा का संचार कर सकता है और भारत को एक स्वस्थ और सशक्त राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर कर सकता है।

चुनौतियां और समाधान

भारत में औपचारिक शिक्षा प्रणाली में खेलों को शामिल करने के लिए कई बाधाएं हैं।

1. अपर्याप्त बुनियादी ढांचाः ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में खेल सुविधाओं की कमी प्रमुख समस्या है।

2. अभिभावकों की मानसिकताः बहुत से माता-पिता शिक्षा को केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित मानते हैं और खेलों को समय की बबार्दी समझते हैं।

3. स्कूलों का ध्यानः अधिकांश स्कूल परीक्षा परिणामों पर केंद्रित होते हैं, जिससे खेलों को प्राथमिकता नहीं मिलती।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार और निजी संस्थानों को मिलकर काम करना होगा। खेल के लिए बेहतर बुनियादी ढांचा, प्रशिक्षकों की नियुक्ति, और जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है। साथ ही, स्कूलों को खेलों को अनिवार्य विषय के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

जहरीली सी मैं

आज हवा से मुलाकात हो गई ।
थोड़ी जल्दी में थी फिर भी बात हो गई।
मैंने पूछा कहां रहती हो आजकल नजर नहीं आती।
कहा थोड़ी बेचैन हूं सांस ही नहीं आती।
घुटन भरी जिंदगी ना जाने कब तक चलेगी ।
इसलिए अकेली रहती हूं शायद यूं ही चलेगी ।

ऐसा सुनकर मैं थोड़ा हैरान हुआ।
थोड़ा विचलित थोड़ा परेशान हुआ ।

तुम तो सबको सांसे देती हो ।
टूटी जीवन की डोर फिर से पिरो देती हो ।
जो तुम इस तरह से बेचैन हो जाओगी।
तो सोचो उखड़ती सांसों को आयाम कैसे दे पाओगी।

ऐसा सुनकर उसकी आंखें भर आई ।
रौंदे गले से अपनी आप बीती सुनाई ।

मुझको तो जहरीली नाम दे दिया।
करके दूषित मुझको यूं ही बदनाम कर दिया।
फैलाते हो जहर इन फिजाओं में रात दिन।
और कहते हो जहरीली हवा ने जीना मुहाल कर दिया।

क्या कभी सोचा तुमने, किस पीड़ा से गुजर रही हूं।
एक तुम को बचाने की खातिर,
रोज तिल तिल कर मर रही हूं ।
जो रुक गई मेरी सांसे तो सृष्टि का विनाश हो जाएगा।

प्रलय से पहले ही प्रलय का आगमन हो जाएगा ।
पर!!
पर तुम लोग ना जाने कब इस बात को समझ पाओगे।
मुझको दूषित करके खुद भी न बच पाओगे।

देखो !!!

देखो उन फूलों जैसे मासूम बच्चों को,
कैसे मुरझाए से रहते हैं ।
बचपन की अटखेलियां खत्म, दवाओं के साए में जीते हैं।

बस इन्हीं नन्हे फूलों की खातिर मैं अपनी डोर थामे बैठी हूं ।
कहीं कोई पाप ना हो जाए बस सांसे रोके बैठी हूं।

ऐसा सुनते ही गला मेरा भी भर आया।
दिल मेरा भी पसीजा, मन मेरा भी घबराया ।
जहरीली तो हम हैं ।
और हवा को जिम्मेदार ठहराया ।

एक अपने स्वार्थ की खातिर ये क्या करते आए हैं।
घर बैठे बैठे यमराज को निमंत्रण दे आए है ।

नहीं कोई दोष तुम्हारा, यह दोष तो हमारा है ।
इन घुटन भरी सांसों को हमने ही तो पाला है ।

गर अब भी ना समझा इंसान, तो यह काम निश्चित है।
आएगी प्रलय और सृष्टि का विनाश निश्चित है।

तुम अपने आंसू पूछो, ये ना तुम्हारी जिम्मेदारी है ।
हम ही दोषी है सबके ये गलती सिर्फ हमारी है ।

ये गलती सिर्फ हमारी है।

– ललित गर्वा 'शास्त्री भाई'

दोहा छंद

हवा में जहर

जहर हवाओं में घुला, विपदा चारों ओर।
घातक-से परिणाम का, दिखे न कोई छोर॥
प्राणवायु कम हो गई, कैसा मुश्किल दौर।
जहर हवाओं में घुला, करे न कोई गौर॥
जंगल सारे कट गए, कैसा ये उन्माद।
मार-काट से डर रहे, करें नहीं प्रतिवाद॥
दूषित सारा अन्न-जल, दूषित हुई समीर।
देखा जब वातावरण, मनवा बड़ा अधीर॥

रजनी एल एन शर्मा
गुरुग्राम (हरियाणा)

NTPC ने मनाया 50वां स्थापना दिवस

● डेस्क

भारत की सबसे बड़ी एकीकृत बिजली कंपनी, एनटीपीसी लिमिटेड ने आज अपना 50वां स्थापना दिवस मनाया। एनटीपीसी लिमिटेड ने भारत के बिजली सेवा क्षेत्र में पांच दशकों के दौरान उल्लेखनीय विकास, नवाचार और योगदान दिया है। सीएमडी श्री गुरदीप सिंह ने बोर्ड के निदेशकों और वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में नोएडा स्थित इंजीनियरिंग कार्यालय परिसर (ईओसी), में एनटीपीसी ध्वज फहराया। इस समारोह में सभी स्थानों से कर्मचारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शामिल हुए।

इस अवसर के दौरान, सीएमडी एनटीपीसी ने वस्तुतः हाइड्रोजन-ईंधन बसों का शुभारंभ किया। यह सेवा लेह में शुरू होने वाली हैं। हाइड्रोजन बसें स्वच्छ और हरित प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने के लिए एनटीपीसी की प्रतिबद्धता को सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इसके अतिरिक्त, उन्होंने एक बड़ी अभूतपूर्व उपलब्धि की घोषणा की - पीईएम इलेक्ट्रोलाइजर से उत्पादित हाइड्रोजन के साथ ग्रिप गैस से प्राप्त सीओ2 का सफल संश्लेषण, जिसे एनटीपीसी के विंध्याचल संयंत्र में मेथनॉल में परिवर्तित किया गया था। उन्होंने कहा कि सीओ2 कैप्चर प्लांट और सीओ2-टू-मेथनॉल प्लांट दोनों दुनिया में अपनी तरह के पहले हैं, जो कार्बन प्रबंधन और टिकाऊ ईंधन उत्पादन में एक ऐतिहासिक कदम है।

उन्होंने आगे कहा कि एनटीपीसी जेन-4 इथेनॉल, ग्रीन यूरिया और सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल पर काम कर रहा है। कंपनी ने मेथनॉल संश्लेषण के लिए 'प्रथम स्वदेशी उत्प्रेरक' का भी विकास और परीक्षण किया है और पर्यावरण-टिकाऊ भविष्य के निर्माण के लिए अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए हाइड्रोजन, कार्बन कैप्चर और अन्य नवीन प्रौद्योगिकियों के साथ पर्याप्त प्रगति की है।

इस अवसर पर एनटीपीसी के 50 साल पुराने लोगो का भी अनावरण किया गया जो इसकी विरासत और भारत की प्रगति में योगदान को दर्शाता है। अनंत लूप और तरल प्रकृति वाला नया 50-वर्षीय लोगो विकास और उत्कृष्टता के प्रति चिरस्थायी प्रतिबद्धता का प्रतीक है और 50-वर्षीय विकास को सशक्त बनाने और अनंत संभावनाएं पैदा करने की प्रतिध्वनि देता है।

इस अवसर पर उन्होंने एनटीपीसी कर्मचारियों के बच्चों की असाधारण उपलब्धियों को भी मान्यता दी। इसके अलावा, कई नए आईटी एप्लिकेशन लॉन्च किए गए और एनटीपीसी के बालिका सशक्तिकरण मिशन पर एक विशेष कॉमिक बुक जारी की गई। जीईएम एनटीपीसी का प्रमुख सीएसआर कार्यक्रम है जिसने ग्रामीण समुदायों की 10,000 से अधिक लड़कियों को लाभान्वित किया है। एनटीपीसी की अविश्वसनीय यात्रा पर विचार करते हुए, श्री गुरदीप सिंह ने कंपनी के संस्थापकों के दूरदर्शी नेतृत्व को श्रद्धांजलि अर्पित की, जिसमें संस्थापक अध्यक्ष डॉ. डीवी कपूर और संस्थान की नींव रखने वाले अन्य अग्रदूत शामिल थे।

उन्होंने कहा, ह्लएनटीपीसी 50 वर्षों की सशक्त वृद्धि का प्रतीक है और हमारे लचीलेपन ने हमें एक मजबूत प्रदर्शन करने वाली कंपनी बना दिया है। जैसे-जैसे भारत के भविष्य को सशक्त बनाने की खोज जारी है, परमाणु सहित हमारे नवीकरणीय ऊर्जा पदचिह्न में निरंतर वृद्धि, अनंत संभावनाओं के साथ एक स्थायी भविष्य बनाने की हमारी महत्वाकांक्षा को रेखांकित करती है।

उन्होंने आगे कहा कि एनटीपीसी जेन-4 इथेनॉल, ग्रीन यूरिया और सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल पर काम कर रहा है। कंपनी ने मेथनॉल संश्लेषण के लिए 'प्रथम स्वदेशी उत्प्रेरक' का भी विकास और परीक्षण किया है और पर्यावरण-टिकाऊ भविष्य के निर्माण के लिए अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए हाइड्रोजन, कार्बन कैप्चर और अन्य नवीन प्रौद्योगिकियों के साथ पर्याप्त प्रगति की है।

शत्रुघ्न ने देखा सई परांजपे के 'उल्टे बांस' का मंचन

● डेस्क

रंगमंच और टीवी स्क्रीन की प्रसिद्ध अदाकारा माला कुमार के संगठन 'नेपथ्य फाउंडेशन' ने सुप्रसिद्ध लेखिका और निदेशक सई परांजपे के कॉमेडी नाटक 'उल्टे बांस' का मंचन किया। मंचन समारोह की अध्यक्षता सांसद और प्रसिद्ध अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा ने की। सिन्हा ने नाटक देखने के बाद कलाकारों के अभिनय और मंच साज-सज्जा की सराहना की। मंडी हाउस क्षेत्र के श्रीराम सेंटर सभागार में यह मंचन हुआ।

नाटक का निर्देशन प्रदीप कुकरेजा और रश्मी वैद्यलिंगम ने किया। कलाकारों के शानदार अभिनय की बदौलत पूरा सभागार ठहाकों से गूंजता रहा। कहानी तीन विवाहित जोड़ों के इर्द-गिर्द घूमती है। तीनों पड़ोसी जोड़ों के जीवन संघर्ष और उम्मीदें उनके अभिनय के जरिए बेहतर तरीके से प्रकट हुईं। माला कुमार ने कृष्णा की भूमिका, प्रदीप कुकरेजा ने तात्या, कीमती आनंद ने मकरंद, रश्मी वैद्यलिंगम ने निर्मल, संजीव सलूजा ने जगन और सुनीता नारायण ने शरबरी की भूमिका निभाई। (ल व)

ROCKING WOODS
a musical restrobar
PARTY AT YOUR OWN BUDGET
FIRST TIME IN RESTAURANT HISTORY
PERFECT PLACE FOR
MEETINGS
BIRTHDAYS
KITTY PARTIES
FAMILY GET TOGETHER
DJ & PROJECTOR FACILTY AVAILABLE
FOR ANY QUERIES CONTACT US
+91-8800745013, +91-8800745013
V3S MALL, FIRST FLOOR
FUN CINEMA BUILDING, DELHI-92

अच्छे प्रोजेक्ट पर काम करना मेरी प्राथमिकता है

सोनिया बंसल

● अनित बेदाग

सोनिया बंसल भारतीय मनोरंजन उद्योग में सबसे आकर्षक और मनमोहक सुंदरियों में से एक हैं। एक अभिनेत्री के रूप में, सोनिया ने अपनी अनूठी पहचान बनाने में कामयाबी हासिल की है, यह सब विभिन्न क्षेत्रीय उद्योगों में वर्षों की कड़ी मेहनत और पिछले साल बिग बॉस 17 में उनकी भव्य उपस्थिति के बाद उनके प्रति दर्शकों का प्यार और प्रशंसा पहले कभी नहीं बढ़ी। बिग बॉस के बाद भी अभिनेत्री कई संगीत वीडियो और अन्य परियोजनाओं के साथ अपने दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए अपना काम कर रही हैं और चर्चा इस तथ्य के बारे में मजबूत है कि वह 70 मिमी बड़े पर्दे पर भी कुछ अच्छी परियोजनाओं के लिए बातचीत कर रही हैं।

अभिनेत्री मात्रा से पहले गुणवत्ता वाले काम में विश्वास करती हैं और इसलिए, उनके दर्शकों और प्रशंसकों का प्यार और प्रशंसा उनके लिए और कैसे बनी हुई है। अभिनेत्री हर साल 28 अक्टूबर को अपना जन्मदिन मनाती आई हैं इस साल उनकी योजनाओं के बारे में पूछने पर उन्होंने कहा कि मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो हर साल एक भव्य और भव्य पार्टी करना पसंद करते हैं। मैं एक कम महत्वपूर्ण व्यक्ति हूं जो परिवार को ऐसे विशेष दिन आवंटित करना चाहता है। इसलिए इस साल का प्लान घर पर परिवार के साथ समय बिताने के बारे में है। मेरी तारीखें और कैलेंडर काफी व्यस्त रहे हैं, जिसके कारण मैं अपने परिवार के साथ उतना समय नहीं बिता पाई जितना मैं चाहती थी। इसलिए, इस साल अच्छे प्रोजेक्ट पर काम करना मेरी प्राथमिकता है।

RIIDHEE RAHMA

रिद्धि रामा

76/2, Budhpur, Alipur, Delhi-110036

Opp. Apna Ghar Aashram

+91 70655 53100

+91 99999 31100

riidhee_rahma@outlook.in

APEX
COMMITTED TO EXCELLENCE

Colours Jaandaar, Profit Shaandaar

Print your Business needs

- Brochures
- Wedding Cards
- Visiting Cards
- Menu Cards
- Certificates
- Leaflets
- Booklets

Our Products
Our Multi Functional Devices

Diverse Media Up to	300gsm
Connectivity	Wi-Fi
Print Through	USB
Supports Print Size Up to	30.48cm x 45.72cm

Canon
PRINTERS

APEX SYSTEM

LEADING SUPPLIER OF A WIDE RANGE
OF OFFICE AUTOMATION PRODUCTS

certified service
Authorized Distributor of Canon India

kaushal@apexsystem.net | +91-9810379777